

राजस्थान के कवि
(राजस्थानी)



सम्पादक
शिवत सारस्वत



राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)
बीकानेर

प्रकाशक—
घनञ्जय वर्मा
सचिव
राजस्थानी भाषा साहित्य सगम
(अकादमी) बीकानेर

पैलो सस्करण
१९६१

दूजो सस्करण
१९७७

मूल्य
१५ रुपये

मुद्रक—
माहेश्वरी प्रिंटिंग प्रेस
जोशी बिल्डिंग
बीकानेर ।

प्रकाशकीय

“राजस्थान के कवि भाग-२” के पैले सस्करण रो प्रकाशन सन १९६१ मे हुयो । ई ग्रथ मे राजस्थानी भाषा र प्रतिनिधि कविया री रचनावा सकलित करी गई है । सहृदय पाठकां इ काव्य-सकलन न घणी पसद करघो ।

सारलै कई बरसां सू ओ ग्रथ अप्राप्य हो चुक्यो हो भर ई री माग भी घणी ही । इसी स्थिति मे इ ग्रन्थ रो ओ दूजो सस्करण प्रकाशित करघो गयो है ।

विद्वान सम्पादक इ सस्करण मे जरूरी सशोधन भर परिवधन भी करघो है, जिण सू ओ ओर भी घणो महत्वपूर्ण बणग्यो है । अब तो ओ पाठ्यक्रम मे भी निर्धारित हो चुक्यो है ।

भाषा है, साहित्य ससार मे ई सस्करण रो घणो सम्मान हुसी ।

धनञ्जय वर्मा

सहायक सचिव

राजस्थानी भाषा साहित्य सगम (धकादमी),
बोकानेर

दूजै सस्करण रो सपादकीय

आज सू सगळा बरत पैता इण पोथी रो पलो सस्करण छप्यो ह। अकादमी रा प्रकाशना म या सबसू बेगी भर बसी विवणवाळी पाथी है। राजस्थानी रचनावा रा सकळना री जरुरत राजस्थानी रँ माध्यमिक सिद्या मडळ अर विस्वविद्यालया रँ पाठयक्रम म आण सू बेसी सडी हूद है। इण वास्त इण सकळन रा ओजू छपणो जरुरी समझ्यो गयो।

पोथी न दुबारा सपादित वरतां बरत या चाइज हो क कविया री नइ रचनावा भी सामल करी जाती अर नया नाव जोडघा जाता। पुराणा कविया री नइ रचनावा ता नही जोडी जा सकी है पण वा बाबत ताजा जाणवारी भेली करण री चेस्टा करी है। कुछ नया कविया रा नाव भी जोडघा गया है। पण या वासात पूरी नही कही जा सकै। उण वास्त तो सगळी पोथी ही दुबारा तैयार करणी पडती। माध्यमिक सिद्या मडळ अर विस्वविद्यालया म जिकी रचनावा पाठयक्रम र खातर छुणी गइ है वा न भी हटाई नही जा सकै ही। इण खातर पुराणी रचनावा न भी जू री तू राखणी पडी जद कै वा म सू धणवरी हटाई जाणी चाईजे ही।

सजय सदन, डी० २८२ मीरा माण,
वती पाक, जयपुर

राधत सारस्वत

कुण कठै -

१	उदयरज ऊजळ साहित री महिमा, भानिया रा द्रुहा	१-४
२	कन्हैयालाल सेठिया गीत, गीत, गीत	५-८
३	कल्याणसिंह राजावत पावणा, ह्योळी भावण दे, जुग रो हेलो	९-१३
४	विशोर कल्पनाकान्त गीत, नु वली गीता रो नान, मन उबारो	१४-१९
५	वृष्णगोपाल वल्ला आसडल्या आसूडा विरसा	२०-२३
६	गजानन वर्मा अडचो दीवाळी रो गीत, गीत	२४-२८
७	गणपतिचंद्र भण्डारी नवी जिन्दगी, कुरसी मैया री भारती	२९-३१
८	गणपति स्वामी लारा, मुरघर देस	३२-३४
९	गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद' दीवट, धरे आज्ञा, मत जा साथी	३५-३८
१०	गंगाराम 'पथिक' कीलियो, मत घबराई रे, मिनखणो वेमोत म ^२ चौमासो	३९-४३
११	चडीदान सादू घानखी रात, रुडो राजस्थान, राजस्थान रा पहाड	४४-४९
१२	चंद्रकुमार 'सुकुमार' समदर जोवण, सदेसो, आस	५०-५३
१३	गोरधनसिंह पोसावत माव, प्रीन	५४-५६

१४ चद्रसिध	गीत बसत, छू, चादळी	५७-६१
१५ तेजसिंह जोधा	पीणो साप, वठई व्हेगो है	३२-६४
१६ त्रिलोक गोयल	बसत रो गीत, घरती रो पग भारी, बिणजारा रो गीत	६५-७०
१७ त्रिलोक शर्मा	हिलमिल चालो, बाघ पगां मे घूघरा	७१-७४
१८ नायूसिध महियारिया	बीर सतसई श्रीण	७५-७७
१९ नानूराम सस्वर्ता	गीत दिवल री जोत, बसत रो बादळ	७८-८१
२० नारायणसिध भाटो	विरह, पासाण सुन्दरी मूमल	८२-८६
२१ नदकिसोर पारीक	रगा री र्त झाई रे, फागणियो आमा	८७-८९
२२ न द भारद्वाज	बघतो आतरो	९०-९३
२३ पारस अरोडा	यिर विद्रोह, क्यू अर किए सारू	९४-९६
२४ भरत व्यास	रजपूत दिवाळी	९७-१००
२५ भीम पाडिया	उजासा दीस आभळ कोर हिवळ मायलो हीरक दीप सजोय रे, पण लूट सक तो लूठोठां न लूठाईसू लूट	१०१-१०५
२६ मणि मधुकर	वाळो घोडो, आलीजा आज्यो घरा	१०६-११०
२७ मदनगोपाल शर्मा	देसडलो चेत माणसा, तारां री रगबरी	१११-११५
२८ मनोहर प्रभाकर	गीत भीत, फागण रो गीत	११६-११९

२६	मनोहर शर्मा	
	बीज, सार बमार्द, सू जाग जाग ओ मिनए जाग	१२०-१२५
३०	मरुपर 'मृदुल'	
	हाप, गीत, गीत	१२६-१३०
३१	माधव शर्मा	
	गीत, जोड़ी बट्टदां बी, गीत	१३१-१३५
३२	मेघराज 'मुकुल'	
	भाटी मुट्टकी बीज पसीज्या छियां तापडो, धंवरी	१३६-१४३
३३	मोहनसिध	
	गीत, दूहा	१४४-१४७
३४	रघुराजसिध हाहा	
	गीत, बरषण होळी भागी गीत, पागण घायो रे	१४८-१५०
३५	रतनलाल दाधीच	
	दीप सिखा कँव है पिर सत्ता	१५१-१५२
३६	राजश्री 'साधना'	
	पद कवित्त पद, पद	१५३-१५४
३७	रामदेव भाषाय	
	राजस्थानी नारी, साने रो सूरज जगलो, नि- राजस्थान जियो	१५५-१५६
३८	रामनाथ व्यास 'परिवर'	
	कोट दररयाजो, सरद रो अभिता	१५७-१५८
३९	रामसिध सोलकी	
	दूहा, हेमत मालती रा सारटा	१५९-१६०
४०	राधत साग्भवत	
	राजपूत रो डावडो, जी	१६१-१६२
	लुव छिय भावं	१६३-१६४
४१	रेवतदान 'कल्पित'	
	राजस्थानी, दिग्ग	१६५-१६६
४२	रेवतसिध भाटी	
	दूहा	१६७-१६८
४३	लनमणसिध	
	मुग्ग	१६९-१७०

४४	विश्वनाथ शर्मा 'विमलेश' गाव	१६२-१६३
४५	शक्तिदान कविया विरखा लू वी जाय, उठनो पछी	१६४-१६६
४६	शातिलाल भारद्वाज 'रावेश' गीत, गीत	१६७-१६९
४७	श्रीमंतकुमार व्यास मिनख वण नै जी	२००-२०१
४८	सरयप्रकाश जोशी सोवन माछळी, अरण वृक्ष र घण वीर न	२०२-२०५
४९	सुबोधकुमार अन्नवाल लौर	२०६-२०९
५०	सुमनेस जोशी मरण पथ रा पयी	२१०-२११
५१	सुमेरसिध सेखावत विरखा, स्यात	२१२-२१४
५२	सोभागसिध सेखावत बिनय रा दूहा, गीत	२१५-२१७
५३	हणूतसिध देवडा बिन तेल बळ या दीवाळी	२१८-२२०



स्व० उदयरज ऊजल

जनम-स्थान ऊजळा (जोधपुर-राजस्थान)
जनम तिथि कातिक वदौ ३ वि० स० १९४२
पिताजी रो नांव श्री लक्ष्मीदानजी ऊजळ (चारण)

उदयरजजी रा पिताजी डिंगळ रा मोटा जाणकार हौ जिणा सू आप डिंगळ काव्य री रचि ग्रहण करी । आपरा चडा पिताजी श्री फतेहकणजी ऊजळ डिंगळ पिंगळ रा महाकवि हा, जिणा रो पत्र प्रभाकर' नाव रो ग्रथ लिख्योडो हौ । उणां रै सरक्षण मे रहण सू अर पोकरण (जोधपुर) ठाकुर श्री मगळसिधजी रै आदेस सू आप डिंगळ म काव्य रचना सुरू करी ।

'घूडसार' 'भानिया रा दूहा', 'ऊजळ सदेस', 'राजस्थानी सतक' जिसी अनेक फुटकर रचनावा आप करी जिणस रो साहित मे घणो मान हुयो । काव्य रचना पर परम्परा सू अधिकार होणै सू आप बिना प्रयास ही रचनावा कर लेता । राजस्थान रै आदोळण मे आप आगली पंगत रा नेतावा मे हा । उदयरजजी उमर सू पुराणी पीढी रा पण विचारा अर शिक्षा दीक्षा सू नई पीढी रा होणै सू नवीन अर पुरातन रै बीच री कडी ङ्गु हा । बी० ए० तक पढाई कर'र आप राज री नौकरी मे ऊचै पद पर वरसा ताई काम करयो अर समाज सुधार रै काम मे भी आप सदा भागै रया ।

७५ बरस सू बेसी उमर मे होता हुया भी डोकरा गाव गाव घूम'र राजस्थानी रै आदोळण री जोत जगाई राखी । राजस्थानी नै उण रो उचित स्थान दिरावण सारू आपरै मन मे जिती लगन अर तडप ही वा वहोत थोडा लोगा मे मिलै ।



साहित रो महिमा

सत अखड सदेस चारण ऊजळ ऊचरं
दीपं वा रो देस ज्या रो साहित जगमर्ग
साहित ब्रह्म सरूप समपै प्राण समाज नं
रमै समै अनुरूप अग पळटतो, उदला
साहित रो मचार आणौ ऊची आतमा
आतम-बल आधार सकट मिटै समाज रा
चौडे चमकावैह आतम रै आभास नं
साहित सरसावैह सगळै देस समाज न
जद-जद विगी समाज मे आवै पतन अथाग
वीती सपत वावडै इण साहित अनुराग
राजनीत ग रोग सू पडै विपद जद पूर
दूर करै दुख देस रो वं साहित वं सूर
साहित विना समाज मे माहस रहै न सत्त
सत-साहस विन मयदा जीवण दुखी जगत्त
दुखिया न भेलो दिय निरजीवा सरजीव
माचो सयण ममाज रो साहित मवक सदीव
साहित सद आसरै तीस रह्यो रजथान
साचो पथ सुतत्रता साहित रो मनमान
रटो वीर रजथान रा साचो मत्र सदीव
जीवै देस-ममाज वै माहित जिक्का सजीव



भानिया रा दूहा

पाडण मानव प्रेम साजण देस सुततरी
आयो गाधी एक भारत तारण भानिया
करसा री किलकार हूकर मजदूरा हळी
गाधी री ललकार भारत उळटै भानिया
गाधी वाथा घात ऊचा लिया अछूत नै
सत ऊजळ सरसात भारत रो मुख भानिया
असुरा लई उडाय सीता रूप सुतवता
रे मोहन रघुराय भारत लावै भानिया
नायण काळी नाग दुस मेटण निज देस रो
आयो घण अनुराग भारत मोहन भानिया
भारत देस भुजग नहरू री पूगी नच
सेस नाग सरवग भारी जाग्यो भानिया
माता पडदा माय पूत जिका रा पीजरा
हुई अघोगत हाय भारत इण विघ भानिया
जकडी परतन्त जोस थकडी माता लडथडी
वेट पकडी वोस भारत लकडी भानिया
धौळो पडग्यो घाव पिंड हिमालय पीघळ
आसू आरै आप भारत दुखियो भानिया
भभव ताप भरेह कदेक वळतै काळज
घरती लूह घरेह भारत दुखियो भानिया
घर मानव हित घेय अस्र अहिंसा आसरै
डळ पर वीर अजेय भारत गाधी भानिया

पडती घाक प्रचड हिंसावाळी हिंद में
 गिटग्यो जिक्र घमड भारत गाधी भानिया
 असभै नै सभैह सत मारग गाधी सभै
 भातर हूत भजैह भय परतत्पर भानिया
 रटग्यो मन सुराज तपसी गगाधर तिलक
 उण नै सभियो आज भारत सगळै भानिया
 माता हित मरणोह मोटो तीरथ मानणो
 भाव इसा मरणोह भारत गाधी भानिया
 डोकर रै भुज-दड एण तपोवळ आसरै
 पळटै वेग प्रचड भारत वाया भानिया
 पग-पग जेळा पाय गाधी री ऊमर गर्यो
 डोकर दियै छुडाय भारत माता भानिया
 वरता वैम कदेक क्यू ईसो फासी चढयो
 दिस गाधी-गी देख भयो भरोसो भानिया
 जादू लकडी जोर परततर भारत पडयो
 तप गाधी रै तोर भचकै ऊठयो भानिया
 जूना छत्री जाय भय स्वारथ छाना भया
 अब छत्री-धम आय भरग्यो परजा भानिया
 पूगी समदा पार सीता समी सुतनता
 तप-वळ गाधी तार भारत लावै भानिया

△

कन्हैयालाल सेठिया

जनम स्थान सुजानगढ (बीकानेर)
 उमर सत्तावन बरस रै नैडी

सेठियाजी पैलडा कई बरसा सू कविता लिखता आ रया है। दस बरस री छोटी उमर मे ही कविता करण री सिमता इणा रै भावुक हिरदै अर प्रखर बुद्धि री बात बँवै। आपरी हिन्दी कवितावा अर गद्य-गीता री चार पाच पोथिया छपी है। राजस्थानी मे रमाणियँ रा सोरठा' नाव रै सग्रह रै अलावा 'भीष्म' 'तू तू' अर 'लीलदास' नाव री कविता-सग्रह अर 'गळगचिया' नाव रा गद्य गीत सग्रह भी आप रा वषायोडा ह। 'लीलदास' पर आपनै बेन्द्रीय साहित्य अकादमी रो पुरस्कार मिल्यो है।

सेठियाजी री रचनावा मे दासनिक्ता री पुट मिली रैवै। हरेक चीज वान अर व्यापार नै देखणै रो आपरो तरीको धणो गूढ है जिवँ सू आपरँ काव्य मे सवेदन अर अपणायत री बोळायत मिलै। यू मालूम पडै के सेठियाजी रो रचनावा दिना गँल गूढ सू गूढतर होती जारी है। आज रै राजस्थानी काव्य नै भावनावा रो इतरणी ऊची धरती पर पूगावण बाळा कविया मे सेठियाजी रो आसण धणो ऊचो है। विया भी आप उण पैलडी पीढी रा राजस्थानी साहित्यकारा मे सू ह जिका राजस्थानी रै नयँ जागरण री सहनाई मे मुर भरवा।

□

गीत

माळीडा, मत चूट फूल तो
आप ही कुमळासी
घडी स्यात अ और मुळक्ले
फेर कदे ना प्रासी

लेज्या पूजा थाळ आज तो
खाली ही निरमोही
सुण ले साची बात वताई
आग तने न कोई
भरु जठ ही पभू रा पग है
तप वठ ही ासी
नास करचा सू हुवे वावळा
वद राजी अवनसी

माळीडा, मत चूट फूल तो
आप ही कुमळासी
घडी स्यात अ और मुळक्ले
फेर कदे ना आसी

मरचा निरदई सगळा पाछा
वाटा वण-वण आव
भर न सकै वै साथ फल रे
वरचा पाप भुगतावे
फेर करचा पिसतावो गू गा
वद छटे चौरासी
चेत मानखा जेत जगा ले
रातडली घुळ जासी

माळीडा, मत चूट फूल तो
आप ही कुमळासी
घडी स्यात अ और मुळक्ले
फेर कदे ना आसी



गीत

सीपी, पाळ पेट मे मोती
गू गी मरण बुलावै क्यू
रवै जीवती परख जगत री
तो ओ मरणू जीगू है
विधा काळजो कठा बघसी
जद मोती लाखीगू है

कूख उजाळू ली मै थारी
ममदर तू अकुळावै क्यू

चक्षरण सौरम बसा प्राण मे
सूखा हाड घसावै क्यू

रगड घापज्या गुण न नीवडै
तो ओ पिसगू हसगू है
कचन काया घसा मनै तो
प्रभू लिलाड पर बसगू है

जस फंलास्यू जामण थारो
घरती तू पिसतावै क्यू

दिवला ले'र पराई चिन्ता
हिवटो रोज दभावै क्यू

नही निदतरि भौम, अ'धेरो
जाणै तो के वळगू है
नेह पियो तो जोत नैण री
वण कर मनै उपडगू है

कारज सारु जलम सुधारु
वाती तू घवरावै क्यू

सीपी, पाळ पेट मे मोती
गू गी मरण बुलावै क्यू



गीत

गोरें दिन रै लारै सिभन्धा
बहू सावळी आई
माथे वाघ्यो चाद-वोरलौ
पग पाजेवा-तारा
सुपना वाजूवन्ध जडाऊ
सोवै कामणगारा

सागै पेई भर नीदडली
नैण मोवणी ल्याई
गोरें दिन रै लारै सिभन्धा
बहू सावळी आई

बादळिया दो च्यार कुआरा
देवरिया मटबोला
भौजाई कोयल री जाई
करै किलोळा रोळा

परुड कागडा पून दनाल्या
स्थाणी नणदल बाई
गोरें दिन रै लारै सिभन्धा
बहू सावळी आई

दिन दिवलै री ली मे धण सू
मिलियो लाजा मरतो
पड्या रात रै खोजा नै ओ
काजळ कँवै डरतो

घाल मिलण सैनाण पलक जग
नीजर करै सुवाई
गोरें दिन रै लारै सिभन्धा
बहू सावळी आई



कल्याणसिंघ राजावत

जनम स्थान : चितावा (नागौर, राजस्थान)
जनम तिथि : २५ सितंबर १९३८ ईसवी
पिताजी रो नाव श्री भवरसिंघजी राजावत

कल्याणसिंघ उण ऊगता कविया म सून है जिका बहोत थोडे वसत म ही मच पर नाव कमा लियो । जोधपुर री 'कुमार साहित्य परिसद' नई पीढी रा जवाना म साहित रो सोख जगावण रो काम कर री है । कल्याणसिंघ रो प्रेरणा स्रोत भी या परिसद ही है । आपरी रचनावा रो खास विसय राजस्थानी लोक जीवन है, पण आज री समाज री नई चेतना रा भाव भी उणा म रवै । कालेज री पढाई री साथ साथै काय रचना म आपरी रुचि अर गति सराहणै जोग है । आपरी 'रमतिया मत तोड' नाव री पोथी आपरा पुटकर गीता रो सग्र है ।



पा'वणा

गीता रै गाव आया रितुराज पा'वणा
फूल कळी वाट रया सोरभ रा लावणा

वाधै वेला वादरवाळ
पगल्या माडै लाल गुलाल
नाचै मोरघा घूमर घाल
पात पात धुन वाधै ताल

गुण-गुण गा-गा भवरा रा सुगन मनावणा

सतरग लैरघा जडो किनार
घरती मुळकै वर सिणगार
मैदी राची घणै सुमार
कठ काठलै नदिया घर

आरतडो करवावै कोयल रा गावणा

हिवडै-हिवडै उठै हिलोळ
कोड किलोळा री घमरोळ
रुप थाळ मे पचरग घोळ
प्रीत मांडणा माडै पोळ

सुरसत सुर सुळभावै सासा रै वाजणा
गीता रै गाव आया रितुराज पा'वणा



होली गावण दे

फूला नी निछरावळ करतो फागण आयो रे
होळी गावण दे

हा रे होळी गावण दे रे चग वजावण दे
होळी गावण दे

वायरियो गू गो वण पग मे पायन वाघ्या नाचै ओ
घरती री कूपळ कूपळ मे मँदी राचै ओ
रग चढावण दे

हा रे रग चढावण दे रे रग उडावण दे
होळी गावण दे

काजळ पाडै कोयलडी तो मँदी मोवन घोळी ओ
पगल्या माडै पचरगी अर नाचै टोळी ओ
धूमर घालण दे

हा रे धूमर घालण दे रे धमचक माचण दे
होळी गावण दे

गाव गुवाडी अळिया गळिया चग रगीला वाजै ओ
छैला देवै ताल रसीलो जोवन लाजै ओ
रस वरसावण दे

हा रे रस वरसावण दे रे रूप रिभावण दे
होळी गावण दे

अवर रँ आगणिये चादो आवै तारा हेले ओ
घरती पर ढोला रँ ढमकँ डडिया खेलँ ओ
गै'र रचावण दे

हा रे गै'र रचावण दे रे नेह वधावण दे
होळी गावण दे

परभातै सूरज वनडोजी मरवर मुखडो भाकँ ओ
मुजरा देतो जातो साभ गुलाला नाखँ ओ
रथडो हाकण दे

हा रे रथडो हाकण दे रे हिंगळू नाखण दे
होळी गावण दे Δ

9006

जुग रो हेलो

काम करैलो काको

जी रो सुख देवैलो सागो

जी रो घाप खावैलो बावो

दादै रा दात पडै

पडपोता पोळ यडै

थामू सातू पात पळै

था रै घी रा दीप बळै

सुणो साभळो, वात हामळोजुग रो हेलो हे

जागो रे जागो रे जागो रे

आज उडीकै मैणत माटी

खेत खडै तो सोनो लाटी

लिछमी ऊभी लिया आरती

खोल खेत मदर री भाटी

सुणो पुजारी, उठा कुदाळी थाम तगारी

खेता मे देव जगा

मैणत रो भोग लगा

भरसी राम बखारी

थारी भू पी वणै अटारी

थारी वीतै रात अधारी

मावस रो मान मरै

चादै सू चमक भरै

थासू सूरज-ताप तळै

थारै दुखरा हेम गळ

सुणोसाभळो, वात हामळो, जुग रो हेलो हे

जागो रे, जागो रे, जागो रे

करणी नीव चला चेजरा
 लावा थान वणा वेजारा
 खीच ऊमरो सीच पसीनो
 मोटी ताली लाट विजारा
 सुणी डावडा, उठा फावडा, तपो तावडा
 मैणत रो म्हुरत टळें
 ज्यू चोथी पो'र वळें

हल सू करसी हेतो
 जा रें पारस वणसी रेतो
 जा रें भगवत राखें चेतो

अन-घन भडार भरै
 स्यावड निणगार करै
 थामू जम रा हाथ डरै
 थारै विरमा पौव करै
 सुणो साभळो, वात हामळो, जुग रो हेलो हे
 जागो रे, जागो रे, जागो रे

रळ मिळ चालो कुटी अटारी
 नेह वाधल्यो कलम कटारी
 अरे ! देस रो रथ हावण मे
 भेद-भाव री वात कठा री

सुणी नगारा,
 जाग जगारा,
 थाम हुवारा,

सपना रा वाग फळें
 सोरभ रा समद दुळें

△

किसोर कल्पनाकांत

जनम स्थान	रतनगढ (बीकानेर)
उमर	सत्ताळीस बरस रै नैही
पिताजी रो नाव	श्री चिरजीतालजी मिस

रतनगढ मू छपणवाळीं राजस्थानी पद्य थोळमो' रै सम्पादन रै रूप मे किसोर कल्पनाकांत न हर राजस्थानी प्रेमी मनी भात जाणै । किमारजी न गीत चित्रकला अर काव्य रो रुचि आपरा पिताजी मू किरासत मे मिली । टावरपणै मू ही पाठमाळा मे हाथलिख्या छापानिवाळण मे आपरो मन रमतो । इणी कारण स्त्रुली पढाई आपरै गेलै गई अर किसोरजी रो मौजी मन साहित अर यत्ना रै ऊजड पण लुभावणै मारग पढयो । बरस बीतग्या पण इण गनै रो थोड कोनी आया अर आणो भी नही । किमारजी रो घणो भावुक हिरणे मारग रा आठ भमाडा म उळमना निवळतो बढतो जा रया है क्यू के बढण ही उण रो लक्ष्य है ।

आपरी कवितावा रो विषय मोटै रूपम तो मिणगार ही है भावै वो मानवी मिणगार हा या प्रकृति रो । जमान रो माग रै मुजब खम रा समता रा अर आजादी रा गीत भी आप लिखै । काळीदास रै 'कुमारसम्भव' अर 'रत्न मधार' रा अनुवाद रै अलावा 'घरती रो धीव' नाव मू एक काव्य सीता रै जीवन पर आप लिखा है । आप रो अनेक कवितावा मे परसै दरज रो भावुकता पूरै बेग मू उफणती मिल । □

गीत

अव सुपना रो सैणा-भैणा घू घट खोलो,

मैं सुध-चाद थारला नैणा मे आवू हू

रूप ल्हुकोवण हाळा सगळा वसतर खोलो

प्यार-जुवानो रै सुख रो मैं लिया वीदडी

मनोकामना रो सगळो सोरम मरसातो

अग-अग मे अगराग ठाडोळ लगावण

आय रयो हू, मगळ-गीत मिलण रा गातो

तन रा, मन रा, रूप-रग रा सै वळ खोलो

मैं वायरियो वीण वजातो ई आवू हू

फळसा, मोरी, वद दरुजा आगळ खोलो

धारी-म्हारी मुळकण रा तारा सू राता

सज जावैली, वीस वणावैली भल वाता

इणी तरै ऊमर रो क्यारी खिली रवैली

चलण सकैली नी कोई पतभुड रो घाता

कळी खिलो, रस घणो लुटावो, पाखा खोलो

मैं रस-लोभी, सचै करणो वद चावू हू

सगळा फूल रिलो, मुळकावो आस्या खोलो

उजळा-उजळा अग उघाटो, रग उभाडो

दूधा-धोई राता मे सिणगार कढावो

काजळिया नैणा मे भरत्यो रीत प्रीत रो

मन सू मन रो चाव रळावो प्रेम बढावो

कंद करो मत, रागा रा सुवटा नै खोलो

मैं सुर-पथी गीत गळै मे ई आनू हू

भावा रो मैनावा रा पिजरा नै खोलो



नुवली गीता रो ज्ञान

म्हारें गीता री नुवली गीता वाचो अरव
में नुवी भावना छद जोड वर ल्पायो हू

ओ ग्यान करयो भेलो में मगळो जोड-जोड
अरव नुवा सबद में गूथ-गूथ कर गारयो हू
इण गीता नें थे ग्यान समभल्यो गीता रो
में उणी ग्यान नें नुवो रूप दे थारयो हू
में किरसण हू, मायावी हू, अतरजामी
इण खातर अरव में नुवो रूप घर आयो हू

मिनखाजूणी रो घरम पैलडो ओ ई है
सुग सू जीवें, सुख सू पीवें, सुख सू खावें
मिनखाजूणी रो करम पैलडो ओ ई है
सुग मिरजण मारू घरती पर अन निपजावें
इण खानर मिनख परणो राखण थेत्यार हुवो
में कवि वण हेलो मारण ओ ई आयो हू

हर मिनख सुखी जद होवेलो, रळ मिळ चाले
सैं भणें-भणवें, समभें, जीवण रा लेखा
घरती मायड रें दुगडें नें भेटण सार
सायत रा आखा वाज करे, बदळें रेखा
के लिख्यो ? करम नें क्यू ठोको ? की काम करो
फळ धूला वण किरतार, इस्यो मनचायो हू

ओ मिनखजमारो ओजू कदे न आवेलो
इण खातर चेत जवानी मे, फळ पावेलो
अक्कल रो कारदो मत्ता करो खाली वैठ्या

धरती माथें खेती खडियां सुख पावैलो
 मोटचार कुहावो, सरम करो, समदान करो
 सम नै वरदान सदा में देतो आयो हू

स्वारथ री मोटी लावा सू मतना बाधो
 ओ चडस कुवै मे डूव'र रीतो ई रैला
 परमारथ धन मचै करल्यो इण जीवण मे
 ख्याता रा पाना जुग-जुग सँ वाता कैला
 भत गरब करो, हिवडै मे दिवलो चासो अब
 में ग्यान नैण सू देह्या, सत बण आयो हू

में रामायण रो राम, किसन गीता रो हू
 में परमारथ रै आसण पर ई वास करू
 में सम-सागर मे सेसनाग सत रो रापू
 में मिनखपणो छोडणियै रो भट नास करू
 इण सातर सुणो साभळो थे इण हेले नै
 में जुग-जुग सू औतार धारतो आयो हू



मनै उवारो !

दियलो चारणां बँठया त्रि म
पण चारणा रं घाम हाख्या
घाज घाया मनै उवारो !

मिागाजूली न जद घाया
ह्ळी गांभळ म ति पाया
गंत-गत म व मम-गत
मै गाळा वणकर भग्माया
जद मै ममद्रयो जांत-जमारो
पण जाण सू हुता माग्घो
मनै उवारो ! मनै उवारो !

समभ पणै जद सू घयतार ता
ग्या मामन धारं मरता
ऊन-जलून पामतू वकनो
चुप रह जातो जद मै घाता
देखो म्हाारा गुपतां रा दिा
म हण ममन मामने हाख्या
ऊधो धारा, चाल याग !

पाट वरम री ऊळी पागी
जद ओतन-मन मुगती पागी
ता घर मनहो धीर वधामी
पाछा दिाहा मूळा घामी
आ ही सोच विचार'र मा मे
धारो सायत ताव उवारघो
इतरो चारो, मतना मारो !

अब मन म्हारो यू पिसतावे
 गया दिवस के पाछा आवै
 नैण पिराछित नीर बुहावै
 रोतो कठ राग के गावै
 पण मतजळ सू मै अब म्हारो
 मनडो धो-धो घणो पत्तार्यो

गळग्यो सारो, मैल विचारो ।

पाळ वाघद्यो अब मळ आगै
 नही मैल अन्तर मे लागै
 मोया भाग म्हारला जागै
 नीद कुलखणी वेगी त्यागै
 डमो वरो मन-धाम, आज मै
 अन्तर सू प्रभु ! तने पुवारघो

भरो हुकारो, भाग मुवारो ।

तोड जाळ माया रा नासो
 वचन भलेरा वर दे भासो
 मने देव थे धातन रासो
 भूली वात मता अब चासो
 एन नाव है धारो प्यारो
 जिण त्रिा तो मै कदे न सार्यो

की नी म्हारो, तन-मन धारो ।

भाव भुळावण भूडा भरिया
 जिण सू तन-मन तिसिया मरिया
 फूट गया अब काचा धरिया
 मेह पडचो ऐटो सावरिया

गुण गीता मे गावूला मे
 थे म्हारै घर साभ पधारो
 रस्तो धारो, देखू सारो ।

कृष्णगोपाल कल्ला

जनम स्थान मेढता (नागौर)
जनम तिथि तेरा नवम्बर सन् १९३७ ईगवी

किसनगड (अजमेर) रा रवासी कु वर कृष्णगोपाल कल्ला राजस्थानी रा ऊयता कविपा मे आगळिया पर गिण्या जावण वाळा म सू है । आपरी तिलण कळा रँ जस रो सवरो उण दिन बघ्यो जद भारत रा आसा विस्वविद्यालया री नाटक प्रतियोगिता म आपन पैली जगा मिली । आपरी सम्कृत मिली भासा म आपरँ ग्यान री भळव आवँ तो आपरँ भावा म सरसता री रळव मिलँ ।

आप राजस्थानी कवितावा रो एक सग्रह 'भामरक' रँ नाव सू करघो है । आज रँ साहित रो अनेक विधावा न आप राजस्थानी अर हिन्दी दोनु भासावा री रचनावा म आजमाई है । कल्लाजी री रचनावा मे एक कानी मातभोम रो दरद फूटघो पई तो दूजै कानी मायड घरती रँ कण-कण खातर अपणामत रा भाव ऊमई । विद्यापति रा पद गोन गोविन्द अर रत्नसधार रा राजस्थानी अनुवाद म आपरो समरथ संबद भडार अर भावा-री परल मू ड बोल ।



आखडल्यां

भरम गमाई आखडल्या

रगताभ कवळ री पाखडल्या

छिपा छँल री छिव परछाई, छानी राखण पलका मूद
फेरु परगट ह्वँ ह्वँ जावँ, नैणा लुकी रूप री वूद
जतन घणोरा सँ कर हारी, घणी लजाळू आस्या मीच
पीटँ डूडी आख वनूडी, प्रीत छकी मोतीडा सीच
अटपट बाणी रस अळसाणी, तिरछा तीखा टेढा सैण
इसडा रूप लालची लोभी, रवँ न छाना धण रा नैण
अळसाया अणियाळा अधमुद, घणा उणीदा रातजग्या
भूहा बाकी पलका थाकी, रगरातोडा प्रेमपग्या
लोथण लाली रग रगाळी, रूडी रूप लुभाणी रैण
आस्या पास्या पा उड जाव, पावँ अणसभव सा वैण
रूप समुन्दर माय तिरती, फिरती छिपती माछ्या मैण
भाकै उभक् चाव कर चौडै, लुलै लजावै सारया दैण
प्रोलै राखी रवँ न छाकी, कुण जाणै कुण भुरकी नाख
विवस करी सरवस हर लेगी, किरा री कवळ पाख सी आख

नटगी डिगगी ठगगी उडगी

मधु विरमी मधु माखडल्या

भरम गमाई आखडल्या

रगताभ कवळ री पाखडल्या



आंसूडा

अ जुग-जुग जूना दुग साथी ।

अ अननववारी पीडा रा व्हाता वालम वागत चढ्या—

दुग-दुनदुग री नयती नाथी

आम्हा र अतल ममदर मे, पिय वनदुदुओ दुपुकी मार्गे
गाळा माचणी चीनिजरा मे, चल मीप भोपण्या थिर हागी
गा मित्रण मुहुरत ग्नात नगत, गुपना गे परम्यो इमगत जळ
माजन पैरावण प्रमाळा, सचै दाल्या मोती तिरमळ
एग म्पाळै रतनागर मे, अं पाचल्ला माती पळनया
पूरोजरा प्रेम डोर माही, अगदीठा दीठा हँ टळनया

अ नेह सुषपर माळ गुध्या, हटवाड अ वद सज पाचै
अणमाल विकैपिन मोन भाव, डू डी पीटघा अं मरमाचै
पण अ मातीडा घणमू घा, अण विध्या विकै वाजरा नद
योपार ररे फोड पारगिया, मू घणा विकै वणजारा नद
अ मणिया प्रेम-मुमरणी रा, गिण गिण घसगी अं आगळिया
जागण ज्यू जप रच्या वंठी, अं आज विजोगण आगडिया

आ निजर डोर भोगी पडगी वाया भरगै त्यू पधा फिर
मू गाट चलता वोळा हा, पण निजर पडी न घटावा फिर
आ विवम वटाऊ आसूडा, ओ वाट चलयो हारघो थाको
धरमादरीळारी साळा भाळी, नी ठंरघो ठठवया मन पाको
आटोलै ओटा र हाया, मोत्या सजता जो वेसडला
व आज विजागण भुर गू ये लट-लट आसू सदेमडना

पण अं मोतीटा घणमू घा, हिवडे ग हस चुगै चूचा
गाना री पावटल्या रळवया, अं दुलभ मोतीटा ऊचा
जाण गुमियोडो मिल्यो वदे, किय री जाणै अं परछाई
अं पीडा रा प्यारा यारा, वेगी निरभागण पछवाई
मुप मू माम्हेओ हुयो नही, गायो न सावण्या सोवेलो
फेरा पूरा हँण पैली, पडत जिण मू मागे धेलो
खिण वणै मिटे इसडा आसू, अ प्यार हार वद वण्या वता
वद प्रण्या वता अं सुख भाषी
अं जुग-जुग जूना दुग साथी

विरखा

काळो कामणगारो वादळ बाडो साड धाटकें
सोरमसाणी पून सुहाणी रग रग जोवन फूकें
मोरचा बोलें आवें ओलें

कोयल कूक सुणावें । गौरी नैणा नीद न आवें हो नैणा०
रतनाळी आखडल्या थाकी जो जो पिव री वाट
छोळा खाती हिय हुळसाती छिरामिण छिरामिण टाट
वीजळ पळकै आसू टळकें

वादळिया गरणावें । गौरी नैणा नीद न आवें हो नैणा०
ओटी छोरवा छानी छानी भुकें भरुखें भाकें
हरखी फिरखी डहकी डग्पी कामण भुरवी नारें
वचें न छैलो भुवरो गैलो

पाखडल्या वच जावें । गौरी नैणा नीद न आवें हो नैणा०
नुई नुवेली भ्देल अकेचो वोलण मे सरमावें
पूघट टाळें मधरी चालें पिव रो हिव भरमावें
रुपा गैली तीजण छैली

मैडी काग उडावें । गौरी नैणा नीद न आवें हो नैणा०
वालम रोभें हिवडो भीजें विगसी-विगसी रात
हाथ विकाणी रात विहाणी सुण सुण पिव री वात
भारी पळका विखरी अळका

कामण हरख जणावें । गौरी नैणा नीद न आवें हो नैणा०
सास रिसावें नणद चिडावें देवर घेवर खावें
पिवडो आवें मन विरमावें लुक डिप देखण चावें
छैल छवीलो भवर रमीलो

आडो तिरछो आवें । गौरी नैणा नीद न आवें हो
नैणा नीद न आवें ।



गजानन वर्मा

जनम स्थान

रतनगढ़

उमर

अठ्ठाठीस बरस र नेही

कवि सम्मेलनां रा मचा पर राजस्थानी लोक जीवन
रा गीत लाव घुना म गावण याळा कवियां म गजाननजी
आगली पगत म बठया है। 'घरती री घुन 'मोनो निपजै रेत
म' अर वारामागो' नाव म आपरी कविताया रा तीन सप्रह
निवळया है। राजस्थान रै मानस नै उण रै घर प्रांगण
गाव गुवाड, अर गेत-राळा रै घर वातावरण म बिठा'र नई
विचार क्रान्ति री निरणा मू उण रै अंतर अर बाहर
नेना नै प्रतिबिम्बित करणो आपरै गीतां री ग्रासिमन है।
आपरी गावण री कळा गीतां न हायां भाव'र राजस्थानी
भासा रा बासीद वणा दस म दूर ताई भेज दिया, जिनमू
आज री राजस्थानी रै प्रचार म घणी मदद मिली।



अडवो

अडवो ऊम्यो खेत मे
सोनो निपजै रेत मे
खबरदार ! हरियाळी खेती कें कुण नजर लगावें
गत अघेरी वाड तोड ओ कुण छानै सी आवें ?
ऊजड चालै रै
हरी-भरी खेती पर घमर घालै रै !

अडवो ऊम्यो खेत मे
चादी निपजै रेत मे
हाथ गडासी जेळी सूड करावत करसो हरस्यो
डत्र-डव नैणा आस उळीची जद वादळियो बरस्यो
खेत सुधारै रै
सकडी सीवा रेवड कूण उतारै रै ।

अडवो ऊम्यो खेत मे
रूपो निपजै रेत मे
चावड-धावड चोक करचो आसूदी धरती वाई
दिन भर करचो निनाण खेत मे दोन्यू लोग-लुगाई
अडवो ललकारै
ओ अगद रो पाव' क कूण उखाडै रै ।

अडवो ऊम्यो खेत मे
सोनो निपजै रेत मे

म्हारो करसा कामणगारो हार्था मिनस बणारै
भूप भगीरथ अडवो सारै दुळ गो वस्त मिटारै
रात म्ग्याळ रै

पाग्ना माड्या सडया'व पथ उजाळै र ।

अडवा ऊम्यो सेत मे

चादी निपज रेत म

वाटी गीप गू थळा वाडघा नागी वडघा सीनी

ऊपर-नीच वाघ सीस राळी हाडी घर दीनी

जीवण जागै रै

अडवो अडता देव टागरा भार्गै रै ।



दीवाली रो गीत

दीवाली रा दिया जळै

च्याह मेर च्यानणो, नीचै कूळै काळो चोर पळै

दीवाळी रा दिया जळै

महला मे मतवाळा बैठ्या मौज करै

भूखा मरै मजूर कठै सू पेट भरै ?

रावण घणा जमी पर हण्ण करै लिच्छमी

राम निसरग्यो, मिनखपणो बेमौत मरै

मूना सासर फिरै करसणी दुख पावै—

भणै रामजी ! सिर की आफत दूर टळै

दीवाळी रा दिया जळै

गाजै-वाजै जीत रामजी घर आया

आगै होय माधिया भाई गुण गया

वेचारी सीता सतवती मग डोलै

भासा दे-दे कमतरिया नै बिलमाया

साची कहता हिवडै री हेली हालै

पडदं ओलै चोर-लुटरा दाळ दळै

दीवाळी रा दिया जळै

मुसग्यो तेल दिया रो पण वाती सिलगै

मावस रात अघेरी मन-मन मे बिलखै ।

तारा मुळक-मुळक पल मे फीका पडग्या

पौ फाटी सुण आज अगूणो दिन चिलकै

घणू तुकग्या वार्या और तिवार्या मे

मिनखा सातर धरती काचर-चोर पळै

दीवाळी रा दिया जळै



गीत

रुत अलबेली

दिन अलबेलो

आभो वदळें रग वदळणी मिनखाजूण पुराणी
धरती सागण उजळी धोयी,, पण है नुअ्री कहाणी
मिणत-मजूरी करे जाटणी, भक् मारें ठुकराणी
गरव हिमाळें-रो गळ वैग्यो वण गगा-रो पाणी
नुअ्रो धान है

नुअ्री सान है

खोटो पीसो चलयो आज तो पाई वटें न धेलो

रुत अलबेली

दिन अलबेलो

सर-सर करती पून वघाई वाटे गीत सुणावें
मन मै राखी वात न रेंवें भोंग भळी मुसकावें
टावर-टोळीं फाळी आडें आपस मे वतळावें
मिनख मजूरी करता हरखें विरथा देव न ध्यावें
डरमत भाई

धीर सिपाही,

वडका म्हने गैल वताई, पकडो सीवो गेलो

रुत अलबेली

दिन अलबेलो



गणपतिचन्द्र भंडारी

जनम स्थान जोधपुर
जनम तिथि भाद्रवा वदौ ४ संवत् १९७०,
पिताजी रो नांव श्री रामनारायण जी भंडारी ।

भंडारीजी रा ए। रूंप लामा रे सामने है—एक कालज रे अध्यापक रो भर दूजा सम्मेलना रे कवि रो । दाना म ही भंडारीजी आपरो विसेसता राय । कालज रा टावर जिण जिन्दादिली खातर आपरो तारीफ कर विसी जिन्दादिली रो सराहणा सम्मलना रा खाता भी करे । हिन्दी कवितावा रे भुकाबल म आपरो राजस्थानी कविता व्होत थोडी है पण जो बुछे है उणम तीखे व्यग्य रो छटा देखता ही वर्ण । 'रक्तदीप' नांव म आपरो हिन्दी राजस्थानी कवितावा रो सग्रह छप्यो है । राजस्थान ही न्यू वारे कळवत्त बम्बई तक् रा सम्मेलना मे भंडारीजी ने बुलावा आवे जठे जा'र वै आपरो एक यारी हो छाप छोड आव । राजस्थान रो नई पीढी न साहित्य भर वाच्य रो सोय र्गण रे काम भी भंडारीजी आपरे जिम्मे ले राखी है जिण ने वै घणी खुबो सू निभा रया है ।



नवी जिन्दगी

गत ढली परभाती गाती नवी जिन्दगी आवै है
जाग जाग माटी रा माटी । माटी यनै जगावै है
मृतो मत रै अजाण, वैठी होंय जा किसान
काळी रात गई

धरती स धणियाप ऊठग्यो ठाकर राजा राणी रो
थार सागै हळ जोतैला हमै पूत ठरराणी रो
जुग पमवाडो फेर लियो है, भाग जागियो ढाणी रो
नाडा नाडिया रै पार, लाली छाई हे अपार
हेलो मार रही—सूतो मत०

मभ ऊनाळे यू तपियो नै धरणी कियो महला आराम
थारै खन पसीनै सू वारै हाथा मे हसिया जाम
मिनख छोड कूतरडा पाळया जद धणिया सू रुटयो राम
सूता गैया मरदार, भोगे मोई भरतार
धरती छोड चली—सूतो मत०

देख ! गढा मू लटका करती लिछमी छमछम आवै है
एक-एक कर जोर-जुलम रा दिवला बुभता जावै है
मारग मे वारोठया वैठा तिछमी लूटी चावै है
ररसा ! होस सभाळ ! आती लिछमी रखाळ
लूटता जेभनही—सूतो मत०

वधा वधग्या, नहरा खुदगी, खेत नही तिरसा रेसी
थू धरती पर पटक पसीनो, वा ढेरा मोती देसी
जे भण गुण हुसियार होय थू, वोरो लूट नही लेसी
आई आई वहाग ! उजडी जिन्दगी सवार
है वेळा बीत रही

सूतो मत रै अजाण, वैठो हाय जा किसान
काळी रात गई ।

△

कुरसी मैया री आरती

मिनख उवारण, मिनख दुवावण, जै कुरसी माई
 प्रजातन घर जलमो, मजातन व्याही जै कुरसी माई
 और देव दोपग्गा, चारभुजाधारी
 दोहत्थी, चौपग्गी, धिन माया थारी—जै कुरसी माई
 हे कळजुग री काळो, थू जद महग करै
 गळी वुहारण वाळा, सिर पर उतर धरै—ज कुरसी माई
 थारी वरसी माथै, मेलो जवर मचै
 बडा बडा रा कच्चा चिट्ठा रोज बचै—जै कुरसी माई
 भला भला भी भटकै, भौपू ले रैकै
 भला भला पर कादो, भला भला फंकै—जै कुरसी माई
 वागवीर भिड जावै, तोर चलै तीखा
 साचोरी साड्या रा सीग पडै फीफा जै कुरसी माई
 एक वार जो थारी, चरण सरण पावै
 गुण नै माथै माका ज्यू चैठयो जावै—जै कुरसी माई
 जो छळ बळ सू ध्यावै थारो सेव करै
 भाई, भतीजा, माळा, सब नै न्याल करै—जै कुरसी माई
 मोटर थारो वाहण, मिंदर है बगला
 याने खुद रा जाणै, वै डूवै सगला—जै कुरसी माई
 ज्या नै थू तज देवै, चैन नही पावै
 उचक उचक गैला ज्यू थां कानीं धावै—जै कुरसी माई
 माटर नै तज जो जन, वोटर नै ध्यावै
 वो थामे मिल जावै, पाछो नी आवै—जै कुरसी माई

गणपति स्वामी

निवास स्थान पिलाणी (राजस्थान)

उमर ५८ वरस रै नेडी

गणपतिजी र जीवण री सगळा मू मोटी घटणा सायद आ ही है के इणा न राजस्थानी रै आदोळण रा मूत्रधार स्वर्गीय श्री सूरजकरणजी पारीक रै बन रहणै रो मोको मिल्यो । पारीकजी री प्रेरणा मू राजस्थान रा लोकगीत भेळा करण रो काम भर सोख दोनू आ न मिल्या । आज र राजस्थानी प्रेमिया न आज ताई लोकगीता रो इतणो चोखो सग्रह नही मिल पायो जितणो गणपतिजी रा जुटायोडा गीता रा पारीकजो छपवायो । इण न भल होणी कहा चाहे सस्कार पण या बात सोळा अना सही है के गणपतिजी राजस्थानी लोकगीता री आत्मा न आपरै हिये मे ठेट उतारली है । लोकगीता रा सद् भर वारी धुना गणपतिजी री रग रग म समायोडो हे । भाबुक हिय रा घणी हाणै मू गणपतिजी घणै मीठ मुर मू लोकगीता नै गावै अर उणा री तरज पर आपरी त्रिजू रचनावा भी बणाव । गीता र गाहवा न उणा न हाथवसू करण मे कितणा फोडा पड आ चरचा भी गणपतिजी री आपवीती होण मू बारै मू ड ही ओप ।

राजस्थानी बाय म गणपतिजी री देख लावी चौडा नी है । पण अ जो कुछ लिख्यो है वो थोडो होता थका भी घणो फूटरो है ।



लोरी

वाळो पाखा वायर आयो, माता वंण सुणावं यू
म्हारी गोद सिळाई रे वाळा, में तने मखरी घूटी द्यू

तेज वटारै नाळो मोळ्यो, नाळो मोळत बोली यू
पतस्याही फोजा रा वाळा, मीस मोळ घर आये तू

मेडी चढ अर थाळ वजायो, थाळ वजावत बोली यू
च्यार कूट चोफेरै वाळा, नीवतची धमकाये तू

वाळो गोद्या दूध चु घावै, दूध चु घावत बोली यू
धोळै पय पर कायरता रो, काळो दाग न लाये तू

कुबो पूज कर घर पाळी आई, फळसै वडता बोली यू
फळसै मे ढोला रै ढमकै, आरतडो करवाये तू

रगखटोलै वाळो सूत्यो, लोरी देता बोली यू
रणखेता चतरगी सेना, गाढी नीद सुवाये तू

सोवन भूलै वाळो भूलै, भोटै भोटै बोली यू
उतणी वार हिलाये प्रियमी, में तने जितणा भोटा द्यू

मुरधर देस

वीत्या मुरधर देस थारा वै दिन वीत्या रे
 सूरु घाई घालता, ऊभा खेता माय
 जे दिन मुरधर राजतो, तरवारा री छाथ—थारा०
 धर-धर कोडम जामती, धर-धर वीका वीर
 धर-धर राणा समरसीह, धर-धर हठी हमीर—थारा०
 सूरु लडता खेत मे, धर केसरिया भेस
 सतिया पडती आग में, कर कर खुल्ला केस—थारा०
 बादळ वारा साल को, लडियो लाखा साथ
 सारी दुनिया देखियो, वो खाडो वो हाथ—थारा०
 आठ पहर चौसठ घडी घुडले ऊपर बाम
 सेल-अणी हू सेकतो, वाटी दुरगादास—थारा०
 दूसमी को तर्कियो कर्यो, वैर्या री सुख-सेज
 जी पर सुख सू पोडियो, वो गोरो रण-सेज—थारा०
 राणो भीव छुडाइयो, मात कर्यो सुलताण
 नार पदमणी राखियो, सीसोद्या रो माण—थारा०
 फोज पछाडी खेत मे, फेरी तोप मुहाळ
 राणाजी दीही सुणो, 'हळदो' मे ललवार थारा०
 ऊची धजा फरुकती, वजता वीर निसाण
 लख-लख छाती फूलती, पडता मू छा पाण—थारा०
 दूर गई वा वीरता, सुपन भया वै त्याग
 जळ बळ कर सीतळ भई, वा जौहार री आग—थारा०
 माणस री के जातडी, डरता जम का दूत
 कठं गया रण केसरी, बळवाका रजपूत—थारा०
 उठो छत्रियो! जळमभोम को फेर करो उत्थान
 एक एक करण मीचदयो, थारै खूना हि दुस्मान थारा०
 हे जग जामी ! फेर जगादयो, सिंधा री मतान
 एक वर वै दिन भळे दिखाद्यो, दूठो ओ वरदान - थारा०



स्व० गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद'

जनम स्थान जोधपुर
पिताजी रो नाव श्री चंद्रभानजी व्यास

'उस्ताद' सही अरथ मे जनता रा कवि हा। आजादी'री लढाई म सन् १९३० सून सन् १९४७ ई० ताई आप पत्र कारिता रै साथ साथ क्राति रा गीत लिख्या अर खुद गाया भी। आज किता'क कवि है जिका करसा अर मजदुरा र बीच खडधा हो'र उणा री भासा मे गीत गा गा'र क्राति रो सख फूव। जन भासा री पकड, उणा रै दुख दरद रो अनुभव अर उणा रै ही रहण महण रो ढग अपणाणै वाळा समरथ कवि ही जन कवि वणणै रो दावो कर सकै। 'उस्ताद' इण कसोटी पर खरा ऊतरै। योजनावा रै सिल-सिलै मे 'अल्पवचन' अर सहकारिता' आदि कई विसया पर आप गीत नाट्य वणार उणा न मच पर भी दिखाया हा। जिका सून आपरी सामरथा रो पतो लागै।

सुतत्रता रै खातर लडणवाळा उस्ताद' खुद सुतत्र प्रकृति रा मिनख हा। उणा र मन म देस री आर्थिक सुतत्रता मारु गाव गाव घूम'र गीत गाणै री इच्छा ही। राजस्थानी मब्दा अर भावा रो आप री जाणकारी घणी सराहणै जोग ही। इणभू ही आप रा गीत घणा फूटग अर असर करण-वाळा वण पडथा। 'जन कवि उस्ताद' नाव सून आपरी रचनावा रो एव सागोपाग सबळन निकळया हे।



दीवट

ओ र भाया, रुक मत भाई, रुक मत भाई
उजड खडती आंधी आई
दो भटका दे आ टळ जासी, आ गळ जासी रेत चढाही
रकता पैली आप मरली, जीव जठ तक आग जाही

ओ रं वेली, थक मत भाई, थक मत भाई
वाट कठण, काया कवळाई
अडव रगीला, काळा, भूरा, पीळा जागं, वाट वटाही
तू सागं आगं वध जुग रं
जीवण दे, जीवण रं ताही

ओ रं सुगणा, छर मत भाई, तक मत भाई
नवी कटं है वरग लडाई
धर मजला जीवण जोडं वध
दीवट लेले पथ वताही

ओ रं उरजन, डर मत भाई, मर मत भाई
दिन-दिन दीसै मजल सवाई
आ थारी काया पड जासी
पिण दे जीवण चाल गटाही
नित आगं वधती जिदगानी
आ दीवट आगं ले जाही

घरे आजा

आ रेत हुई रतमाती, साईना थारी
घरण बुलावै घरे आजा ।
आ वाय चलै वरसाती, रगराजा थारी
कामण घवरावै घरे आजा ।

नवी जोड थारी नै म्हारी, नवी जोड नारा री
आभै नवा बघाऊ दौडै, चढी उमग सारा री
रुत हाळी थारा, बहल्या उकळावै घरे आजा

इण जुग रा भागीरथ ल्यासी, सूखै थळ मे पाणी
वाग-वगीचा सू ढर जासी, खडै खेतडा ढाणी
मनमाळी थारी, क्यार्या कुमळावै, घरे आजा ।

आठ मास परदेसा वीत्या, अरव बिरखा रुत आई
अण, धीणो, वरती सै तडफै पुळ-पुळ तिरस बघाई
घनगोरी थारी, माया रभावै घरे आजा ।

नगर, गाव, खेडा मे लाग्या, जन-महनत रा मेला
नर-नारी कमतर मे कूद्या, जन-कारज मे भेळा
वळहाथी थारी, मरवण सरमावै, घरे आजा ।



मत जा साथी

मत जा साथी पथ पुराणै

मत रण-नुरगा रा असवारा नै मोटर अजन मे तारणै

जिण मारग परताप पधारया, जिण हळ दुरगै वाज सवार्या

उण जूनै मारग सू साथी, पोच न पामी आज ठिजारणै

— मत जा०

उण जुग धरती ही महाराणी, वाय नही घर री धरियाणी

तरारार री वाच दव्योडी, धरण दावली राजघराणै

मत जा०

किण रो मुलन, कठै ही जनता, जन सू बधन कुळा रो ममता

मुगला रा सावत रण वाका, कुळ पर बटग्या, जगती जाणै

— मत जा०

आज मुनक आजाद एक है, कुळ सू इधन मसीनमेक है

परम-गाठ जळ बाध, बीजळी, गळा बधै जद लोक उजारणै

मत जा०

पूज पटेरा सीस भुफाले, टम मिलै वारा जम गाले

पण तू क्यू दिली सू लड रे, चढै बटन ले क्यू उभराणै

मत जा०

ब्याह कू टा चिलक घणी है, तनै दवापण भीत वणी है

इण जुग रो अग्यात दिपावण, क्यू जना जूभार वखारणै

— मत जा०

आगै देख मडघा पग ताजा, हिल-मिल मिनघ मजूरी गजा

हुनर हेत सू बढळै जीवण, जीवै सो जान गत जाणै

— मत जा०

गंगाराम 'पथिक'

जनम स्थान बीकानेर
उमर तियालीस बरस रै नैटी ।

पथिकजी जीवण रै सघसाँ री नदी मे ऊडो डुबको लगा'र कविता री रतन बाढयो है । दुनियादारी रा घघां मे रहता सका कविता करणिया घणा मिल, पण कविता री भस्ती मे दुनियादारी न छिटकावणवाळा मिनल बिरळा ही लाधै । पथिकजी री 'गिणती दूजी भांत रा लोगा मे ही है । पथिकजी री कविता जीवण रा कठोर सत्या री धरती पर घणो दुख दरद भेल'र निपजायाडी खेती री ज्यू है । दुनिया जिण ने व्यवहारिकता री नाव देवै उणनै हो आदमाँ रा 'गायक कायरता कह'र बखारै । इण कसौटी पर पथिकजी री कवि व्यावहारिकता सू षोरो ही है । इण अभाव रा दुख भेनणा पथिकजी री राजीना री काम है ।

सूळ रूप मे पथिकजी हिंदी रा कवि है । पण राजस्थानी मे व जो कुछ लिख्या है उण सू बारी भावुकता अर कारीगरी री बेरो पटै । साहित्यिक मचा पर वारा एक दा सीत् तो घणा लोकप्रिय भी हुया है । इण वाता सू प्रभावित हो'र ही इण सग्रह मे पथिकजी रा गीत दिया है ।



कीलियो

कुक्कू-कू कू करं किलगडो, डाफर चाले रे
ची ची ची चीं करे चिडकल्या, पत्ता हाले रे
आयो रे, आयो रे, आयो रे, कीलिया ल्यायो रे

भर्यो वारियो ल्याव, चाठ सूकी गरणाव रे
खेळी खाली देख, डागरा मुड-मुड जाव रे
आयो रे, आयो रे, आयो रे, कीलिया ल्यायो रे

घडा पड्या अणगिणत, न्वडी परिहार्या जोवं रे
घर मे वैठ्या टावर-टोळी, तिरसा रोवं रे
आयो रे, आयो रे, आयो रे, कीलिया ल्यायो रे

विवं दूध रे मोन, काळ पाणी रे पडग्यो रे
तू सारं तो सार कीलिया, वारज अणग्यो रे
आयो रे, आयो रे, आयो रे, कीलिया ल्यायो रे



मत घबराई रे

मोत्या मू घो मिनख जमारो
धरती थारी, आभो थारो
छोड चाकरी सुख री
दुख रो साथ निभाई रे
लाय पडै, लू चालै करसा, मत घबराई रे

भूखा सू भगवान न बोलै
पाप धरम रो भरम न खोलै
मिनखपणै रो धरम
'मिनख सै भाई भाई रे'
लाय पडै, लू चालै करसा, मत घबराई रे

माटी री ममता दुखियारी
मुरभाई मन री फुलवारी
कपट कमावै धन रा लोभी
करम कसाई रे
धोरा धूजै, पथ न सूझै, आधी आई रे
लाय पडै, लू चालै करसा, मत घबराई रे



मिनखपणो वेमौत मरे ।

मिनखपणो वेमौत मरै रे, डागर लोई पी पसरं
टावर रुळता फिरै, जवानी जोवन वेचै पेट भरै

सूनी सरवर पाळ, पखेरू डाळ छोड परदेस उडचा
अळगोजो अणजाण गीत सू, गाव छोड गायक निक्ळ्या
भोळा-ढाळा लोग मजूरी करता-करता भुल मरै
टावर रुळता फिरै, जवानी जोवन वेचै पेट भरै

ममता रो मन आज उणमणो, आस गई विमवास गयो
सास-सास रो मोल चुकावण मे सगळो जीवण निक्ळयो
तटी अधवणी छान बिलखतै आगणियै सू जान करै
टावर रुळता फिरै, जवानी जोवन वेचै पेट भरै

वेघरवार वटाऊटा न गळी-गळी वतळावै है
घाण विगडग्यो वरती माथै हाथ हाथ नै खावै है
खडी अवेली काग उडावै, कद गोरी रो काज सरै
टावर रुळता फिरै, जवानी जोवन वेच पेट भरै



चौमासो

घूमर घालै आज मोरिया मन विलमावै रे
घरती गीत सुणावै, आभो रस वरसावै रे

ताल-नळाया भरी, हरी माटी री काया रे
गोरी रा साजन परदेसा सू घर आया रे
सज सोळै सिणगार सुहागण सेज सजावै रे
घरती गीत सुणावै, आभो रस वरसावै रे

टावर-टोळी कुटम-कवीलो, लोग-लुगाई रे
रळ-मिळ करै निनाण, करै नखरा पुरवाई रे
पग-पग पर करसा री टोळी तेजो गावै रे
घरती गीत सुणावै, आभो रस वरसावै रे

छिन-छिन वीत्यो जाय, बावळा, देरी मत कर रे
हाथ त्रीजियो, हळ काधै घर, घोरा पर घर रे
खेत खड्या मुसकावै, हेलो मार बुलावै रे
घरती गीत सुणावै, आभो रस वरसावै रे



चडीदान सादू

जनम स्थान हिलोडी (नागौर राजस्थान)
जनम तिथि आसोज सुदी १३ सवत १६८० वि
पिताजी रा नाव श्री मघदानजी सादू

चडीदानजी री साहित घरोहड स्कूल कालेजा री पढाई रै पाण नहीं, बापीती रै पाण वणी है । चारण कुळ म जनम लेवण सू छोटी उमर म ही आपनै काव्य री साख लागी । बडेरा रा अनेक छंद कठस्थ कर'र आप खुद री रचनावा भी सुरू करदी अर घीरै धीर डिगल काव्य मे आपरी गति चाखी होगी । बगल हिंदी मडळ री तरफ मू ईसरदानजी आसिया रै साथै पिलाणी मे रह'र आप राजस्थानी रै पुराण साहित र संग्रह रो सराहण जोग काम करघो ।

सूरातन रा कु डळिया भरपरी सतक रो अनुवाद कहमुकरणी सतक अर पिलाणी परिचय नाव मू राजस्थानी पद्य ग्रथ आपरा बणायोडा है । आप राजस्थानी भासा रो एक व्याकरण भी लिग्या है । राज मामा अर राजस्थानी ग और भी कई ग्रथ आप लिख्या है, पण जठ ताई आपर कवि रूप रा सबध ह आपरी रचनावा पर डिगळ काव्य रा प्रभाव चौड दीख । आप उण बहोत घोडा लोगा म मू है जिका पुराण डिगळ प्रथा अर गीता रै मम नै भली भात समझ सकै अर समझा सकै । नय छ'ग र साथ साथै आप डिगळ गीत कु डळिया, दूहा आदि पुराणा छदा म परंपरा मुजब काव्य रचना भी करै ।



चानणी रात

चादा पिउ रँ साथ खेलती रात चानणी आई

धीमै-धीमै पगल्या धरती ओढे ऊजळ साडी
भिंगुर रव पायळ भरणकाती वण सोभा री वाडी
खिलवत हार तोड गळ तारा मोती नभ छिट्काई । चादा०

देह काति दीपाती वसुधा ऊजळ रग वरसायो
मोहक रूप अनूपम सारी जगती रँ मन भायो
पखवाडा सू रुठी रमणी नीठ मनाई आई । चादा०

खिण-खिण नाजाळू बदळी रो भीणो घू घट कढती
दिन-दिन दूगो रूप सवायो जोवन रँ वय चढती
मधरँ साम ममीर सुगधित सू धरती महकाई । चादा०

सीतळ हूई सजोगण सुदर कुमदणिया हरखाई
दाहक लगी विजोगणिया मुख कवळ दिया मुरभाई
पण तोही इण नव दम्पति नै जीयाजूरण सर्गई । चादा०



रूडो राजस्थान

(डिगळ गीत)

रणभीनी रेत सौण रगराती, ऊ चा घण टीवा अदभूत
करडा अनम रूस वाटाळा, मानव आटाळा मजवूत

वाका गढ भुरजा वाकोडी, दीप गिर वाका छिन्न देत
देयी जठे सरायी दुनिया, खागा वाकोडी रण खेत

त्याग अनै वळिदान तणी कथ, जत मत मत द्विड छाप जडी
मूरत पर सूरत री महमा, पग-पग माये लिखी पडी

वीर भोम जणणी वीरारी, दवे न वाता गया दिना
अणी टिकणवाळो अदेसो, सूरु तणी समाध विना

तप जीहर भाळा तपियोडो, नामी कु दण ज्यू निक्ळक
सतिया वप धानी गुलाल सू, दीपे सारी देह दमक

मुहडा चाढ घणा सिर पुहपा, अखसत गोळा तणा अनूप
धूप देय धमगजर धुवा गे, वूज्यो के पणधारी भूप

साहस दुग्गा रे सीच्योडो, ऊचो थयो अमर री आन
पावू पातल र पणवाळो, उर मे भरियोडो अभिमान

भामा तणी देसभगती भळ, सागा दत वाळी सुगध
चूडा तणै त्याग सू चावो, आ ठावो रजथान अवध

जपू कितो जम, चहो जाणणो, हिय धारो डिगळ सू हेत
चारण साहित सू चहु कूटा, वीरत तणी फरकै वेत

△

राजस्थान रा पहाड़

कारण वस हेकै दिन कवि दरसन करियो
सिखराळा सोभा लख हिय रो दुख हरियो

कीरतडी गावण नू मनसा व्ही म्हारी
वाल्हा भाकरडा पर जाऊ वळिहारी

द्रढ रच्छा अरियण आघाता पुळ करणा
सकट मे सूरु रा मायक दुख हरणा

काधा भल तोपा भड गोळा कं वारी
आछा तन ओठा पर जाऊ वळिहारी

अखताया सुहडा रा साथी सुखदायक
लाठोडी विपदा मे लागे घण लायक

छाती पर छाया कर राट्या छत्रधारी
निहचळ नीवाळा पर जाऊ वळिहारी

पग-पग पर वीरा गी वाल्ही वळिवेदी
मडळ मानविया रँ उपर कर देदी

टोळा विण घडियोडी पूतळिया त्यारी
पावन पथराळा पर जाऊ वळिहारी

विरत्र वेलडिया जुत घाटा वाकोडा
लेता वीसामो नर हैवर वाकोडा

घावलिया अगा री करवाता कारी
आछा ओखघर पर जाऊ वळिहारी

सुहडा पग परसन सू पावण पडियोडा
बकचाळा रुधरा धुप वीमळ वणियोडा

धारण भल कीधा है या नं धूतारी
सोभाळा स्त्रिगा पग जाऊ वळिहारी

आरज कुळ ऊधारण विरभोडी वारा
खेल्या भड तो पर धुपि खागा खण

समरागण भुग्जाळा गरजा नू मारी
 वकट गिर वाल्हा पर जाऊ वळिहारी
 रळतळिया सिंघासण छटा आसेरा
 वासविया भूपत गढ गाढा निज धेरा
 पोताई ओठा मे वेळा विम्बडा री
 डूगर डीगोडा पर जाऊ वळिहारी
 ईसतडा रहिया भड इहडा आसडिया
 पडिया सिर पुहवी घड अरिया दळ अडिया
 सासो सत ओजू लग देवणिया त्यारी
 परवत प्राचीणा पर जाऊ वळिहारी
 पातल, चदरसी, भड दुग्गो विरदायक
 अम्मर जसवत सुत रँ सवट रा सायक
 साखीवर वातडिया ख्यातडिया मारी
 सरणाइ साधारा पर जाऊ वळिहारी
 कण-कण भड रहिराळा कु कुम सू अरचित
 रण-त्रफ रजपूता वीरता सू परिचित
 सुहडा निज सिर पुहपा अरध्या वँ वारी
 गाहिड गिरमाळा पर जाऊ वळिहारी
 अतुळीवळ हाथा सग लेखण वीधोडी
 पवरा पर सूरत री गाथा लिखियोडी
 थळथळ पर साची कथ कहियण सुहडा री
 ऊचा इतिहासा पर जाऊ वळिहारी
 भर-भर कर पीवतडी प्यालो रतवाळी
 नाचती या पर नित काळी मतवाळी
 नू जित रण डाका भड हाका विजया री
 वाका विडरूपा पर जाऊ वळिहारी
 असिधारा निरमळ जळ सापड तन सूर
 पाय, हरखाया चित मोखस पद पूरा
 नमिया नह रमिया जै गोदा मळ त्यारी
 तीरथ सिरताजा पर जाऊ वळिहारी

साची सुत्तरता राखण राणा री
 कीधी रखवाळो घण मूघा माणा री
 घाटी-घाटी मे रिपुसेना पच हारी
 डोडी डिंगराळा पर जाऊ वळिहारी
 जगमगती जौहर री भाळा धक्की छी
 सतिया रै सतव्रत री साची हद व्ही छी
 हसती हर-हर जपती कीधा तन छारी
 सत री सम्माध्या पर जाऊ वळिहारी
 केसरिया कीधा भड वनडा-सा वण कर
 उन्नागा खागा भुज दडा आरण कर
 होता कम धामाहर ठेल्या कै वारी
 भूधर वाळोडा पर जाऊ वळिहारी
 रहिया ढिंग रणरसिया त्यागी मन मोटा
 राखण निज अनमीपण आरज वर ओठा
 कातर डर बाहुडिया छाया लख ज्यारी
 सूरतन सिखरा पर जाऊ वळिहारी
 भाला री अणिया सू भाटा भिदियोडा
 गाढा वण सहिया घण सागा घम्मोडा
 अविचळ पख राखी रजथानी वीरा री
 आतम आधारा पर जाऊ वळिहारी
 जोवता प्राचीणी वाता समरावै
 रग-रग मे वीरत ग्त लहरा उफणावै
 आवै ऊमगा मन पूजन करवारी
 रजवट रा रक्खा पर जाऊ वळिहारी
 कायव मे केता वहु मन रा भावा नै
 आखू की ओपम्मा छिति रा छावा नै
 वयणा किम वरणू छवि नयणा नीहारी
 गिरवर गरिमाळा पर जाऊ वळिहारी



चद्रकुमार 'सुकुमार'

जनम तिथि ६ सितम्बर, सन १९३२ ई०
जनम स्थान जयपुर
पिताजी रा नाब श्री नाथूरामजी गढवाल

अध्यापक सुकुमारजी पाछला बई बरसा सू गीत लिखता आ रया है । आपरा गीता मे राजस्थान र गावा रा जीवण अर टावरणै म रमता थका खेल्योडा खेला रो भाव भरचो बरणन है । बाळपण सू जवानी म पग धरता उण खेला री याद किया हियो भर ल्याव अर किया उण म जीवन रो रगभीनो वायरो भुळ जावै यो नजारा सुकुमारजी र गीता म घणो फवतो है । मच पर गावणवाळा राजस्थानी कविया म भी आप किणी सू हेठा नी पडै ।



समंदर : जीवण

भरचो समंदर

गोपीचंदर

बोल म्हारी मछली कितरो पाणी

धीवड चढगी चू तरै जी वावा जी री पोळ
मीठी लागै चादणी री तारा माडी खोळ
बीराजी बुलावै भैणा किरत्या हूवी जाय
सात सहेल्या लागी ख्याला घूमर सूवी खाय
साथण माथै जितरो पाणी
कामण कावै जितरो पाणी
मरवण कडिया जितरो पाणी

गोरा नै पुजवावण लागी काकाजी रै चीरु
राई सी भौजाई मागै सावी माडै ढोक
हिवडो उमडै आखडल्या मे मायड धारै धीर
वापूजी रै काळजिए मे लागै तीखा तीर
माछळ आगै कितरो पाणी
माछळ सागै कितरो पाणी
खारो लागै कितरो पाणी

तीजा नै सिजारो पूग्यो सासरिया रै गाव
सावण भूलो पूछण लाग्यो पावणिया रो नाव
सिणगारचो जीवनियो त्यायो आरपा माडी रात
अवेरो टळग्यो उजळ्यायो सोना रो परभात
केळी जाधा जितरो पाणी
कचन पीड्या जितरो पाणी
थानै भावै जितरो पाणी

भरचो समंदर

गोपीचंदर

बोल म्हारी मछली कितरो पाणी



संदेसो

टणमण वाजै टोकरा जी गणमण गाडी जाय
कामणगारी, सौ सिणगारी, वैठी भोला खाय

वैल्या भाग, भालर भूमै, नौगर वाज्या जाय
पाछै उडती माटी हाळी, सदेसो पठवाय
कीज्यो वादळ सा वादीला घरा सावता आय
सासण्यै री नीम-निवोळी पीपळ न पुजवाय

वायर वाजै, नैणा लाज रत आगण गरणाय
कामणगारी, सौ मिणगारी, वैठी भोला खाय

नैणा मे सावणियो वसग्यो पलका वसग्यो नीर
हिवडै वसगी अगन हठीला अघरा वसगी पीर
व्योपारी सू रूप उधारो ले वैठी तकदीर
व्याज बढे, मुळवै पाडोसी, ट्याती लागे तीर

मेंदी राचै, काजळ आजै, मासा गम नी खाय
कामणगारी, सौ सिणगारी, वैठी भोला खाय

तपता वीतै तावडो जी गळता वीतै रात
सरवरियो सूरयो जी सूरयो, मुरभावै जळजात
हिचक्या सू भर आवै छाती सै दिन सारी रात
मोत्या री जागीर लुटावै नैणा री घरसात

कामण कापै, हिवडो हाफै, हिचकोळा लुळ जाय
कामणगारी, सौ सिणगारी, वैठी भोला खाय



आस

किण रा पथ लिखू नैण मे
किण री आस भरू सासा मे
आचळ छोड विछडग्या साथी
किण री माग भरू माथा मे

घरती रोदी विरखा वरसी
अगारा गिगनार सुळगग्यो
ठडी टीप चादणी ही पण
सेजा रो सिणगार भुळसग्यो

टूटचा तारा गीत कोइ नी
जीवण रो इव भीत कोइ नी
किण र खातर चोको माडू
किण नै रूप सजू कासा मे

सै गोदी रा फूल विखरग्या
इव कोयलडी कठै कूकसी
सै जीवण री साध विखरगी
परछाई री याद हूक सी

किण रो रूप भरू आचळ मे
किण री वाता मन वहलाऊ
किण रा गीत भरू रग-रग मे
किण री राग भरू वासा मे

पण जीवण चलतो ही जावै
ढळ-ढळ दिन ढळतो ही जावै
के जाणू किण गोधूळी मे
लगनबध्या प्रीतम मुड आवै

जद ही तो अँ सास विचारा
निक्ळ-निक्ळ पाछा मुड आवै
जद ही तो मँ काजळ सारू
लाज भरू भाडा फासा मे



गोरधनसिंह शेखावत

जनम-स्थान गुडो (भू भूणू)
जनम तिथि सन् १९४३ इ०
सिखा एम० ए० पी० एच० डी०

गोरधनसिंह जी राजस्थानी मे नइ कविता लिखणिया मे भ्रागली भगत रा है पग ठेठ राजस्थानी रगत रा गीत भी आप चोखा लिखै । नइ कविता रो ढाळ पर आपरी रचनावा रो एक पोयी किरकट' नाव सू छपी है ।

आप न ठेठ देसी लहज म बात कवण रो तजरवो है अर इण सू ही आप जो कुछ कवितावा म कैया है वो मीघो काळज दुवै । या दूसरी बात है क नइ कविता रो नकल करण रो चेस्टा म लोग आपरी जमी सू उवड जाव अर आपरी बात करण लाग जावै तो वारी बात कमती समझ म आप लाग जाव । गोरधनसिंह जी जठ जठ इण सू बच्या है बठै-बठै वारा कवि रूप घणा निखरचा अर उजागर हुयो है ।

आज काल आप लक्षमणगढ (सीकर) र तोदी कालेज म प्राध्यापक है ।



गांव

ओ गांव म्हारो है
घर-घर मे उग्याई भीत
अणखावण लाग्या
खेत, गुवाड अर पसरचोडा मैदान
ताक मे मेल्योडो
जूनो वाच धडल सू धरती पर पडग्यो
करजा सू लिप्योडा आगणा
सूला खेता मे फाडचोडी वही
अर न्याव रै नाव पर कुआ मे पडतो
चोथू चन्दू हलवाई
मिदर मे जूओ ! भगी नै मत छूओ
राजनीति सू सू त्योडो
बूढो गाव
ओ गाव म्हारो है
चोरी करै पचायत रो चपरासी
जेवा भरै सरपच
सिरकारी पीसा सू
अर लोगा रै सामी भूठी वात बणावै
मिदर रै पिछवाडै रोज पुजारी
भगण सू आख लडावै
मास्टर करै वात रोज घोराारी
टावरा सू
ओ गाव म्हारो है
फूट सू फूट्योडो ! नेता सू बिदक्योडो
अर ठाली भूली वाता सू भरघोडो ।



प्रीत

फागण री रात री
उणीदी चानणी सी
कु वारा होंठा री
अणवुभी
अछेहीं तिरस सा
गीत रै माय
हबोळा खावती
गळगळी पीड सी
रूपाळी देह माथै
जोवन री चढती पाण सी
डू गर रै साथै
छानै-छान
पसरीजतै गुलाबी उजास सी
बरफ सू ठरचोडी रात मे
निवायै परस सी
मन रै गळियारै मे
कबूल कर्योडा
सबदा री छेनी मीव माथ
सू प्योडै छिण सी



चंद्रसिंघ

जनम स्थान	बिरकाळी (नोहर-बीकानेर)
जनम तिथि	सावण सुदि पून्यू सवत १९६६ वि०
पिताजी रो नाव	श्री ठा० हरिसिंघजी मृगोत

'बादळी' रै कवि रै रूप मे कवर चंद्रसिंघ नै हर राजस्थानी प्रेमी जाणै । आज री राजस्थानी मे ग्रय रचना री मुरूआत करणै रो स्रेय कवर चंद्रसिंघ नै दियो जावै । राजस्थान री प्रकृति आपरी रचनावा रो मुख्य विषय है । 'बादळी' मे चौमासै री रूत रो घणो भावपूरणु वरणन है । अया ही 'लू' मे गरमी री रूत रो अर 'बसन्त' तथा डाफर' मे बसन्त अर सरदी री रितुआ रा चित्र है । आपरी अनेक रचनावा हाल अघूरी पडी है जिणा मे साभ, रागळी, वातडल्या बाड, अर रघुवस रा नाव गिणाण जोग है । 'बादळी' काव्य पर नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी सु 'रत्नाकार पुरस्कार' अर बलदेवदास पदक भी दिया गया । 'बादळी' री लोकप्रियता रो दूजा प्रमाण यो भी है के उण रा आज ताई पाच सस्करण निकळ चुक्या है । राजस्थानी साहित री दूजी कोई इसी पोधी देखण म नही आई जिकी इतणी लाक प्रिय हुई होवै ।

चंद्रसिंघ 'दूहै छद रा कारीगर माया जावै । आपरा अनेक दूहा न प्राचीन माहित रै भरौसै सपादका आपरा दूहा सग्रहा म भी छाप दिया । आज री राजस्थानी रो प्रोड अर ऊजळो रूप देखणो हुव तो चंद्रसिंघ रा काव्य अर बाता पडै । ठेठ राजस्थानी रग मे रम्पोडा कवर चंद्रसिंघ राजस्थानी रै नयै जाणरण रा करणघारा मे नू अेक है । 'वाळनै री कोर' अर 'दिलीप' नावा री पोथ्या मे आप गाया सप्तशती' अर 'रघुवस' रा अनुवाद रा अश छाप्या है । 'जफरनामा'रो अनुवाद भी आपरो करघोडो छप्यो है । 'बावसाद' मे गीत दूहा, वात वगैरा नाना भात री रचनावा है । □

गीत

सखी रो सपने मे मँग जगाई
चमकी, किभनी, धर-धर काफी
सैण देख सरमाई
पळ मे बाह पडी गळ माही
विरछ-पेल निपटाई
नैणा सण मँग मे नैणा
जोत मे जोत मिलाई
चतर सैण चाल्या जद चेती
मे भोळी भरमाई
सखी रो सपने मे सैण जगाई



बसत

सूरज मुलटो आवियो, आयो डाफर अन
धरा परण मन धार अब वैठयो पाट उमन
म्हारै आख्या देवता, लुटसी म्हारा लाल
जै म्हे माळी जाणती, सूक छुलाती खाल
चौनिजरा मेळो हुवै, जिण रो मन मे चोज
पैल विरण देख्या पडै, माळी थारी मोज
जगळ फूल उपतिया, खेले रळ-मिळ फाग
म्हे वागा रा वाजिया, माळी म्हारा भाग
माळी मन हरखै मती, म्हारी ठोड छडाय
वस डाळी सू टूटता, म्हे जास्या कुमळाय
आज वसत उडीक मे, आवै चोज अटूट
माळी मती उताउळो, आज लुटास्या लूट
आता सुण्यो वसन्त नै, चाल्यो मन मे चोळ
चमकै, किभकै, धरधरै, सपना थारी रोळ

‘वसत’ नाव रं अणल्लप्यं प्रकृति-काव्य सु

लू

काची कूपळ फूल-फळ फूटी सा वणाराय
वाडी भरी वसत री लूटी लूवा आय
भटभट आख्या देखता भड-भड पडिया फूल
भुर-भुर वेला सूकिया भुर-भुर गई समूळ
देख तपती ताव-सू मुरघर ब्रख रें भाण
हियो हिमाचळ उभळघो बह चाल्यो वरफाण
वाळपणें वैसाख मे तातो इसडो ताव
पूरें जोवन जेठ मे त्वा । किसो उपाव
पान खडक्क्या जावता कोमा छाळोछाळ
वै सागी मुघवायरा ऊभा जोडा पाळ
नारपणें रें ईसकें भल अग भूजो आय
मती लजाया मा - पणो लेया लाल वचाय
मा मरती रें हाचळा लाग रह्या वाखोट
लूवा । मती उघाडज्यो आता - जाता ओट
लूवा । थे लारो लियो छाणी सा धर आय
सीतळता सोधी सरण साठीण मे जाय
खारो पाणी कूवटा दिस - दिस वजड भोम
उजड्या सा वसिया जठें मिनखा - नै मत होम
जीव तिसाया जावता जोडा हुया अधीर
डाळ - डाळ हिवडो हुयो चाली चीरा - चीर
भर चौघड चालें धरें जठें तिसाया जीव
लाता - लाता नीवडें वरतें जळ ज्यू धीव
वाळपणें रमता थका आवें आखा - तीज
वाकी था - रें राज मे त्यूहारा री खीज
अळगा - अळगा गावडा करडा - करडा । कोस
लूवा रळक्या राहडा पथी । किरण नै दोस



बादली

जीवण नै सह तरसिया वजड भखड वाड ।
 परसे, भोळो वादळी । आयो आज असाड
 नही नदी-नाळा अठै नहि सरवर सरसाय
 एक आसरो वादळी । मरु सूकी मत जाय
 खो मत जीवण वादळी । डू गर-खोहा जाय
 मिलण पुकारै मुरधरा रम, रम, घोरा आय
 आयी घणी उडीकता मुरधर कोड करै
 पान-फूल सै सूकिया वाई भेट धरै ?
 आई आज उडीकता भडिया पान'र फूल
 सूकी डाळ्या तिरणकला मुरधर । वार समूळ
 सोनै सूरज उगियो दीठी वादळिया
 मुरधर लेवै वारणा भर-भर आखडिया
 छिन मे तावड तडतडै छिन मे ठडी लाह
 वादळिया भागी फिरै घात पवन गळ बाह
 घूम घटा चट ऊमटी छापी मुग्धर आय
 मऊ गया नै मोडिया मधरी गाज सुरणाय
 जळहर ऊचा आविया बोल रह्या जळकाग
 देण वघाई मेह री रह्या कहड्या भाग
 पडड-पडड वूदा पडै गडड-गडड घन गाज
 वडड-वडड वीजळ करै घडड-घडड धर आज
 चालै पवन अटावरी धिर-धिर वादळ आय
 फुर फटकारा फाफ-रा जळ-ही-जळ कर जाय

परनाळा	पारणी	पडे	नाळा	चळवळिया
पोखर - आस - पुरावणा	खाळा	खळखळिया		
सूई घारा	ओसर्यो	दूधा	वरण	अकास
रात-दिवस	लागै	भडी	सुरगै	सावण
मास				
तिरिया	मिरिया	तालडा	टावर	तडपडताह
भागै	तिसळै	खिलखिलै	छप-छप	पारणी
माह				
लागी	गावण	तीज-नै	रळ-मिळ	धीवडिया
गोगा	माडै	मोद	भर	टावर
				टीवडिया
आभै	तणियो	घनख	लख	टावर
				आपोआप
ब्यो	मामै-रो	डागडो	लागा	कर
				धिणयाप

□

तेजसिंह जोधा

जनम स्थान रणसीसर (नागौर)
जनम तिथि ७ जुलाई सन् १९५० ई०
सिखा एम० ए० (हिन्दी)

राजस्थानी मे नइ कविता री सहस्रात वरणिवा घोडाव कविवा म तेजसिंह रो नाव सिर है । आपरी पोथी 'ओळू री ओळथा' घणी चर्चा रो विसय घणी । इमानी (परम्परा रो अक) 'राजस्थानी एव' अर दीठ' नाव मू काव्य सक्ळना रो सपादन आप करघो जिगा म सपादरी रो ग्यान चौडे दीखै ।

नइ कविता न ठेठ देसी रग म ढाळण री मामरय रा घणी तेजसिंह री रचनावा है ता थोडी ही पण जा भी ह वामे वारी आपरी निजू दीठ है, घिसी पिटी वाता वानी । लाबी रचनावा री वजाय छोटी-छोटी रचनावा बेसी असरदार बापही है क्यू क वामे कोड सिलसिलो निभावण री जरूरत वानी अर कवि जा कुछ कहणो चाव उण पर निजर टिकाइ राखी है ।

आजकाल आप सादुलपुर (धूर) री मोहता कालेज मे हिन्दी पढावै ।



पीणो सांप

चेतो

चेतो कं थारी छाती माथे

कु डाळो घाल'र नासा सारं

फण साध्या वैठ्यो है पीणो साप

पीत्रं भासा, भरोसो अर सास

पोछडी, जद ओ

पू छ रो फटकारो देय'र जावैलो

तद थाने देस अर

आजादी गो अरथ समभ मे आवैलो

अफसोम के मोडो ह्य जावैलो

मोडो ह्य जावैलो



कठई की ह्वगो है

(एक लावी कविता रो सरू जीत रो घन)
ई गाव मे कठई की ह्वगो है
ह्वगो है

सागै ईया
कै जाणै चौमासै री भ्राडू दोपारी
गट्टै रै पीपळ सू नी
तळै पडघा वृठिया रै
डील मे सू निसरी
बड'र ऊडी-ऊडी
घासीराम निसरग्यो ...
ठाकरा नै सोच है
कोटडी रै मूडागै सू
जावतोडो वगत
उघाडै माथे निसरग्यो
साफो विसरग्यो
वीया जागवा न गाव रा गडकडा भी जाणै
कै दिनाथ्या दार पीय'र
पेन्सल आयोडो सुवेदार
क्यू वोलै वारी वोली
अर क्यू अर मिया
चोधरी जीभ माथ गुड फेर'र
मिनखा नै फेरै—
ठा' है मास्टर न
पण, पण वो क्यू राखै ठा
वी न ठा' राखवा नै द्जी वाता ई घणी
जीया-छोरा री बैना रा नाव काई
कु वारी कै परगणी
परणी तो स नरो कठै
घणी रै घघा काई
ई गाव मे कठई की ह्वगो है
साच्याई की ह्वगो है

त्रिलोक गोयल

जनम स्थान अजमेर

जनम तिथि २८ जनवरी सन १९३२ ई०

राजस्थान री घरती अर मिनख रा भात भात रा रूपा नै फूटरा गीता मे गूथ'र गावण वाळा कवि गोयलजी आज री राजस्थानी रा ऊगता कविया मे सू है । रितुआ, त्पूहार परिवार, लोकक्यावा खेत अर माटी रा अनेक गीत आप लिख्या है । आपरी रचनावा मे सब्दयोजना, छंद विधान अर गीतात्मकता री फूटरो मेळ मिलै । लोकसंस्कृति अर साहित रा परभाव आपरी रचनावा मे साफ भलकै । लोकजीवण रा घणा चित्र आप छदा मे जड'र मामन गल्या है । आपरा गीत मातभोम री निरमळ बह सू लजालव भरघोडा है ।



बसंत रो गीत

आगण ऊभो आज वसंत

धरती रो परदेसी कत

फूल्या फूल विद्याया पथ

के जाणै माटी मुळकै रे

माटी मुळकै रे माटी रा माटी कुदरत पुळकै रे

माटी मुळकै रे

कवळी-कवळी तीतर्या अँ रग-धिरगी डोलै

नाजुकची कळिया राधू घट भवर हठीला गोल

कोयल गाय वसती गीत

आयो आज मदन रो मीत

पाळी घणी पुराणी प्रीत

कै रम की गागर छळकै रे

गागर छळकै रे आ गाठगठीली होगी घुळक रे

माटी मुळकै रे

आगँ आगँ पतभड आयो सारी गैल बुहारी

लारै नारै फागण ल्यायो चम्पाई पिचकारी

कीही मनमानी हतराज

हठी राधा मनगी आज

वैरण लाजा मरगी लाज

के डचोढी व्हेगी लुळकै रे

डचोढी व्हेगी रे वायरियो भीणो पखी भलकै रे

माटी मुळकै रे

देख सहेल्या री वाडी मे लुक-द्विप तीयू खेलै

चोर वणा दीहो म मथ न देवर भाभी भेळ

हिवडै लेय हिलोळा प्यार
जाणै समदरिया मे ज्वार
लीन्ही अगडाई कचनार

के पाख पसरगी खुलकै रे
पाख पसरगी मिरगानैणी मत ना जावै टळकै रे
माटी मुळकै रे

पाच दिया री ज्योत मे प्रीतम री पाती वाचै
चवरी चढनी ढळतै स्याळू पीयरिया मे पाचै
आमा ऊपर फूटचा बोर
वोरा नीचै नाचै मोर
लुळ लुळ होड कर गणगोर

कै राती चूनड चिलकै रे
चूनड चिलकै रे हाथा मे राची हळदी भळक रे
माटी मुळकै रे

बाध मोठडो नीवू पीळो ओ आयो सैनाती
पाक्यो धान पधारो थारी घर-घर मे मिजमानी
कासा मे केसरिया भात
मीठी वाता करती रात
त्यायो सोना रो परभात

कै टप-टप मोती ढुळकै रे
मोती ढुळकै रे चदा री चादणी बहगी गळवै रे
माटी मुळकै रे
ओ हो माटी मुळकै रे माटी रा माटी कुदरत पुळकै रे
माटी मुळकै रे



धरती रो पग भारी

सोना रो सूरज मुळ्कै ओ धरती रो पग भारी
लुळ-लुळ बरसा करै आरतौ भर मोत्या री भारी
गीत चिडहल्या गावै रे

वन मे नाच मोर बळायण ढोल बजावै रे
बरसा करै निनाण फसल नै सीच पमीनो पाळी
चाल्यो पूछ मरोड बळद री बेरो पावा हाळी
डव-डव चडस डुवावै रे

स्याल टेर रामू चनणा रो लाव उठाव रे—गीत०
मक्की वाजर और जवा री लडा भूमती लूम
लूठा-लूठा मिट्टा सौधी माटी रा पग चूम
पासी उड-उड आव रे

दे हलकारा रुखा पर पीपा बुडकावै रे गीत०
गुड को खेरो तेल तिली को चूर सीचडो खावै
कर आचळ री ओट सुहागण दूध-पूत न प्यावै
गाय रभाती जावै रे

मायड पूत विछोवा जग मे कुण नै भावै रे—गीत०
छोरा-छोरी फूदी लेवै दे ताळी पर ताळी
सात समुंदर गोपीचंदर रमता कर रखाळी
टावर रोळ मचावै रे

घडे घरुदा पग पर वाळूडी थपकावै रे—गीत०
टुण मुण करती गाड्या जाव दूधा घोई राता
चाद बापडो लाजा मरग्यो, सुण-सुण भीठी वाता
कुण री ओळचू आवै रे

कुण रा आवै सपना दुण रा सुगन मनावै रे—गीत०
वाधी वानरवाळ वायरो रिमभोळा भूमकावै
सूधा करै किलोळ कमेड्या आगण चौक पुरावै
म्हारो मन हरखावै रे

रामदेव तेजाजी सबकै आडा आव रे
रे

वन मे नाच मोर
आगण नाच मोर

बिणजारा रो गीत

बढता जाओ बिणजारा

भरता जाओ हुकारा

मजिल तक ओ गीत भोर तक चलसी कथा कहाणी रे
आ नानी री बात आज तक कोनी हुई पुराणी रे

एक पुराणी पीपळी पर चिडा-चिडी रो वास जी
तिरणको-तिरणो नीड बणायो माळें सूखी घास जी

दिन-दिन दूणो प्यार जी

चीचा जाया चार जी

चाऊ-म्याऊ कुनबो करतो आगण रमै जवानी रे
आ नानी री बात आज तक कोनी हुई पुराणी रे

चिडकी ल्यावै चावळिया चिडकोली ल्यावै दाळ जी
खद-बद सोभै खीचटी आ कुटुम-नवीला पाळ जी

कटती जावै रात रे

बढती जावै बात रे

फू कै फडफू चूलहो चिडकी, चिडको ल्यावै पाणी रे
आ नानी री बात आज तक कोनी हुई पुराणी रे

घाल चाच मे चाच चुगायो चुगो जिणा नै पाळ्या रे
नुगरा निकळ्या ब्याह चीचा जद सू होस सभाळ्या रे

अब तो उगग्या पाख रे

ऊची चढगी आख रे

चीचा उडग्या चिडा-चिडी री दुनिया हुई विराणी रे
आ नानी री बात आज तक कोनी हुई पुराणी रे

त्रिलोक शर्मा

जनम स्थान डूंगरगढ (बीकानेर)

जनम तिथि सवत १९९० वि०

पिताजी रो नाव श्री थानीराम जी

साम्यवाद री राजनीतिक विचारधारा नयै जुग रा अगता लखका म अनेक नै प्रभावित करचा । पूरब रै अगतै सूरज री लाली रै मिस अ लोग लाल क्राति रा गीत गाया । पण साहित्य म इणा रै उण गीता रो सत्कार घणो हुया जिका मे राजस्थान रै सामती राज रा सतायाडा करसा रै दुख दरद रै साथै उणा न जगावण रा भाव भरचोडा हा । देस री सुतत्रता रै बाद उण गीता रो कोई मोल नहीं रहण सू वै ज्यू आया बिया ही गया भी ।

त्रिलोक शर्मा रो नाव भी उण गीत लेखका मे मिण्यो जावै । पण मूळ रूप मे गावा र जीवन म रम्योडा रहण सू त्रिलोकजी री रचनावा म करसा अर मजदूर रै दुख दरद अर समस्यावा री चोखी भावी मिल । या और भी खुसी री बात है के आपरी कविता मे भरचोडा उदबोधन रा सुर हिम्मत अर जोस बधाणवाळा है जिकै सू आपरा साहित्य प्राणवान वण सन्धो है ।



भुर-भुर मरग्या चिडा-चिडकली घाटा रा व्यापार जी
कुण राजा कुण राणी उजडया सोना रा ससार जी

वधी बुहारी लाग्य की

विलख्या पाछे राग्य की

चीडीमार चीचा नै फास्या चानै बंद मनमानी रे
आ नानी री वात आज तक कोनी हुई पुराणी रे
धोळा केस पोपलो मूडो डगमग हालै नाड जी
कम्मर हुई क्राणी नाती पोता रा ले लाड जी

सुणो टचरा - टचरी

दुनिवा देखी डाकरी

चिडा चिडी री आड मिनस री साची वात बसाणी रे
आ नानी री वात आज तक कानी हुई पुराणी रे

बढता जाओ वियाजाग

भरता जाओ हूकारा

मजिल तक ओ गीत भोर तक चलसी कथा कहाणी रे
कोनी वात पुराणी रे आ नानी रही कहाणी रे



त्रिलोक शर्मा

जनम स्थान	डूंगरगढ (बीकानेर)
जनम तिथि	संवत् १९९० वि०
पिताजी रो नाव	श्री शानीराम जी

साम्यवाद रो राजनीतिक बिचारधारा नवै जुग रा ऊगता लखका मे अनक नै प्रभावित करचा । पूरव रै उगतै सूरज री लाली रै मिस अँ लाग ताल क्राति रा गीत गाया । पण साहित मे इणा रै उण गीता रो सत्कार घणो हुयो जिका मे राजस्थान रै सामती राज रा सत्तायाडा करसा रै दुख दरद रै साथै उणा न जगावण रा भाव भरचोडा हा । देस री सुतत्रता रै बाद उण गीता रो कोई माल नही रहण सू वै ज्यू आया बिया ही गया भी ।

त्रिलोक शर्मा रो नाव भी उण गीत लेखका मे गिण्यो जावै । पण मूळ रूप मे गावा र जीवन म रम्योडा रहण सू त्रिलोकजी री रचनावा मे करसा अर मजदूरग र दुख दरद अर समस्यावा री घोखी भाकी मिल । या और भी खुमी री बात है के आपरी कविता मे भरचोडा उद्वोधन रा सुर हिम्मत अर जोस बधाणवाळा है जिकै सू आपरो साहित प्राणवान वण सनयो है ।



हिलमिल चालो

हिलमिल चालो रे भाई
चालै चाल कुचाल जमानो
पग-पग ऊपर साई
हिलमिल चालो रे भाई

भूठा सपना मे मत भटको
सीधी गैल पकडल्यो
प्रेम प्रीत री बात मिलै तो
मन री गाठ जकडल्यो

आपा रो दुख दरद सरीखो
एक पथ रा राही
रळमिळ चाल्या सगळा रै वस
दूर हुवै कठिनाई
हिलमिल चालो रे भाई

रात अघेरी आधी चालै
मारग मे ना सूभै
कायर पाछो पग दे भागै
हिम्मत हाळो जूभै

अणजारो मारग मे चालै
अलबेली तरगाई
दुख-दरदा री रात कटैली
जागैली अरणाई
हिलमिल चालो रे भाई

ऊचै धोरे वजै वासरी
घरती अगडासी रे
कमतारिया किरसाण जमी मे
अन-धन निषजासी रे

आज अघेरै री छाती पर
सोनकिरण मुसकाई
कोढ-पाप मिटसी घरती रो
सुख री सास समाई
हिलमिल चालो रे भाई

बांध पगां में घूघरा

चाय पगा मे घूघरा
गाव आज थमाळ रे
मिणतमजूरी रा वेटा
करसी आज कमाल रे

फागण मास रगीलो आयो
नाचै लोग लुगाई रे
लाल किरण सिणगारै धरती
पून चलै सरमाई रे
च्यारू कूटा बजै वासरी
घर-घर उडै गुलाल रे
वाघ पगा मे घूघरा

कमतारिये घर टावर जाम्यो
वाटै भेली गुड नी रे
फळसै आगे ढोल वजावै
ठाकर लायो कुडकी रे
गढ-शेटा रो मालफ ठाफर
क्यू करसो कगाल र
वाघ पगा मे घूघरा

खून पसीनो सीच जमी मे
करसो अन-भन निपजावै
वरमा धाडी पाळ वाघ दी

कामचोर घर लै जावै
 नुओ जमानो दै ललवारो
 करसा होस सभाळ रे
 वाध पगा मे घूघरा

ऊची मेडी गोगैजी री
 भेळा सै किरसाण जी
 जुलमखोर स्यू आज लडैला
 मन मे है अभिमान जी
 मुखिया वैठधा मूछ पलारै
 धजा फरुक्कै लाल रे
 वाध पगा मे घूघरा

घर-घर जोस जवानी जागी
 दुख-दाळद सो भागै रे
 मा घरती री लाज राखलो
 सै मिल चालो सागै रे
 खेता मे सोनो ऊगैलो
 कदे न पडसी काल रे
 वाध पगा मे घूघरा

△

नाथूसिंघ महियारिया

निवास उदयपुर
उमर सत्तर सू ऊपर

नाथूसिंघजी डिगळ री परपरा रा उण गिलती जोग कविता म सू हे जिणा गी लेगलिया म मनोवळ हे । आपनी कविता रा भाव पुराणा होता हुया भी उणा मे कुछ डमी विसेसता ही जिक्की मू कविता फूटरी लाग । 'बीर सतसई' नाउ मू आपरी एक पोथी छपी ही जिण री तारोफ डिगळ काव्य मे मरघा राकणवाळा सगळा ही लोग करी ही । नाथूसिंघजी रा काव्य घर ब्याहार दोनू वाता चारण परपरा रा प्रतीक हा । दसभगती री बखत भोपती रचनावा नी आप करी । हिमाळ री सीव पर चीणी मतरै री चेतावणी रा दूहा भी आप लिखा हा ।



वीर सतसई

जो करसी जिण री हुसी आसी विन नूतीह
 आ नह किण रा वाप री भगती रजपूतीह
 रण कर-कर रज-रज रगँ रवि ढक् रज हूत
 रज जेती वर ना दियै रज-रज ह्वै रजपूत
 भड वाका वाकी खगा वाका हाथ कवाण
 तिहु वाका आगळ रहै जग सूओे सब जाण
 देख सखी मोटा गढा गोळा री भडियाह
 कोय न बावँ काकरी भड री भू पडियाह
 सुत मरियो हित देस रँ हररयो वन्धु-समाज
 मा नह हरखी जनम दे जितरी हरखी आज
 सुत आयो घावा सहित अजस थायो माय
 पय पायो घोळै वरण रातो वरण दिखाय
 घव आया घावा वहै पावा रकत अतोल
 सग बळिया ही चूकसी पग मडणा रो मोल
 सग बळ जावँ नारिया नर मर जावँ वट्ट
 घर बाळक सूना रमै उण घर मे रजवट्ट
 वावल ! दीज्यो डीकरी मिळिया ओहो मेळ
 खग मू घा जिण देस मे नित मू घा नारेळ
 सौ गुण वारू देखजे बेटी रा गुण दोय
 परणता पाछी रही बळवा आगँ होय
 चद उजाळ हेक पख बीजै पख अधियार
 वळि दुहु पख उजाळिया चदमुखी बळिहार
 पिव वैमरिया पट क्रिया में वैसरिया चीर
 नाहक लायो चूनडी बळती वेळा, वीर !
 पडियो जोडै वाप रँ पाग कसूमल सेत
 वेटो घर आयो नही धोळी वावण हेत
 खग तो अरिया खोस नी पिव घर आया भाज
 जिण खूटी खग टागता उण पर टागो लाज

चीण

नर चीणी आवँ किसा
सुए नेहरू राजन्न
भारत मे रखणो नही
चीणी रो वरतन्न
थ भारत रा थभ हो
नेहरू राजेन्द्र दोय
बोळायो लागो मती
चीणी मीठी होय
दूजा तीजा पाए दे
आ भोठी वद होय
सीमा काटे हिद री
चीणी तीखी जोय
अतरा दिन खाली पडी
सीव रही अब खोस
दूजा तीजा भर दियो
चीणी माहै जोस
आ घालै हिद ऊपर
इए पर घालो घात
किण किण बीखर जावसी
चीणी काची घात
ओ विख सू वणियो थको
विख सू भरियो मन्न
मू डे नही लगावणो
चीणी रो वरतन्न
△

नानूराम सस्कृती

जनम स्थान वाळू (बीकानेर)

जनम सवत १९७४ वि०

नानूरामजी पद्य अर गद्य दोना रा लेखक है । पद्य री कळायण', 'दस देव', समय वायरो, अर 'बटोही' नाव री पोथिया तथा गद्य म 'हायी' नाव री पोथी छप्पोडी है । गाव म जनम्या अर गाव म ही सरकारी पाठसाळा मे टावर भणावण रो काम कर हा । गाव र जीवन रा आपरो अनुभव घणो ऊडा है जिक री भलक आपरी रचनावा म ठोड ठोड पर मिल । राजस्थानी जण जीवन म रम्याडा ठेठ राजस्थानी सत्ता री जिकी छत्ता नानूराम जी री रचनावा मे मिल वा कम देखण मे आवै । कळायण' नाव र आपर काव्य म चौमास रा अनेक चित्राम घणा सोवणा वण पडघा है । आपरी भाना री अणमडता आपर ग्रामीण विसया सू मेळ खाती अर फवती दीख । लोक मे रमना ठेठ सवदा न बिना किणी सस्कार र ज्यू रा त्यू राजस्थानी साहित न भेट करण रो जस नानूरामजी नै दिया जासी । राजस्थानी लोक साहित्य अर छप्पय सतमई' नाव रा तो मोटा ग्रथा र अलावा कई पुटकर सग्र भी आप और छाप्या है ।



दिवलँ री जोत

जुग बीत गयो रपाता बदळी नू बोडा पाना उघड रया
 आजादी री खेती पाकी लू भरिया दूळभतूळ गया
 सुख गगण धरा बादळ ल्याया वोजा तीजा रो चानणियो
 सरवर स्वागत मे हज्राहोळ पणधर परवत मत मानणियो
 पीढ्या सू लुक्या पड्या रँता पण आज अगाडी आणो है
 दिवळँ री उजळी जोत अवं अघारो दूर भगाणो है
 सँ रीत रिवाजा गळ सडगो गँलो गुणनीत नवो लेस्या
 विसवास घरम धोरा घसक्यो परतव्व रो पाड जमा देस्या
 वँ गई पुराणी चाल-डाल रूडी सी रगत आई है
 मँ सोनैला कडखा बीत्या सीधी सुख राग सुवाई है
 पाखडी घर मे सूतोडो मोडो हर मिनव्व जगाणा है
 दिवळँ री उजळी जोत अवं अघारो दूर भगाणो है
 सासन रा सिट्टा पाक रया है मौज मतौरा री डळिया
 दानव सँ देव समान हुया ऊभा है हाळी भोग लिया
 पू जी हाळा पायव्व वणग्या मू जी दातार हुया सारा
 आ लोकराज री लीला है मन समता धर सुरसरि धारा
 धरणी आवास हम हरव्व मिनखापण माण वधाणो है
 दिवळँ री उजळी जोत अवं अघारो दूर भगाणा है
 मिनखा ग मन कूता दाई मँ प्रेम वासना सू पूरा
 बोदोडँ बैर विरोधा रा डाचा धाड्या वदळ्या घूरा
 रातडली नीद अघारै मे जागतडी भाण जोत भरणी
 इण काती वदी अमावस नँ आसोज सरद पून्हु करणी
 माटी रँ दिनँ तेल दियो मिनखा मन मेळ भराणो है
 दिवळँ री उजळी जोत अवं अघारा दूर भगाणा है



वखत रो बादल

वखत रो वादळ
 घूरा - सूरा, तरा - कुकरा
 निरमळ नीर नुहावैलो ही—वखत०
 भगी और चमारा-चूडा
 घर-घर हौज भरावैलो ही—वखत०
 वामण - वाण्या - रजपूता रा
 तिसिया कठ सुखावैलो ही—वखत०
 अक वरोवर वरसैलो ही
 मोटी टोकी घोरा धसकै
 पाळा-नाळा वाधैलो ही—वखत०
 जूनी जुगत डुवावैलो ही
 नू वा खेडा, सदन सुखा रा
 नू वो जगत बसावैलो ही वखत०
 सून्य सस्टि सू वारें आकर
 सूर उगाळी चमकैलो ही—वखत०
 सूखी धरती सीचैलो ही
 तीसी-भूखी, धुखती-सुकती
 धरती नै हरियावैला ही—वखत०
 मजदूरा रो पूरो मरण रखावैलो ही
 सटूका तीजोर्या माहे
 छल-छल नीर भरावैलो ही—वखत०
 भेद-भाव न गाळैलो ही
 अक वरोवर हुळसिन मन सू
 लाक लहर समावलो ही—वखत०
 वरसाळें रुत आवैलो ही



नारायणसिंघ भाटी

जनम स्थान मालू गा (जोधपुर)
 उमर वरस ४६ रै नेडी
 पिताजी रो नाव श्री कानसिंघजी भाटी

साक', 'मिधदूत' (अनुवाद) अर 'दुर्गादास' रा लेखक अर 'परपरा' रा सपादक रै रूप मे डॉ नारायणसिंघ भाटी आसा राजस्थानी प्रेमिया रा हिया मे समायोडा है। आज रै राजस्थानी काव्य न सीधा सादा भावा अर लोकीता री चालू सब्दावली सू निकाळ'र कल्पना रै आसमान म सजीला सदा री पाखा पर बिठा'र अलौकिक पून रा भिलोरा खुबावण बाळा पैलडा कवि नारायणसिंघ ही है। आपरी कविता मे डिगळ रै प्राणवान साहित र मामिक अध्ययन री गहरी छाप है। कठै कठै डिगळ रा ठेठ सदा रै प्रयोग सू कविता मे पुराणैपण री भलक जहर आव पण आज र राजस्थानी कवि न साहित अर लोक री परपरा रै ग्यान री घणी जरूरत है, या बात आपरी रचनावा सू प्रकट हो जावै। 'दुर्गादास' म आप जिक अतुकात काव्य री रचना करी है वो भावा म एकदम नयो अर भासा म घणो गरबीलो है। 'बळप', 'जीवणधन', 'ओळू' परमवीर' अर 'भीरा' नाव री काव्य पोथिया र अलावा डिगळ साहित्य नाव रे सोध ग्रय अर 'परपरा र जरिये छप्पोडा अनेक सपादित ग्रय भो आप प्रकासित करया है।



विरह

ओ रे प्रखर प्रीत रा भूलणा
या भूलिया जोवन मद ऊभळै
अभाव री असली पीड
परखण रा छिण अणमणा
उर पलडा ऊतरै

था सो वोभाळ न हरगिर आवखो
था सो खरो न वासग जैर
पल पल कळप कलपना रो

सास उसासा—

आकळ प्राण आभासै
रे हेत रतन परखणिया हेम हेडाऊ

आज तो—

थारी वाळद रा रुण-भुण रव
रग रग रळतळै



पासाण सुंदरी

थू कुण ऊभी
 हे सयाणी सूरत
 पासाण नूरत
 नगन देह
 भगन गेह
 अतीत री कळा द्रस्टि तळं
 जोवें केई जुग सू
 भाव भगिमा भरिया
 थारा अग अग
 भलती जोडी रा
 प्राण पिघा री वाट
 हे प्रीतपनी परणेतण पूतळी
 केई नैण निरख-निरख
 निक्ळिया होसी
 थारै गेह वार
 पण हू वतळाऊ
 अबोली बोल !
 कण थने मिलण वचन दे'र
 वचन हारियो
 जिएारो—
 एव पग ऊभी
 एकटक
 थू पय निहारै
 हे ओ छू उळभी
 सवोचण सु दरी
 इण ऊचै पयोघरा
 ऊ डी धीरज धरण वळा
 क्रिया सू सीखी
 हे वळाजायी कामणी
 म्हे तो गीत सुण्यो
 काव्य पढयो
 आख देरयो—
 केईक भुरती विरहणिया रा
 बंरी विरह ताप

लाखीणा तन खीण किया
 पण थू तो
 जुग वीत्या ही
 जोबन भदमाती
 अर अजे लग गमकै
 निरत रत कामरी कामण धुनी
 थारै अग अग री
 मिजाज भरी भगेजण मरोड मे
 हे उफणातै जोवन री
 पासाण गोरडी
 थळ जायी
 विरह ताप भुळसी
 सकळ गजगमण गोरिया रा
 तरळ नैण मोती
 किण किरतार कारीगर रै
 प्रिया रूप साधना साचै
 आय सागळिया
 जिण खातीलै
 अमर खात कर
 थने सिरजी सवारी—
 उरज पीण
 कठी खीण
 वसन हीण
 वचन बध अचचळ सु दरी
 विरह समद तळवळती
 चिर प्रीत अगनरी—
 अखड जोत
 काळ हथेळी विच
 था आगळ अस्ट पौर जगै
 तिण सू पडियै काजळ रा वू पला
 किण चतर नार चोरिया
 हे सयनहीण
 पथ लीण
 पासाण सुदरी Δ

नन्दकिशोर पारीक

जनम स्थान । जयपुर

जनम तिथि १ अगस्त सन १९२६ ई०

पिताजी रो नाव श्री मिलीलालजी

बिचारा सू ठेठ भाडसाही पारीकजी बानून रा ग्रेजुएट अर समरथ पत्रकार है । देस रा मानीता अग्रेजी अर हिंदी के पत्रा म आप प्राय लिबता रैव । राज रै सावजनिक सम्पक विभाग में आप इणी काम रा अफसर है । सुभाव सू सरम अर भावुक होण रै कारण काव्य रचना मे आपरी गति होई । भामा र ठेठ मन्त्रा री अर राजस्थानी जीवण रै मूळ भावा री आपरी पकड चोखी है जिक सू प्रवृत्ति अर सिण गार रा मोवणा गीत आप लिखै । आज तो कवि सू पला आप पत्रकार है पण काव्य रचना कानी आपरी रचि जे पनप सकै ता आप राजस्थानी साहित न फूटरा अर रसीला गीत घणा द सक ।



मूमल

जुगा री जोत रूप री रास
 मिनख रै सपना रो मिएगार
 भुरै है रग री महफिल वीच
 माडेची मूमल थारै लार
 जुगा रो घरती है रैवास
 जिनए मे रूप रग नै राग
 आपरै मभू जीवन उफाए
 चढता ऊतरिया दिन लाग
 पए कोई मूमल थारै रूप
 मिनख रै हिय धानियो हाथ
 मरग्या माएस करे बख्ताए
 अमर है थारी रग भर रात
 फूल्यो किए वाडी मे फूल
 हिये किए सजियो कण्ठे हार,
 भटकै भवरा आज अघीर
 राग नै सौरम रै मभदार
 राग री पारया लागी रूप
 उडी जद जुग रा अवर चीर
 करोडा कठा कियो रैवास
 अलेखा हिवडा री थू पीड
 जदे लग वन मे वासग नाग
 वाडिया चपो, दाडम, दाख
 गुळकती कवळी केळू-काव
 जका री भरै सूवटा साख
 जदे लग हिंगळू हाटा माय
 मिनख रै कठ हियो अर नैए
 तदे लग कर-कर मूमल कोड
 साईणी-भुरसी थारा सैए



नन्दकिशोर पारीक

जनम स्थान । जयपुर

जनम तिथि १ अगस्त सन १९२६ ई०

पिताजी रो नाव श्री मिस्रीलातजी

बिचारा सू ठेठ झाडसाही पारीकजी कानून रा ग्रेजुएट अर समरथ पत्रकार है । देस रा मानीता अग्रेजी अर हिंदी रै पना मे आप प्राय निवता रैव । राज रै सार्वजनिक सम्पक विभाग में आप इणी काम रा अफसर है । सुभाव सू सरस अर भावुक होणै रै कारण काव्य रचना मे आपरी गति होई । भामा रै ठेठ सव्दा री अर राजस्थानी जीवण रै मूळ भावा री आपरी पकड चोखी है जिक सू प्रकृति अर सिण-गार रा सोवणा गीत आप तिखै । आज तो कवि सू पला आप पत्रकार हे, पण का य रचना कानी आपरी रुचि जे पनप सक तो आप राजस्थानी साहित न फूटरा अर रसीला गीत बणा दे सक ।



रंगां री हत आई रै

सीयाळो नी नीख सुरगी स्त फुला गी आई रै
सौरभ सँ बोझल वायरियो, राता तारा छाई रै

सीयाळे चौमासँ वरसी
वरसी वरफ'क आग
कुम्हळाया म खेत
भुळमिया हरिया-हगिया वाग

ठडक नीचँ अगन भभकती फागण आय बुभाई रै
सौरभ सँ बोझल वायरियो, राता तारा छाई रै

रुचन भूमँ खेत खळा मे
वागा मोती नूम
जूमभूम गाती गोरडिया
घूमर खाती घूमँ

फुला सँ भवग री जाता मुण खळिया सरमाई रै
सौरभ सँ बोझल वायरियो, राता तारा छाई रै

लाबी राता चौवारै सावण री
वीती मोत री
रही गुलाबी ठड जगाणी
रात, प्रेम री, प्रीत री

चदा री सूरज रै साग होगी आज सगाई रै
सौरभ सँ बोझल वायरियो, राता तारा छाई रै

पीव मिलण री वेळा आई
नाचँ गावँ मन रो मार
होळी मगळ्या हुया चार दिन
ईसण ले चाल्यो गणगार

म्प जवानी, जन्म मरण री मारस जोड मिली रै
सौरभ सँ बोझल वायरियो, राता तारा छाई रै

रगा री हत आई रै



फागणियो आयो

जौर गवा मे वाली आई सोनो निपजै रेत
सरसू पीळी, चणा गुलावी, सरसावै स खेत
जमी पर पचरग फहरायो

नयी साख की अगवाणी मे फागणियो आयो

के म्हीनो मस्ती को आयो

पाएन हरती जाय पदमणी क्यारचा इमरत प्यावै
वाळ चलै ज्यू फागणियै को पल्लो उड उड जावै
लाज को समदर लहरायो

नयी साख की अगवाणी मे फागणियो आयो

के म्हीनो मस्ती को आयो

बौराया आमा मे भौरा नाचै, कोयल गावै
मदछकिया नै निरख मगेजण रीभै, आप रिभावै
सैण नै सैना समझायो

नयी साख की अगवाणी मे फागणियो आयो

के म्हीनो मस्ती को आयो

घडा-बडेरा छोरा साथै टेरै राग घमाळ
बूढ सुहागण भी हरखाई दे रसिया पर ताल
बूळ भी भोळी भर ल्यायो

नयी साख की अगवाणी मे फागणियो आयो

के म्हीनो मस्ती को आयो

राधा कानो खेल होळी धम-धम वाजै चग
उजळी होय उमगा मन की पिचनारी क रग
गुलाली वादळ घहरायो

नयी साख की अगवाणी मे फागणियो आयो

के म्हीनो मस्ती को आयो

वाग-वगीचा फूलां छाया, तारा छाई रात
जोवन छाया ढोला मरवण करै हेत की बात
प्रीत रा मेहलो बरसायो

नयी साख की अगवाणी मे फागणियो आयो

के म्हीनो मस्ती को आयो

नंद भारद्वाज

जनम स्थान भाडपुरी (बाडमेर)
जनम तिथि १ अगस्त १९४० ई०
सिखा एम० ए० (हिन्दी)

नदजी भी राजस्थानी मे आज री नई कविता री मर्यादा करलिया मे सू है । आपरी एक पोधी 'अधर पत्र' नाव सू छपी है । 'हरावळ' छापे री संपादकी करता बरान आप आजरी राजस्थानी र घणा नडा आया । आप वा घोडा लाग म सू है ज्याने राजस्थान र ठेठ जीवन री पीड न आम आदमी री बोली मे परगट कथ रा अभ्यास है । जीवन न देखणे री नदजी री दोठ भीवाद है जिफी हरक नद कविता मे मिले । पण आपर कवण रा डग सरवधा निजू धर निरवाळी है ।

आज काल नदजी आकासवाणी जोधपुर म काम कर ।



बधतो आंतरो

च्यारू मेर

ऊकळतो अणथाग ऊन्हाळो
सूळा-सी खुवती

आकरी किरणां
चौफेर रा लीरा-लीरा करती
लू

अमू जै नै अधगावळो करता
वतूळा रा गोट

सैर

गाव

अर ढाण्यां विच्चै
अकल उडती

धूड

—फेर काळ पडग्यो इण मुनव मे
खुलग्यो फेरू
फेमीना रो काम—
जमो नै आदमी अणखावणो लागे ।
चौंगिडदें पसरचा
अलेखू घोरा री धमघेर मे
गम्योडा गाव
म्हारें चेतें मे चक्कारा मारें
डवडवती आस्या मे
बळतें पाणी रा तिरवाळा,
गू गें ताडें मे तडभडती
आधें तावडें री तीठ
नागें चामडें-हाडा मे
धुभती आखरी सासां
चर्या—

पाणी रो परियागो सोधे

आ वळती—
आ लाय

—फेर काळ पडग्यो इण मुलक मे
गुलग्यो फेरू
फमीना रो काम—

तिरस अर पाणी रँ विच्चँ आतरो वधग्यो

हरमस
तिडकी मे घोरा माथै
धूजण लाग रेत
दीठ मे पसरँ
— रेगिस्तान
ऊजट मे
डाडँ डागर-जीव
जिनावर मरता माटी खाय
मिनख रँ हीयँ फूटँ

हेज
निस्कारा विच्च
इत्ती लावी जेज ?

अँ सिडता घाव—
अँ मादो लखाव

—फेर काळ पडग्यो इण मुलक मे
खुलग्यो फेरू
फमीना रो काम —

जीवण अर मिग्तू रो धोरी अधगँलो व्हेग्यो !
कदे-कदास
आधी रात रँ सरणाटँ
काळी जाळा रँ जगळ मे
कोइ घघूडो घूकँ
चररावँ कोचरी
अळगी

थिर विद्रोह

काचरै 'पेपरवेट' मे वन्द
किणी रग-पुरुष री भात
श्रेक पारदरसी कंद मे
वाट उडीकती जिदगानी ।
जिए न आजादी पाछला

चोखा-भू डा

सगळा वदळावा नै

फगत देखण रो इधकार

दूजा इधकारा माथे

दूजा रो इधकारी कसाव

टस सू मस हुवण जिसी

उण नै राखी नी ।

तौइ उणरो राखणो आ आस

कै जमान नै उयळवडै मे स्याव्

उण नै मुगती मिल जावैली

अर सासा रै डोरै

वा आसा रा किनका उडावैली,

आ जाणता थकाईक उण री आ वात फगत

आपरै अकलपरणै नै टाळण री

अर भरम नै साथे राखण री है ।

भरमणाई हुवो

पण हुयो कोई साथ

अर आज रै जुग मे

असभव की नी ।

इण दसा मे ई

होणी रै विधान नै नकारणो

अतस रै विद्रोह नै सिकारणो है ।

पारस अरोडा

जनम-स्थान अजमेर
जनम तिथि रभावघण सन् १९३७ ई०
सिखा दसवीं तारी

धरोडाजी रा एक कविता सभै 'भळ' नाव सून छप्यो है । नई कविता माडणिया राजस्थानी कविता म इसा बिरळा ई है जिका पारसजी की ज्यू जिदगी र दरद न, उणारा खारा ई खारा अनुभवा न अर डोगी समाज र छळ छत्रम अर भूठ पडयत्र न इतणा नेड सून दरया-परया है । जिदगी सून यो नेडास पारसजी की कवितावा की मरम है । अतरमुखी मुक्ताव रा घणी पारसजी कवितावा रा अनुवाद अर विदेशी साहित्य की कहाणिमा रा उलथा भी करघा है । प्रचार अर प्रकामण सून बेखी राखण र काण आज राजस्थानी लेखवा मे वा सोहरत नी ले सक्या जिण रा व हकदार है ।

आज काल आप यूनिवर्सिटी प्रेस जोधपुर म काम कर ।



थिर विद्रोह

काचरै 'पेपरवेट' मे वन्द
किणी रग-पुरुष री भात
श्रेक पारदरसी कैद मे
चाट उडीकती जिदगानी ।
जिए नै आजादी पाछला
चोम्वा-भू डा
सगळा वदळावा नै
फगत देखण रो इघकार
दूजा इघकारा माथै
दूजा रो इघकारी कसाव
टस सू मस हुवण जिसी
उण नै राखी नी ।
तौइ उणरो राखणो आ आस
कै जमाने रै उथळवडै मे स्यात्
उण नै मुगती मिल जावैली
अर सासा रै डोरै
वा आसा रा किनका उडावैली,
आ जाणता थकाईक उण री आ घात फगत
आपरै अकलपणै नै टाळण री
अर भरम नै साथे राखण री है ।
भरमणाई हुवो
पण हुयो कोई साथ
अर आज रै जुग मे
असभव की नी ।
इण दसा मे ई
होणी रै विधान नै नकारणो
अतस रै विद्रोह नै सिकारणो है ।



क्यूँ अर किणरै सारू ?

केई-केई वार

पिरथी री परकमा करणाळा

दोय पग

—वैसारया रै सारै क्यू ?

अनेकानेक

वजर आघात डोलणाळो

अक सीनो

—क्यू उण मे हिरद रो प्रतिरोपण ?

अघारै मे ई

मीला सफीट देखणाळी

दोय आरया

—क्यू धारी पाखाणी थिरता ?

आतता जुगा री

समस्यावा रो समाधान लियोडी

अक 'मीकेनाइज्ड' खोपडी

—क्यू हिसाव नी लगाय सकी

खुद री जिदगानी रो

क्यू अक रघुकुळ

ऊभो है भुक्वोडो

जगा-जगा सू टूट्योडो तिडक्वोडो ?

जमानो

नी जाएँ किण री सुततरता सारू

निरतर कर रयो है सग्राम ?

भरत व्यास

जनम स्यान् चुरू (बीकानेर)
जनम तिथि १७ दिसम्बर १९१७ ई०
पिताजी रो नाव श्री शिवदत्त रायजी व्यास

भरत व्यास मूळ रूप म मस रा कवि है। स्कूल कालेज रै बल्लत सू ले'र बबई री फिल्मी दुनिया रा मोटा गीतकार बणण ताई व्यासजी मच पर सदा वाहवाही पाई। राजस्थानी भासा अर राजस्थानी लोक धुना न फिल्मा ताई पुगाण रो सबरो भी व्यासजी र माथ बघणो चाहिज। आपरी बणायाडी रगोला राजस्थान' अर 'ढोला मारू' नाव रो फिल्मा मे राजस्थानी भासा रा प्रयाग पलटी वार करयो गया। व्यासजी लाक रचि रा पारखी है जिक सू आपरा बणायोडा नाटक सवाद अर गीत घणा लोकप्रिय हुवै। हिंदी म तो आपरा कई सक्ळन निक्ळचा है पण राजस्थानी म हाल कोइ सग्रह नी निकळयो। आपरी रचनावा मे ओज, मिठास अर भावुकता र साथ साथ हमी रो फबतो पुट भी रैव।

रजपूत

कदेक मुरघर देम हो, वळ, विद्या रेजाड
 भारत-भू रो सेवरो, मात भोम रो मोड
 कदेन म्हानं देख कर, जम मू लेता हूट
 वादळ करता आरती, देवळ करता कोट
 वाघ सरीमा सूरमा, गया जमी नै छोड
 अथ दुक्कड चुगता फिरं, टट भिटाता मोड
 देख दसा या आपणी, माणग होग्यो मंग
 उमका फाटं काळजो, टप-टप टपकं नग
 जोग गण प्रताप रा, टावरिया रो टोळ
 पाटघोडा है जूतिया, विगडघोडा है डोळ
 ठुनराई सिसकं पडी, आछो फक्यो टोळ
 गोलाई न भेळ कर, भना घालियो गोळ
 तरग्या सारा सूरमा, मरग्या चारण भाट
 बिल मे बहगी वीरता, गई सूरता नाठ
 तलवारा ऊची टगी, लग्यो कटारघा काट
 कवचा लागी लेदरी, गई दीमका चाट
 डाल रसोई मे पडी, न्हावणघर मे पाट
 वागो पहरघो वीनणी, बरछी लेग्यो जाट
 छोडी लीक पुराणती, धारघा नूवा हाट
 खोलोगा के ठाकरा, बीच बजारा हाट
 क्यु इकनाजमजी वण्या, क्यु इक वणग्या काट
 क्यु ई कलकटरजी वण्या, क्यु इक वणग्या गाट
 क्यु इक थारोदार वण, करे अरड अरडाट
 क्यु इक गिरदावळ वण्या मगला का समराट
 वावा! खूब वण्या, घण्या, छोडघो राज'र पाट
 घर मे वच्यो ना गूदडो, पीढो र्हघो न खाट

घर नै ग्याग्या गोलिया, जर न तेग्या जाट
 झूठ जूठ जो क्यू वची, गई ग्यानग्या चाट
 दाम वेमरु थो वृरी, पण था उण रा ठाट
 अब तो लिमनेटा उडै, दही वडा रो चाट
 हाडया री सी कोथळी, नडतू मे दो गाठ
 श्रानो परली हाडक्या, गिराल्यो पूरी आठ
 पूण न लक्वण राखियो, वचपो न नन मे तत
 ठुनराई रो ठाकरा, भलो दिखायो अत
 नावी होगी जेवडी, नीसरग्यो सो बट
 बाण्या कै पोळ्या सड्या, घण्या भिडावै टट



दिवाली

पुत्र बडेरा रा आछा, बरकत है उए री रीता मे
तिवहार बणाया इसा-इसा गाया जावै जो गीता मे

मभ्यता बदळती जावै है, बरताव बदळता जावै ह
पोसाक बेस भूसा हिवडा रा भाव बदळता जावै है

एण सालू-साल तिवारा रा दिन याद दिरावण आव है
इए होळी और दिवाळी-मिस, आख्या री चू ध मिटाव है

पढ लिखग्या परदेसी भासा, सो हासी आवै आपा न
त्यू हारा री बेडी मे बडका, बाध गया सब पापा न
पिच्छम री आधी चालै है, पूरव नै फोडा घालै है
एण वारू म्हीना री 'रीता' आपा नै सदा सम्हाळ है

काळी काया उजळी करणै आई है फेरू दीवाळी
सब बैर भुला पिछला गूथो हिवडै सू हिवडै री जाळी
भाई सू भाई मेळ करो, सासू रै बहू पगे लागो
रूस्योडा घर रा घणिया सू घर री लिछम्या गहणा मागो

देराणी अर जिठाणी मिल, हिवडारी सब घु डचा त्यागो
वा रात गई, दिवाली रो, परभात हुयो जागो जागो
मनडा मे मोद भरो मीठा, मगळमय मुखडा मुळकावो
आरया रा आसू बढ कगे, 'ज्योती रा मोती' टळकावो



भीम पांडिया

जनम स्थान वीकानेर
जनम तिथि १६ जुलाई सन १९२६ ई०
पिताजी रा नाव श्री रामरखजी पांडिया

पांडियाजी सही अरर म लोक रा कवि है । लोकधुना
री तरज पर लिख्योडा आपरा गीत रावणहथै पर बजा
बजा'र गळी गळी घूम'र मुन् गाणे री मरदमी राखणवाळा
पांडियाजी आपर ढग रा अकली ही कवि है । 'हाथ सू कतर
लीना जोरला' नाव सू आपरी एक पोथी छपी है । समाज रा
सतायाडा मिनखा मारू ह्मदरदी अर मोसण करणवाळा नै
फटकार बतावण वाळा आपरा अनेक गीत घणा प्राणवान वण
पड्या है । धरती अर प्रकृति री साभा रा मीठा अर प्रेरणा
भरघा गीत भी आप लिख्य है जिका न कवि सम्मेलना मे
वाहवाही मिलती रयी है ।



हिवडै मायलो हीरक दीप संजोय रे

माटी रै दिवलै सू कोनी पार पडै
हिवडै मायलो हरक-दीप संजोय रे
धरती रै कण-कण मे अखत उजास कर
धरै मान सू प्रेम बीज नै बोय रे
गाव-नगर म पथ-डगर मे
खेत-खळा में कर उजास
सत्य-अहिंसा धूप खेय दे
दमू दिसा म भै सुवास
त्याग तपस्सा री निरमळ जळधार सू
मनडै मायलो काळो कळमस धोय रे
माटी रै दिवलै सू कोनी पार पडै
हिवडै मायलो हीरक-दीप संजोय रे
प्रम वतन सू निभा जतन सू
आख जग सू प्रेम निभा
सुख समरिध फळ फूळ पाण नै
हरी साति री बेल लगा
मोह छोड ससतर पाती अणुवव रो
मिनग्न-मिनख न मिनखपणै सू मोय रे
माटी रै दिवलै सू कोनी पार पडै
हिवडै मायलो हीरक-दीप संजोय रे

उजासो दीसै आभळ कोर

धरा पर लायी सुरगी भोर
धोर कळमस काळोडी कोर
घेरियो पसर अधारो छार
देव चेतण सूरज री किरण
उजासो दीसै आभळ कोर
चानणो बळ अधारो घटै
सुणीज पछीडा रो सोर
काम पर लाग हळा नै टोर
धरा रै कण-कण नै दे फोर
उजासो दीसै आभळ कोर
हिये मे जाण समै रो मोल
वीतती जाय घडी पुळ पोर
अवै मन करतै वेगो गोर
जियेलो नही काम रो चोर
उजासो दीस आभळ कोर
कोड कर उठ करमठ मोट्यार
राख महनत पर पूरो जोर
पसीनो सीच गळै ज्यू लोर
धरा रो नाच उठै मन मोर
उजासो दीसै आभळ कोर
सास रै साथ उदळतो जाय
जमानो जीवण नै भ्रमभोर
हिया मे उथळ-पुथळ घणघोर
जागरण री धुन चारु ओर
उजासो दीसै आभळ कोर



हिवडै मायलो हीरक दीप संजोय रे

माटी रँ दिवलँ सू कोनी पार पडँ
हिवडै मायलो हरक-दीप संजोय रे
गरती रँ कण-कण मे अलत उजास कर
धण मान सू प्रेम वीज न वोय रे
गाव-नगर म पय-डगर मे
खेत-तळा में करँ उजास
सत्य-अहिंसा धूप खेय दे
दम् दिसा मे भ- सुवास
त्याग तपस्या री निरमळ जळधार सू
मनड मायनो काळा कळमस धोय रे
माटी रँ दिवलँ सू कानी पार पडँ
हिवडै मायलो हीरक-दीप संजोय रे
प्रम वतन सू निभा जतन सू
आव जग सू प्रेम निभा
मुग ममरिघ फळ फूळ पाण नै
हरी साति री बेल लगा
मोह छोड ससतर पाती अणुवव रा
मिनख मिनख नै मिनखपणै सू मोय रे
माटी रँ दिवलँ सू कानी पार पडँ
हिवडै मायलो हीरक-दीप संजोय रे

पण लूट सकै तो लू ठोड़ां नै लू ठाई सू लूट

तू लूट रे । तू लूट
तू लूठो है रे लूट
पण लूट सकै तो
लू ठोडा नै लू ठाई सू लूट
तू लूट

जका जिंदगी भार वण्या जीवै है
जका वापडा निवळा हे लाचार
जका भाग फूट्या ३ जावक यार
कीडा ज्यू किलबिलता नै मत मार
मत लिवाड रे विकरम सूरा हाथ
कळपतडा रो काळजियो मत चूट
लू ठोडा नै लू ठाई सू लूट
तू लूट

जकै न चुल्हे चढे दिनुग दाळ
जठे दोय रोटी रो नही जुगाड
भूख मरता टावरिया बहाल
वाने खावण नै मत मूढो फाड
मत लिवाड रे विकरम सूरा हाथ
कळपतडा रो काळजियो मत चूट
लू ठोडा न लू ठाई सू लूट
तू लूट

जका जेठ र तावडिय मे ताप
बळवळती लूआ मे सीच पसेव
सोदाळ रो ठठारी मे वाप

खटै खेत में दिन भर आखी रात
फिरै उघाडा

फाटैमर भी पैरण नै नी पूर
मिलै न लूखा रोट पेट भर घाप
जीभ लपरका लोहीडो मत चाट
लूखा लाग़ा हाडा मती लमूट
मत लिवाड रे विकरम सुरा हाथ
कळपतडा रो काळजियो मत चूट
लू ठोडा नै लू ठाई सू लूट
तू लूट

△

मणि मधुकर

जनम सितम्बर १९४२
सिखा एम० ए० (हिंदी)
स्थान सादुलपुर (बूँर)

मणि मधुकर रो पलडो सग्र मुधि सपना के तीर' है जिण म हिन्दी अर राजस्थानी री टाळवा फुटकर कवितावा छपी है । हिन्दी म भी आपरी कवितावा उपयास भ्राट कई पाय्या छपी है । आपरै राजस्थानी काव्य सक्ळन 'पगफेरो' पर केन्द्रीय साहित्य अकादमी मू पुरस्कार मिल्यो है ।

मणिजी परम्पराऊ ढग री कवितावा भी सिखी हा पण अवार नई कविता री ठाव पर जिवी ठेठ रग री देसी रचनावा करी है वा री मरोड घणी तीखी है । सबद री सामरय भी आपरी खासा है अर बात न राखण रो ढग घणो असरलार बणु पडघो है । कवितावा रो चोफेर तो नई कविता रै घेरै रो ही है जिण मू बार निक्ळणो सायद भ्रा रै भी बस री बात कोनी । या घणी अचभै री बात है के जीवण न देखण री या दीठ कठै ताई ठीक है जिण म अ वारो कुण्ठा, त्रास, भी अर सगळी चीजा इसी ही है जल् क जीवण रा अौर परत भी है ज्या मू भिनख नै उमग आसा अर उच्छाह मिल ।

आजकाल आप कलकत्त म मुतन्तर लेखण रो काम कर ।



कालो घोडो

रात धनख डोग ज्यू तरणावै
रीस मे भरघोडी
घोग धूजै मैदी वरणी रेत
रूख रुखाळी बिना तडफा तोडै
गिगन मांदगी रै दोवडै मे लुकतो
कळेस रा आखर चुगतो
श्रू डी लावी निसास छोडै
सरणाटो घणो विकराळ घणो सक्वाळ है
अतस मे श्रूकळै अपसूण
आस्यां मे काकरा
रडकै आळ-जजाळ
हाथा सू छूटती जावै लाव
गोडा ताई आयग्घो
तिरसो पाताळ
कुण निगै गखै फूल पानका री
समे गो डूगर नचीतो अर निदाळ ह
च्यारू कूट अखूट अधारो
इतियाम जर्णै-जर्णै ग मू डा ओळखतो
सूत्या सवद
मुडदा रा घर-गोला टोवता फिरै
इण खूणै काळस
उण गूण भूठ रो कीच-वादो
वठै वासती कठै वळयळता अगार
वठै जिदगानी रो च्यानरो

कठे नू व निरमाण रो गाटो
वीकाणै सू दिल्ली दरुजै रै वीच
भचीडा खावतो भटकै
कदे कचेडी कदे लाल किलै रै सामी
माथो पटकै
श्रेक मिनख रो अळसायो उणियारो
पूत पाणी रो पलका पर तिरै
जगळ मे काळो घोडो कुदडका करै



आलीजा ! आज्यो घरां

चोरावै ऊभा
वारणै अडचा
चू तरै पसरचा
उगाड पडचा
अ गेला किरण नै उडीकै
किरण री वाट जोवै
हाट-वजारा सून
चूला मे ठडी-ठर राख
परिडा मे छाट पाणी नी
पखेरू मून धारचा बिरछा माथं
कदे-कदास
कठई कूकरिया घसै
सुगन माडा
भखारिया रीती
भीत लेवडा चिगळे
तवो वतळावण करणी चावै
चकळो पडूत्तर नी दे
अू खळी मे एक दैत
हडहड हासै
डागळै डाकण फदाका भरै
निसकारा नाखती
घर री धिराणी
मन माही कळाप करै—
आलीजा ! आज्यो घरा

के धान बिना भूसा मर्रा
 छापे मे उबतो
 फडफड करतो
 आवे नागो समचार
 के अक्के विरग्या रा जोग है
 नेता घणा छीके
 अर गरजे
 कम लावो
 हळोतिये सारु
 नाज काठो राखो
 रोजीना तीन पो'र
 बै जनता नै वरज
 न नाज न काज
 थोथा रो राज
 अकसो चवाळीस रो धारा
 मँगई रो गाज
 हाथा मे ले लिगतरा
 भाज भाईडा भाज



मदनगोपाल शर्मा

जनम स्थान सामोद (जयपुर)

जनम तिथि २० मई मन १९२६ ई०

डा० मदनगोपालजी मूळ रूप म हिंदी रा लेखक है । साहित रै भरम नै समझणै री समरथा रा घणो होणै रै कारण आपरी रचनावा रो साहित स्तर ऊँचो है । बातें में हिंदी रा अध्यापक हाण सू साहित सू आपरो सगपण निवृट रो है । आनै अनुप्रासा रो घणो चाव है जिकै सू आपरी कविता म सव्दा री दुणभुण मावळी मिलै । आपरै गीता नै राग सू गावण री कळा मे भी अ सिद्ध है । फुटकर कवितावा रै अलावा आप 'कुमारमभव' रो राजस्थानी अनुवाद भी करचो है । गोखै ऊँची गारडी' नाव सू राजस्थानी कवितावा रा एक सगै आपरो छप्योहा है ।



देसडलो

म्हने प्यारो लागे म्हारो दूगर घोरा हाळो देम
 सावण मास मुरगलो जी, धिरं घटा घणघोर
 घन घन गाजे मेरलो जी, वत-वन नाचं मोग
 म्हने वालो लागे म्हारो
 बुग्जा मोरा हाळो देम
 लडभड तूम वोगड्या जी, सागरियां भाभोर
 खोवा चोखा चिलगोना सा, छूहारा सा वोर
 म्हाने प्यारो लागे म्हारो
 मांगर घोरा हाळो देम
 नागोरो वळदा री ताडी वावे ऊडी फाळ
 जंसलमेरो साडिया जी, पूटी देवं भाळ
 म्हाने प्यारो लागे म्हारो
 डागर घोरा हाळो देम
 रात रपाळी दिन सोगुंला, रत-रत री रगरेळ
 मानधणी मिनवा रा मेळा, हुवं मना रा मेळ
 म्हाने प्यारो लागे, तीजा
 शर गणगोरा हाळो देस
 वे नखराळी गोगड्या, वे नेहीडा निरदुद
 वा उजळी वो जेठो, व नयणी वीभाणद
 म्हाने प्यारो लागे म्हारो
 मरवण ठीळा हाळो देस
 वे वारी रजपूतण्या, व रणववा राठोड
 पग तो हपियो पागडे मे, माथे वधियो मोड
 म्हने प्यारो लागे म्हारो
 सतिया सुरा हाळो देस

△

चेत माणसा !

धग-धग धूजै घरा, गैण गरणावै है
चेत माणसा, नुओ जमानो आवै है

मेमनाग रा सहस-सहस फण डोलै है
दभू दिसावा अगनी री भळ उगळै है
डगगग-डगमग वापै डूगर डूगी सा
समदर रो जळ उभळ खळभळ उक्ळै है

भड-भड तारा भू पर पड पतिगी सा
मरण-मरण यो सूट जवर सरणावै है

यो तो भारी सूट अजव अणदेरयो है
भेद न डण रो नेरु समभ मे आवै है
गजव घणो अरडा'र पडै वड पीपळ है
फोग कटारा नाच मौज मनावै है

आधी मे भी नान्हा दिवला मुळकै है
तेजवत उडगण पण नद-नद जावै है

घस-रम जाव आडा डूगर डीगोज
ओषटघाट माण्डा मारग देव हे
सरवर सूक्या, नदद्या मे भूडो भरग्यो
घोरा मे जळधारा लहरा लेवै है

हेल्या मे वस्त्या मे तो सूनेड पडी
वीहळ जगळ मे, मगळ सरसाव है !

जगी मठ-मिदरा रो मठ मो मारचोगो
काचा कळमा रो ढळग्यो नकली पाणी

रोट-गढा रा रगूरा भट-भट पडग्या
गुचद नीवा सू माग है जिनगागी

छान-भू पडधा गी भीत्ता धारै उची
महल-माळिया गीना लुळ वुळ जारै है

धटरो मन रारो जो परळ दीमै है
ह जुग रो पमवाडो, जुग गी केरवदळ
राही माटी है धर रै ही रामण है
नई घडत रगरूप नुरो ह, नरी मिरन

नुधा उतारण धाण, काळ रै हावा सू
पिरजापत सिस्टी रो चार धुमात्र है ।



तारां री रंगवरी !

निरमळ नभ मे नीनो लीलो यो तवू सो तणियोडो
 तळै रूप री राम चंदरमा वैठचो वनडो वणियोडो
 दूग बोळी धुपी दिमावा री चीवूट कनात तणी
 नखत वण्या है माडैहाळा तारा री वारात वणी
 माडैहाळा और जनेती अवेड ड्रेमड वैठयोडा
 मग्न सुभाव जनेती साग, पण कुछ योडा ऐठयोडा
 नीलमजटो अतरदाणी सु भरुं श्रीस रा उणाकारा
 चमर डुलावै पवन, लागरचा ठडा ऋडा फटकारा
 अतरिक्क मे वळचो अगर अर मोरम लोरा लोर वळी
 छोन चढचा सगळा रा जिवडा, मद मे नगळी मभा रळी
 अपणी अपणी वेळा उठ-उठ सीठचार सू जणै-जणै
 मान वढावण देण वधावण मधुर सुप्यार सिलोऊ भणै
 सुण सुण कर मोवण। सिलोका सायव सारा पुळक रह्या
 अवरा ही अगरा चदाजी मधरा-मधरा मुळर रह्या
 काना रा कचन रा कु डळ, अर कपोळ है काप रह्या
 भळळ जगमगै रतन मुकट रा नैण सिस्टि रा भाप रह्या
 यू ही वगती रवै अगूतर तन या बात उमग भरो
 अमर रहै या नभ रो माडो, या तारा री रंगवरी



मनोहर प्रभाकर

जन्म-स्थान भाडारेज (जयपुर)

उमर वरस ४६ ई नेही

डा प्रभाकरजी मूळ रूप म हिंदी रा कवि है । पण समरथ लेखणी रा घणी अर ठेठ राजस्थानी होणमू आपरी राजस्थानी रचनावा भी ऊँचै दरज री चीजा वण पडी है । आप उण योडा सा लेखका म मू है जिका अनुवाद स आज री राजस्थानी रा साहित नडार भरघो । 'मेघदूत' अर 'भरथरी सतक' रा आपरा अनुवाद घणा मफळ हुया है । फुटकर गीत भी आप लिख्या है जिवा कवि सम्मेलना म सराया गया है । प्रभाकरजी छ्पा रा छटवा कारीगर है । आपरी रचनावा म वठे भी गति लय या तुक री कोर कसर नही लखाव जद के आज रा घणखरा कविमा म या कभी खटकै । इण गुण रै पाण ही आपरी रचनावा घणी स्वाभाविक दीव पड महनत स खट'र बणायोडी सी नही । राजस्थानी साहित अर सस्कृति पर हिंदी अगरेजी मे आपरी दो तीन पोधिमा तो छपी ही है पण फुटकर साहित्यिक पोधिमा भी काफी मात्रा मे छप्योडी है ।



गीत

जिण घडिया मे सायें होवें
 हिवडें रो आधार
 अँ कडवी घूटा जीवण री
 वणें सोम रो धार
 अनळ-कु ड इमरत वरसावें
 वजड धरती फल खिलावें
 प्रळें घोस हिरदो हरखावें
 ज्यू भाभर-भरणकार-जिण०
 ऊजड-खेडो सरग रचावें
 सूनोपण ससार वसावें
 पीडा रो पतभाड सजावें
 मधुरितु रो सिणगार-जिण०
 विपदा रा सै बघण टूटें
 हिय हेत रो नीभर फूट
 भावा री चिडकोल्या ऊडें
 जी भर पाख पसार-जिण०
 सासा मे सोरम सी गमकें
 नेंणा मे वीजळ सी दमकें
 अग-अग आमीरस घोळ
 हिलें हिय रा तार-जिण०
 मधरी मुळक अघर वरसावें
 गळा गीत गो धर वण जावें
 चचळ चित लहरा सो लहरें
 उमगें रस री वार-जिण०
 अँकलडो जीवण ना चालें
 सूनो हियो सदा सू सालें
 चिता चडू जे हो मन-सगी
 ारण वणें त्यू हार-जिण०



गीत

कुण मुसकायो चाणचुकी या
जोवन रै परभात मे

हुळस उठी हिवडै री बयारी
मुळक उठी मन री फुलवाडी
पाखडिया रै गात मे-कुण०

एक भलक भी भाक न पायो
पलका सू पळ मेळ न खायो
पण कामण करग्यो कुण जाण
आज वात री वात मे-कुण०

ताप तावडो तिल-तिल वाळै
यो दुखडा पण वदे न साळै
जद सू मै हायो इण थारी
रुपाळी वरसात मे-कुण०



फागण रो गीत

चग वजातो रसिया गातो
 फागण आयो अरे, कूकी कोयलडी
 मस्ती रं रग रग्या रुसडा
 वेला वन विलमावै
 नयी कूपळा कवळी डाळचा
 निरख्या नैण लुभावै
 फूल फूलिया, वाग महकिया
 फमला गावै अरे, कूकी कोयलडी
 रूप समदर न्हाई कळिया
 क्यारचा रास रचावै
 नयै नाज री वाली खेता
 मगळ गीत सुराव
 खेत हुळसिया, मोर मूळकिया
 मन मसतायो अरे, आवै ओळ्यू डी
 गळी-गळी मे होळी गाता
 छेला चग वजावै
 मस्ती डूब्या करै मसखरचा
 लाल-गुलाल लगावै
 रसिया री धुन हिवडं-हिवडं
 हूक उठावै अरे, वाजै ढोलकडी
 लूअर खेलै नाच किसोरचा
 फूली फाग मचावै
 वेस वसती पैरचा कोई
 प्रीतम रं मन भावै
 घुमर घालै अग उध्दाळं
 गौरचा नाचै अरे, भरुणकै पायलडी

△

डा० मनोहर शर्मा

जनम स्थान बिसाऊ (भू भूगू राजस्थान)
उमर बरस ५६ र नडी

डा० मनोहरजी राजस्थानी साहित्य रा महारथिया मे सूरु है । राजस्थानी काव्य म जितना भात भात रा प्रयोग भ्राप करिया है उतणा सायद ही नाई दूजो खलक करिया होमी । छार्टे थका ही आपरी रुचि काव्य रचना कानी लागगी ही । अरावली री आत्मा' अर 'गीत कथा' नाव मू आपरी दो पोथिया घणी पहला छी ही । घोरा रा संगीत, वू जा अम्मरफळ गोपीगीत मरवण, पछी रमधारा वापू, गजमोती, बेलवध जय जननायक बटावू— अ आपरा उण काव्या रा नाव है जिवा पत्र पत्रिकावा म छप्या है । बिना छी रचनावा मे—म्हारो गाव अबला, ताराभडी अर अरज धारा नाव रा काव्य है । अनुवाद मे मेघदूत, उमर खयाम अन्याकित-सतक गीता धम्मपद अर जिनवाणी छप चुक्या है ।

राजस्थान र लोक साहित्य रा आपरो ज्ञान घखो ऊचो है । लोक-कथावा अर लोकगीता पर भ्राप गहरो अध्ययन करिया है । बरदा' नाव री तिमही अनुसंधान पत्रिका र सम्पादक रूप मे आया राजस्थानी प्रेमी आपने भली भात जार्ण ।

कवि र रूप मे डा० 'मनोहरजी राजस्थानी लोककाव्य सूरु घणा प्रभावित दीख । आपरी अनेक रचनाका लोकगीता री धुना पर बणी है । मातभोम र प्यार र सार्थ सार्थ आध्यात्मिक अर भारत री ठेठ सस्कृति री छाप आपरै काव्य री बिसेसता है । आपरी और छप्योदो पोथिया रा नाव है — 'नणसी रो सामो', 'कुवरसी साखळो' 'राजस्थानी बात साहित्य' 'शोमल भोग', कर्मादान अर 'रोहीडे रा फूल' ।

बीज

बीज एक सोयो सुपना री
छाया मे सोनै री सूत
वादळ री वूदा बोली 'उठ'
जाग जाग पिरथी रा पूत'

पान-पान मे प्राण समाया
कोमल कूपळ पसरि बेल
किरणा री माया भल दीपी
मन मोत्या रो माडघो खेल

सोळी पून सदेसो ल्याई
कळिया उठ कीन्यो सनमान
फूला छाई बेल सुरगी
सार रूप दीन्यो रसदान

अम्वर रो हिरदो सरसाया
एक बीज वण सोरम रूप
ससारी माया रा लोभी
नर तू सुण यो सार अनूप



सार कमाई

भात-भात रा थाळ सजाया
नगर सेठ कर चाव
माया री छाया मे आयो
गरुदेव रं ठाव

दो रोटी भेली थाली मे
अर सरदा रो साग
प्रेमभगत वारीगर आयो
तज माया री राग

ध्यान लीन आसण पर वंठघा
आप तपोधन नाथ
हाथ जोड दोनू जण ऊभा
नैण निवाया माथ

जोत रूप गरु नैण उघाडघा
मुख लाली री रेख
वायर भीतर री वाणी ज्यू
एक भई रस देख

घरौ हेत सैं भोग लगायो
ले रोटी निज हाथ
पुळक पसीज्यो अग भगत रो
चरण छुवायो माथ

नगरसेठ मन रोग समायो
करी वीनती दीन
सेवग रा यै थाल सजोया
किण विघ देव मलीन

इमरत री वाणी गरु वोल्या
सेठ न ल्या मन खेद
बायर भीतर री आरया सं
देख आज यो भेद

रोटी री जद टुकडो तोडचो
सोरम व्यापी पून
अवरत धार दूध री चाली
इमरत घोळचो चून

लाडू री जद टुकडो तोडचो
गद-गद निसरचो खून
सार कमाई री जस गायो
अवर रमती पून

तं ज्ञाय ज्ञानं चो विद्वान् ज्ञानं

जुग जुग रो सिर पर भार घरघो
ना जग रा भोग त्याग
। जाग ओ मिनख जाग

छोर
ग वोर
डोर
नाग

रो जुग वीत्यो
सचें रीत्यो
हारघो जीत्यो
आज भाग
। मिनख जाग

भूखा घाया
गोरवछाया
मन भाया
आज पाग
। मिनख जाग

तू जाग जाग ओ मिनख जाग

ऊपर छायो लीलो अवर
नीचै पसरचा धरती सागर
नित नित सरसावै य खुल कर
पण सीव थरप तू दिया दाग
तू जाग जाग ओ मिनख जाग

हिरदै मे चाव घणो छायो
पीद जाकर मोती ल्यायो
पण भेद बूद रो ना पायो
सारो सागर तू लियो धाग
तू जाग जाग ओ मिनख जाग

मन म जाण परवी पा ली
तेरा गोता जासी खाली
हिरद री गगा मुस चाली
यो नीर नही या विकट आग
तू जाग जाग ओ मिनख जाग

विद्या वळ पा तू गरवायो
पण म्यान तेरो के गुण आयो
पाणी मथ कुण इमरत पायो
भूठा मै सारा उड भाग
तू जाग जाग ओ मिनख जाग

तू नित कूवो खोद्या जावै
पण प्यास न तेरी मिट पावै
आखर के हाथ तेर आवै
चोरा र जाव चोर लाग
तू जाग जाग ओ मिनख जाग

माया रै मद मे चाव भरघो
उडो हिरद रो रस विभरघो

जुग जुग रो सिर पर भार धरघो
जाण्या ना जग रा भोग त्याग
तू जाग जाग ओ मिनख जाग

पूरव पच्छिम रा ओर छोर
मिलज्या दोनू हो रग वोर
यै सूत कई बण एक डोर
ले नाथ काळ विकराळ नाग
तू जाग जाग ओ मिनख जाग

अव तो सोनै रो जुग वीत्यो
तेरो सारो सचै रीत्यो
धारै मत कुण हारघो जीत्यो
जाग्या माटी रा आज भाग
तू जाग जाग ओ मिनख जाग

या भेद भावना मन त्यागै
तो प्राणा मे इमरत जागै
नारायण आवै नर आगै
तू प्रेम मगन हो खेल फाग
तू जाग जाग ओ मिनख जाग

काळा गौरा भूखा घाया
निवळा सबळा गोरवछाया
पिरथी माता र मन भाया
सारा मित वदळ आज पाग
तू जाग जाग ओ मिनख जाग

जण जण मे चेतनता पसार
सुगणो सोयो यो गूढ तार
गू जण लागै कर रस पुकार
अवर मे चालै अमर राग
तू जाग जाग ओ मिनख जाग

□

तू जाग जाग ओ मिनख जाग

ऊपर छायो लीलो अवर
नीचें पसरचा धरती सागर
नित नित सरसावै य खुल कर
पण सीव थरप तू दिया दाग
तू जाग जाग ओ मिनख जाग

हिरदें मे चाव घणो छायो
पीदें जाकर मोती ल्यायो
पण भेद बूद रो ना पायो
सारो सागर तू लियो थाग
तू जाग जाग ओ मिनख जाग

मन मे जाण परवी पा ली
तेरा गोता जासी खाली
हिरद री गगा सुस चाली
यो नीर नही या विकट आग
तू जाग जाग ओ मिनख जाग

विद्या वळ पा तू गरवायो
पण ग्यान तेरो के गुण आयो
पाणी मथ कुण इमरत पायो
भूठा यै सारा उड भाग
तू जाग जाग ओ मिनख जाग

तू नित कूवो खोद्या जावें
पण प्यास न तेरी मिट पावें
आखर के हाथ तेरें आवें
चोरा रै जाव चोर लाग
तू जाग जाग ओ मिनख जाग

माया रै मद मे चाव भरयो
उडो हिरद रो रस विसरयो

जुग जुग रो सिर पर भार धरयो
जाण्या ना जग रा भोग त्याग
तू जाग जाग ओ मिनख जाग

पूरव पच्छिम रा ओर छोर
मिलज्या दोनू हो रग वोर
य सूत कई वण एक डोर
ले नाथ काळ विकराळ नाग
तू जाग जाग ओ मिनख जाग

अव तो सोनै रो जुग वीत्यो
तेरो सारो सचै रीत्यो
घारै मत कुण हारयो जीत्यो
जाग्या माटी रा आज भाग
तू जाग जाग ओ मिनख जाग

या भेद भावना मन त्यागै
तो प्राणा मे इमरत जागै
नारायण आवै नर आगै
तू प्रेम मगन हो खेल फाग
तू जाग जाग ओ मिनख जाग

काळा गौरा भूखा घाया
निबळा सबळा गोरवध्याया
पिरथी माता रै मन भाया
सारा मिल वदळ आज पाग
तू जाग जाग ओ मिनख जाग

जण जण मे चेतनता पसार
सुगणो सोयो यो गूढ तार
गू जण लागै कर रस पुकार
अवर मे चाल अमर राग
तू जाग जाग ओ मिनख जाग

□

हाथ

इए धरती पर इतणो धन
इए धन नै भोगैला कुए

एक समो हो मिनखपरणो
अपरणै सू मजवूर घणो
घरती सू अै हाथ वध्या
कुदरत आगै माथ भुक्या
आभो कैंडो, कुए जाणै
चन्दा नै कुए पहचारै

पए धरती सू हाथ उठचा
हाथ उठचा जद हाथ सध्या
जोयो धरती रो कए कए
ढोल घणा रा गग्ज गया
मोती नभ सू वरस गया
घण धरती रो पग भारी
खेता मे मुळकी क्यारी
कुदरत री कू पळ फूटी
बैला री निदरा टूटी
निपज्या दाणा कैं रई
घरती लीली चैंर हुई
बेलडिया नाच एणभुए

मिनख पताळा जा आयो
द्धिपियोडो धन निपजायो
घरती रो कए कए जोयो
सूड करी नै धन वोयो
घणा बळा रा हळ चाल्या
हाथा मे पडग्या छाला
कळ री वाणी वोल गई
सुख वैभव नै तोल गई
लिद्धमी रो घर हर प्रागए

मरुधर मृदुल

जनम स्थान , जोधपुर

उमर ४६ र नदी

वकालत अर कविता रो धनोखी मेळ मरुधरजी रं मन रा भेद बनाव । कातेज-जीवण म पनप्योडा हिन्दी कविता रो प्रेम जमाने री फेर वण्ळ रं माथे मातभासा वानी भुक्तपो । मैनत, समता अर उछाह रा गीत आपरा प्यारा विसय है । हाथा री खरी कमाई मे आपरी सरधा जिसे आचरण मे है विसी ही वाव्य मे भी लखाव । हिन्दी री ज्यू राजस्थानी म भी आप फुटकर गीत अर कवितावा ही लिखे । राजस्थानी जावरण रं आदोळण मे आपरी बिमम रचि है । इण दिसा मे आपरी कोसीसा सराहणे जोम है । आपरो एक वाव्य-पुस्तक छपी है ।



हाथ

इए धरती पर इतणो धन
इए धन नै भोगेला कुए

एक समो हो मिनखपणो
अपणै सू मजबूर घणो
घरती सू अै हाथ वध्या
कुदरत आगे माथ भुक्था
आभो कैंडो, कुए जाणै
चन्दा नै कुए पहचारै

पए धरती सू हाथ उठचा
हाथ उठचा जद हाथ सध्या
जोयो धरती रो कए कए
ढोल घणा रा गरज गया
मोती नभ सू वरस गया
घण धरती रो पग भारी
खेता मे मुळकी क्यारी
कुदरत री कू पळ फूटी
वैला री निदरा टूटी
निपज्या दाणा कैर रुई
घरती लीली चर हुई
वेलडिया नाच एणभुए

मिनख पताळा जा आयो
छिपियोडो धन निपजायो
घरती रो कए कए जोयो
सूड करी नै धन वोयो
घणा कळा रा हळ चाल्या
हाथा मे पडग्या छाला
कळ री वाणी वोल गई
सुख वैभव नै तोल गई
लिछमी रो घर हर आगए

मरुधर मृदुल

जनम स्थान , जोधपुर

उमर ४६ र नेडी

वकालत अर कविता रो अनोखो मेळ मरुधरजी रँ मन रो भेद बताव । कालेज जीवण मे पनप्योडो हिंदी कविता रो प्रेम जमाने री फेर बदळ रँ साथे मातभासा नानी भुवयो । मँनत, समता अर उछाह रा गीत आपरा प्यारा विसय है । हाथा री खरी कमाई मे आपरी मरधा जिती आचरण मे है बिसी ही काव्य मे भी लखाव । हिंदी री ज्यू राजस्थानी मे भी आप फुटकर गीत अर कवितावा ही लिखै । राजस्थानी जागरण रँ आदोलण मे आपरी बिसेस रचि है । इण दिसा मे आपरी कोसीसा सराहण जोम है । आपरी एक काय-पुस्तक छपी है ।



हाथ

इण धरती पर इतणो धन
 इण धन नै भोगला कुण
 एक समो हो मिनखपणो
 अपणै सू मजवूर धणो
 धरती सू अं हाथ वध्या
 कुदरत आगै माथ भुक्क्या
 आभो कैंडो, कुण जाणै
 चन्दा नै कुण पहचारै
 पण धरती सू हाथ उठ्या
 हाथ उठ्या जद हाथ सध्या
 जोयो धरती रो कण कण
 डोल घणा रा गरज गया
 मोती नभ सू वरस गया
 घण धरती रो पग भारी
 खेता मे मुळकी क्यारी
 कुदरत री वृ पळ फूटी
 बला री निंदरा टूटी
 निपज्या दाणा कैर रुई
 धरती लीली चर हुई
 वेलडिया नाच रणभुण
 मिनस पताळा जा आयो
 छिपियोडो धन निपजायो
 धरती रो कण कण जोयो
 सूड करी नै धन बोयो
 घणा कळा रा हळ चाल्या
 हाथा मे पडग्या छाला
 कळ री बाणी बोल गई
 सुख वभव नै तोल गई
 लिछमी रो घर हर धागण

हाथा रो जस अपरम्पार
घण घरती रा अँ भरतार
सुख-सुहाग रा सरजणहार
टीकी-काजळ रूप सिंगार
मिनखा रा अँ हाथ अमर
या हाथा रो साथ अमर
हाथा रो मँनत भरपूर
घरती रो दुख करदे दूर
मँनत करणै वाळो जन
भोगैला घरती रो धन
इण घरती रो सगळो धन
इण घरती पर जितणो धन



श्री गीत

मैं गीजो नमैःवीज्यो न म्हे खडिया ए म्हे खूटाळा खेत
 अः तिपा अन्न वृत्तिपजावा, वाटा, खावा-रैवा संग समेत

मदल - अआदळ-रा कळम समुन्दर सू पाणी भर लावें
 घण - घणै कोड सू, घणै लाड सू, घरती न पदरावें
 " " श्री पाणी रा बीज पडें जद घन निपजावें रेत
 " " घरती जाव सीता-खेती-वेटी सुगणी आवें
 " " हाथा री मं मजें वराता, मंनत न परणावें
 " " मिया-गुम रो अमर वाजिया, जुगा-जुगा सू हेत

सोन री लका रा रावण खेता पर चढ आव
 भाव भात रा रूप बदळ न सीता न विलमावें
 सोन री त्रिग तिसना छळगी, करगी घणी अचेत
 सू मनत री इज्जत अस्मत लुटी नही रह जावें
 म्हारें घर री वहू नही दूजा री सेज सजावें
 जग जगावा, मिल-भिड जावा, सब जण जावा चेत

△

△

गीत

टिच-टिच कोई करे, खेत मे हळ चाले
धरती निपजै धान मानखो जग पाळ

वरती पडी उघाडी, वजड लाज मरै
कुण धरती रो रूप सवारै कुण धरती री लाज ढकै
कैरी-करी कूपळ-कूपळ खेता री चूदड वाधी
धण धरती री ताज वचाली, धण वरती रै रखवाळै

घणो राज री चौपड माथै धरम जुआरी हारघो
चीर द्रौपदी रो चीरण नै, सोसण मन मे धारघो
खुलै खजानै लाज लूटणो, ठहरो वद करो
धण धरती रो चीर वचावै, करसो राज सम्हाळै

आभै रो भगवान कद तो करडो बैर वतावै
नदिया तोडै तीर लाज न सूत कदे ले जावै
इण पाणी रै नाथ घाल नै वस मे कर लेवै
हाथा रा भगवान वाध री नाथ नाक मे घाल

नही राज रो नी कुदरत रो कोई जोर चल
मनत जायो मिनखपणो ओ फूल खूब फळै
सुख-सपत री धरती माथै धमचक मच जावै
मिनखपणै री साख मिनख मे नही रुकै, हालै

माधव शर्मा

जनम-स्थान घूरु (राजस्थान)
जनम तिथि जनवरी १९३२ ई०
पिताजी रो नाव श्री कानीरामजी

'मधुकर' नाव सूरु राजस्थानी रा रसभर्या गीत
तिलखवाळा माधव शर्मा गीता रो एक 'भूमवो' राजस्थानी
साहित नै भेंट करयो है। अणछपी पोथिया में— फेन रें
फुलवाडी, 'मिनस' (नाटक) अर 'कवळीकोर' (कव-
सग्रह) रें अलावा रवींद्र री गीताजळी रो धनुष्य नै है।
राजस्थानी मे सगीत अर काव्य रो मीठा मेष्ट करप नै करतें
रुचि अर लगन धणी है। राजनीत री पटाई छोट करतें
रो काम अर काव्य रो सोल आज रें जुा नै करे बहुरी
मेळ है पण कळाकारा रा दिन हाल माना है नै करतें
सतोख करणो पडे। 'बेसर' अर 'जबट्ट दार' (कव-
नाव री आपरी दो पोथिया और छान्याने है।



गीता

लोक लाज बाध्यो तन प्रीतम मे म
 मैं मन थारी चेरी ५ ।

नैणा भरियो नीर न दुळ्ख मुळ्ख दितावे अज्ञान
 वाजळिये री रेव मेस ज्यू अळगी हो न पळत तज

हिवडे यादहलो अलवेली ।

ताना देर सुणावे गेली ।

मन-तन भगडो ना निमटेलो विपदा भेन थणेरी
 लोक लाज बाध्यो तन प्रियतम, मैं मन थारी, चेरी

दूर वादळी अखलमी वायरियो नाच । नचारै
 सूरज री तीखी तिडकी संग पाणी जळ वळ जावे

तरस तन मथळ री धाया ।

प्राण पसीजे मन अळसाया ।

मिनरी री ने आस अमित वाटहली जोधा तेरी
 लोक लाज बाध्यो तन प्रातम, मैं मन थारी चेरी
 जीवण वृम्भनो जाय न दुनिया मरो रोग पिड्याण
 पाळ हटकू घणो वाळजो गुपना लेय धिगाए

सामा वसियो मोह न छूट

हिवडे लाणी गाठ न टूटे

इण जुग कर ले जोर जमानो उण जुग वाजी मेरी
 लोक लाज बाध्यो तन प्रीतम, मैं मन थारी चेरी

जोड़ी बलदाँ की

रुणभ्रुण चालै चाल'क जोड़ी वळदा की
 टणमण वाजै टाल'क जोड़ी वळदा की
 घण गाजै बीजळ गिवै कोइ सावण चढियो खोर ती
 पपियो बोल्यो डूगर कोइ खेता नाच्यो मोरु
 तीज्या आवैली

गोरी कै मन कोड'क पीवर जावली
 लेवण आसी वीरक जोड़ी वळदा की
 लावै डाळ नीम कै कोइ हींडा माडयो वीर
 हींडै वनड लाडली कोइ ओढ्या दिखणी चोर
 सावण सुहली

दो दिन को हे मेळक भोटा देवली
 हिवडै बढा हिलोर'क जोड़ी वळदा की
 ऋठी लगाती आवसी कोइ भादूडै री तोज
 मखी सहली छोडता कोइ चाँळी जासी भोज
 भूरै आखडली

पिवजी हाक्या जाय'क पचरण पागटली
 सामरिये ले जाय'क जोड़ी वळदा की
 रुणभ्रुण चालै चाल'क जोड़ी वळदा की
 टणमण वाजै टाल'क जोड़ी वळदा की



गीत

जोवन छळक्यो जग्य
वाळपण पाछा पाव घर

सुरज री उगाळी
फूला री डाळी
मुळक'र माग हेत
किरणा सू खेलै
तोल पग मेलै
धूज'र घिसक रेत

चित री चौकडी
लाज री नौकडी
बाधै काळज री कोर
नैणा रमियावै
अघर फडकावै
हिवडै हठीली हिलोर

भंस री लारया
रूप सु वार्या
उजळ सी धरती री दीव
कुवै री बानी
निजरा सैलानी
मुळवै जवानी री सीव

दो छलाग भरी
पण सोच डरी

कोई देखें नगरी रो लोग
सासर ना मानै
के झोलै के छानै
के मोद सरम सजोग

तीसी पळक
खेळ जावै छळक
प्यास बुभरुणै री बाता राख परै
जोवन उळकयो जाय
बाळपण पाछा पाव धरै



मेघराज 'मुकुल'

जन्म स्थान राजगढ़ (बिहार राजस्थान)
 जन्म तिथि १७ जुलाई १९२३ ई०
 पिताजी का नाव श्री लक्ष्मीचन्द्रजी-पेसकार (रिटायर्ड)

मुकुलजी एक साधारण परिवार में जन्म लेकर भी आपसी लगन व प्राण एम० ए० तक पढ़ाया और गुणा के कारण राजस्थान का सांस्कृतिक अधिकारी बणिया। आपन माँ के स्नेह से कविता करण की प्रेरणा मिली। सन १९३७ से आप लिखणो शुरू करयो। 'उमंग' नाव से आपरी हिन्दी और राजस्थानी कवितावा रो एक संग्रह छप्यो है। 'सीमारेखा' और 'सनाणी' नाव का दो संग्रह छपण सारू तयार पड़्या है।

राजस्थानी व नव जागरण में मुकुलजी रो एक न्यारो जुग है। राजस्थान की गौरव गायावा न आप मीठी भासा में और भासा से भी मोठे गळ से सुणाव जद लाखा की भीड़ भी पूगी पर झूलत मिणधर ज्यू विभोर हो जावें। देस का दूर दूर का महाराज मुकुलजी 'राजस्थानी' रो सदेसो पूगावण बाळा पहला कवि है। आप दस का कवि-सम्मेलना में राजस्थान की मात मरजादा राखणवाळा में भी आप अगुवा है। आपरी 'सनाणी' नाव की राजस्थानी कविता देस व कृष्ण-कृष्ण में लोगा व मन नाई। अणगणित लाग 'सनाणी' की देखा-देमी राजस्थानी कवितावा बणाणी और मुकुल की तरज में गावणी चाही। हजारों लोग न राजस्थानी कानी खीचण में मुकुलजी की सनाणी घणो बडा काम करयो। इण भात आज के राजस्थानी का ये 'सनाणी जुग' रो थापना होई। साहित्यिक मंच पर मुकुलजी राजस्थानी रो भडो रोप्या। उण भडै व तळै णछटा वरमा में दूजा भी अनेक कवि आपरा

करतब दिखाया । पण राजस्थानी रो मूच बणावण रँ जस रो
सेवरा मुकुलजी रँ माथँ ही बध्या ।

राजस्थान रँ पुराण गौरव रा बस्वाण करणँ र अलाया
मुकुलजी आप रँ काव्य मे राजस्थान रँ लोकजीवण रा फूटरा
धितराम खीचँ अर उणा म सवेदन, साहस, आसा अर क्राति
रा ऊजळा रग भर । 'संनाणी री जागी ज्योत' नाव सू आपरो
राजस्थानी कविनावा रो एक सग्रेँ छप्पोडो हे ।



माटी मुलकी बीज पसीज्या

पमवाडो मत फेर निदाळ जागण री वेळा आई
दिन ऊग्यो चिडकोली बोली, आभ मे लाली छाई
माटी मुळनी, बीज पसीज्या, पू पळ पर जोवन छायो
फून पातटी विडिया बणगी, धरती रो मन अगडायो
थोडी सी जे आख माजली, निजर घणो ही आवेलो
जे देखो अणदेगी करदी, विना मौत मर जावेलो

जग-जग रँ मन बस्यो चानणो पैसा मे रोन्व आई
दिन ऊग्यो चिडकोली बोली आभ मे लाली छाई
मिणन पसीनो पू छण लागी, ठाला वात बणावँ रे
ठगी अघेरँ मे जद वँठँ, बडक-बीजळी आवँ रे
आज प्राण री खेती निपजै, वरम जुगत दरसावँ है
बणत माडली नई योजना, पळलो आग आवँ है

घणी उतावळ पग कद माड, सीळी धरती रह धाई
पमवाडो मन फेर निदाळू, जागण री वेळा आई
घेर घुमेर वादळी आई, वूद घूघरी सी लागँ
स्वाद मजूगी सुस्ती खारी, नीद दरुजँ पर जागँ
दूध बाळग्यो, छाड, फू कले, दही जमाया कद जममी
आग वरमगी, घी छिडकागी, नई भाति कीकर धममी
ठमको लाग्यो, लपट नीसरी, छाटँ मे सोरम आई

दिन ऊग्यो चिडकोली बोली, आभ मे लाली छाई
चुगटी-चुगटी चून बखेरँ, दूणो चूसँ बदळँ मे
थोडो करँ घणो दग्सावँ, सिरळ भिरळ है सगळँ मे
मटका करती, डैरा भरती, आख मिनख ने लावँ है
घोरज धरले चाह वावळी, विमवासी मन गावँ है

पग मे पडी वेडिया कटगो, पैजणिया सुर मे आई
दिन ऊग्यो, चिडकोली बोली, आभ मे लाली छाई

छियां-तावडो

गीत भीजग्या नय रग मे मनडो चग वजावै
फागणियो ले साढी मुळकै धरती घन निपजाव
कोई वन धरती वटवावै

छिया छोड क आज तावडो पगा उभागो आव
बीज मुळकसी कू पळ आसी लडचा ठूठ अर रोमी
मुड मुड सोच एक बात पण धरती नै सुख होमी
करसो हळ सू हाथ लगाव

छिया छोड के आज तावडो पगा उभागो आवै
होगी बात करै नीसरमा निकमा ठाला खावै
इसै देस मे नई काति क्यू धीमे धीमे राव
म्हान सोच फिकर हो जाव

छिया छोडके आज तावडो पगा उभागो आवै
पुरापात भी थोडा दिन तक आखभीचणी गेली
वज्जर छाती भरचो पसीनो करम कुदाळी लेली
हेलो मार मजूरी खावै

छिया छोडके आज तावडो पगा उभागो आव
भीतर वैठी नई जोत नै फूक मतो बुझ जासी
आस अजळी मारग जोवै पीळो सूरज आसी
भिलमिल किरणा हस हस गाव

छिया छोडके आज तावडो पगा उभागो आव
पडचा धीगडा खुल्ला खाव चुगल चिलम में हासै
दणदण धुओ मिलावै साफी पीले वो ही खामै
वचके नयो मिनख पण जावै

छिया छोडके आज तावडो पगा उभागो आवै
आगळ खुली किवाड उघाडा भीतर पडग्या धाडा
व्याई फाटै वो पग रोवै हासै आज धिगाडा
पीडा आसू भर भर ल्यावै

छिया छोडके आज तावडो पगा उभागो आवै

टट भिडावें लगडी चाला सीधो पग वढ जात्रे
हिम्मत वाधें हूस मोवळी निमळो नीच आवें
जुलमी जोर गुचळकी यात्रे

छिया छोडके आज तावडो पगा उभाणो आवें
माटी विछगी दीवो रखो नीच धान घराचो
धी में भीजी जुग वाती नै जण जण माय जगाचो
कोई आगण वाच दुळावें

छिया छोडके आज तावडो पगा उभाणो आव
उजमण करे गरीबी धन रो आस सास पग लागी
घरती पाचो माडण लागी पीड देग री भागी
ऊजड जळ पीत्रे फळ खावें

छिया छोडके आज तावडो पगा उभाणो आवें
कोट कगूरा चढी जिदगी भळ दीसै मतवाळी
धन लिछमी अब वीसो काडें मीनत हाथा ताळी
कोई घर पर दियो जगावें

छिया छोडके आज तावडो पगा उभाणो आवें



पण उठचो भतूळो एक साथ,
 कुण जाणें हो दुखडो पडसी,
 गरजी घनघोर चारणी मा,
 सुवकी भेली वुसक्या फाटी,

‘धिवकार अरें पातू कायर
 क्यू वचन दिया देवळदे न,
 जे माथें पर है आख देख,
 गजआ सोई, मरजाद गई,

तेरें सिरखा जद पूत जणधा,
 तेरें सिरसा कायर कपूत,
 तू कुळ मे काळो दाग हुयो,
 अब मेजा मे छिपकें सोज्या,

पावू अकळ-चूकळ होग्या,
 अगारा सी दीखण लागी,
 भटको दे गठजोडो खोल्यो,
 रो पडी जवानी फूट-फूट,

कइया बोलै कुळवधू आज,
 कइया बोल चुडलो मुहाग,
 आसू मे भीज्यो घू घटियो,
 चवरी मे घुओ घुटण लाग्यो,

घायल हिरणी मी तडफ उठी,
 मन मे बोली, ‘भोळा वालम !
 यू कहके ऊचा हाथ करघा,
 चादणी अन्वेरी वण छाणी,

आधी मी भभकी चवरी मे
 कू पळ सी कवळी कवरी मे
 भर ल्याई आसू नेणा मे
 कुरळाई दुख रं वेणा मे

क्यू छनगी कुळ मे तू जायो
 क्यू केसर घोडी ने ल्यायो
 देवळ पर मौत सवार हुई
 धिवकार, देख में हार गई’

तो जणणी मन मे लाज मरी
 पैदा कर घरती भार मरी
 रजपूती रमगी फेरा मे
 वाजण दे पायल डेरा मे’

पण पलक मारता ममभ पडी
 रतनाळी आग्या वडी-वडी
 हथळेव रा प्रण तोड दियो
 जद हाथ हाथ न दोड दिया

कइया बोलै अणवसी नार
 कइया गोन अवतिल्यो प्यार
 मेंदी फीकी दीखण लागी
 जद आग काळजें तव आगी

अणजाण गळ सी डकराई
 क्यू लगी प्रीत नें बिसराई
 पातू रो हिवडो भर आयो
 पण फज सामणें धिर आयो

सत्र नैण फाट देखण लाग्या, केसर घोडी हीसण लागी
 जद एड लगाई, रास पवड, तो मरपट विजळी सी भागी
 सरिया रा आचळ भोज गया, हिचकी वघगी मायड रोई
 वावल री रूढी दुली आस, दीवण लागी खोई-खोई
 जोडी विछडी पण मिली नही, भावा मे भीजी रही रात
 परणी रँ दिवटँ हूक उठी, कस्तव्य भुणो पण नही वात
 दिवलँ ने वाती घुळ रोई, मिदूर माग मे मुरभायो
 मुख-सेज पडी सिसवण लागो, नणा मे समदर घिर आयो

धरती री प्रीत कवारी है, फेरा भी पडघा अघूरा है
 पर अमर प्रीत रँ नैणा मे, चवरी रा सुपना पूरा है



मोहनसिध

जनम स्थान बसी (मवाड)
जनम तिथि आसाज बदी ११, सवत १८५६
पिताजी रो नाव श्री गाविदसिहजी

कविराव मोहनसिध प्रिथीराज चौहान रा सूरमा सावत पञ्जूनराय अर भलर्यसिध बछावा रे राजकविया री वस परपरा मे सू हा । आपरो सिक्षा दीक्षा मे उदयपुर म चारण विद्वान फलेह्वर्णजी ऊजळ र कन होई । आप डिगल अर पिगळ दोनू भासावा रा पडित्त हा अर दोना मे ही रचनावा भी करता । आपरी वीस नधी छोटी-बडी रचनावा हे जिंका मे सू मृगया बावनी, रामशतक, भूपाल पञ्चीसी, जयमलाता री निसाणी, दुर्गापाठ अर दुर्गाबावतो राजस्थानी री रचनावा हे अर सेस पिगळ री । रसखान रा कवित्त अर विहारी सतसई रो राजस्थानी अनुवाद भी आप करया हे । उदयपुर रे शोधसस्थान मे आप प्राचीन राजस्थानी गीत भाग ३,४,७, ८,१०,११ अर १२ रो सपादन करघो हे । सपादन रा और कई ग्रया र अलावा 'प्रिथीराज रासो' पर आपरो काम घणै स्रम, अर पाडित्य री चीज हे । राजस्थान री साहित्यिक परपरा रो आपरो म्यान ऊचै दरजै रा हो । चारण कविया री परपरा म ता आज भी अनेक विद्वान मिल पण ब्रह्मभट्ट कविया री परपरा मे विरळा ही लोग मिलै । मोहनसिधजी सू मिल'र उण जुगा पुराणी परपरा री याद ताजा करी जा सकै ही ।



गीत

समरथ घणस्याम रुखाळो साचो
काचो, काचो कहै जिको
रहे सदा भगती-रस राचो
राचो उण रस जिको तिको
धू प्रह्लाद उवारधा धूवे
प्रीछत पोखत गरभ लरया
बळता वच्या वच्या मनखी रा
गज घटा तळ इण्ड ररया
इद्र कापता बिरज उवारघो
गौ बछडा रखवाळ गिणी
भीरा विख अन्नत कर पोघो
अहि रा नोसर हार वण
ग्राह ग्रहन्ता गयद वचायो
स्रवण परेवी टेर सुणी
बाज पारधी सग विणास्या
जम मुख जाता ररया जणी
चौ कानी आपद द्रग चौधे
हरिणी हरि रो नाम रटघो
वाधक घातक सभी विलाया
कहता पहली कस्ट कटघो
सुमरधां सजग सामनं सो की
भोळा रो भगवान धणी
बुद्ध महान वचाया ज्यूही
दूध मुहानं ररयो वणी

प्रभु प्रभुता रो परचो दीधो,
 बिसरा किम अहसान वडो
 आगै पाछै ऊभा पडिया
 वीच वचावण हार खडो
 भगत वछळता धन-धन भगती
 हरि पातल रो हिए धरो
 आरया देखी असत न होवै
 खरा हेत भगवत खरो

△

दूहा

दुरगा सू वाध्यो वयर, जसवत मार जदीह
 औरग वेरो खोदियो, दिल्ली री डहळीह
 सेल घमोडा घमघम, धुक न मन मे घराह
 पोड पमगा घमघम, वाह दुरगा वाह
 दिल्ली रा भूभाग पर, वहता वाढाळीह
 भली वजाई करणवत, हेकरा हय ताळीह
 पळ गिद्धा रत जोगण्या, हाड भलें सिगाळ
 काग कळेजो, आसवत, रचियो भोजन साळ
 सिधू राग सुहावणा, तथी घनु टकार
 हड नचें, राठोड द्रुग, यू माण त्योहार
 वमत मनाई आसवत, हय भलें वाणास
 रण मे सोणित सू रंग, पिसुणा किया पनास
 भीसण ग्रीसम मूर ह्वें, प्रघळ तेज छित छाय
 दुरगें विन पाणी क्रिया, तुरक-तडागा ताय
 दळ-वादळ त्रिच वीजुळा, गमकें वीजळियाह
 दुरगो पावस ज्यू सजें, वहवें रत थळियाह
 सरद चद सू तू सरें, आथ्या ही उदियोह
 यस उजवाळो आमवत, मुदिया नह-मुदियोह
 भिड दुरगो मंमत भड, हद छाई हेमत
 कपाणी केव्या चढी, थरथरता रद-पत
 खाडाहळ खाडा करें, रगता पिचमात्र
 रूढी विघ फागा रमें, दुरगो मंगट्ट

रघुराजसिंघ हाडा

जनम स्थान	चमलासा (खानपुर भालावाड राजस्थान)
जनम तिथि	३१ मार्च सन १९३४ ई०
पिताजी रो नाव	महाराजा सकरसिंघजी हाडा

राजस्थानी भासा रा दिन भलेरा समझणा चाहीजै के रघुराजसिंघ हाडा जिसा मनमोवणा कवि तलवार रा घणी बणता-बणता बनम रा घणो बणग्या, भवानी री ज बोलता बालता सुरसत रा गीत गावै लागा । छँ बरस री काची उमर मे ही जिण नै फौजी स्कूल मे भरती करा दियो जावै उणरा जीवण बखत री फेरदळ रँ साथै क्या पसवाडो फेर'र कवि रूप मे प्रगटै या रघुराजसिंघ री आपबीती बात है । गावा म समाज शिक्षा रो भार ल'र उण'र भली भात निभावण वाळा रघुराजसिंघ शिक्षा रँ विकास रँ साथ-साथै आप री जादुमती कवितावा सू लागा रा हिवटा रो विकास भी करै । हाडोती रँ गावा म हजारो लाग आप र गीता न सुण सुण'र प्रेरणा लेवै । देस प्रेम अर निर्माण रँ अलावा लोक सिंगार भी आपरो प्यारो विसय है । बाळपण रँ दुख दरद री याद आज भी आपरै गीता मे आसू बण टळक, जिण नै सुण'र भाबुक लोगा रँ काळज टीस उठ । आज रँ राजस्थानी मच पर रघुराजसिंघ हाडा रो नाव ताळिया री गडगडाहट मे गूजै । 'हरदोळ' अर वामण' आपर राजस्थानी गीता री अणछपी पोथिया रा नाव है । छप्योडी पोथिया 'अण बाच्या आखर' घु घरा' अर फूल केसुला फूल' नाव री है ।



गीत

घान ऊग्यो धरती पै हिवडं हासी कळी
काळा-काळा वादळ मे गोरी गोरी बीजळी
कण-कण को रूप बढयो, हेताळू भाव बढयो
चोमेरू चाव चढयो रे
सतरग्या धनक चढयो, इन्दर जग जीत चढयो
कठा स गीत कढयो रे
हरियाळा घू घट मे मारी सरम की
धरती आखडिया मीचली
काळा काळा वादळ मे गोरी गोरी बीजळी
सेळी सी वाळ वागी, आगण उमग जागी
काठळ छे रगराती रे
पी पी की धुन लागी, जादू सो ढळकाती
काळजिय कुण आगी रे
ढम ढम ढम ढमक ढमक ढोलरुडी वाजी
पायळडो छम छम की चीतलो
काळा काळा वादळ मे गोरी गोरी बीजळी
खेता की मेर हसी, वरखा उगेर हसी
गोरी मुख फेर हसी रे
पुरवाई प्राण भरी माटी वरदान भरी
महनत का मान भरी रे
म्हाने पमीना का बीजा दिया अर
मोत्या की खेती खीचली
काळा काळा वादळ मे गोरी गोरी बीजळी



गीत

रात कर रखवाळी, काटें परभात रे
चदा कै खेत खडी तारा की साख रे

वादळ मे रग दुळें जळ जावें रूप रे
सूरज की जीव वळ धरती ले धूप रे
कुण सेजा माण रही, कुण को सुहाग रे
चदा क खेत०

हीरा की खान खुदै रह जावें धूळ रे
माटी को प्राण पी'र हासै छै फूल रे
जग भर नै जोत मिलै दीपक नै राख रे
चदा कै खेत०

मन कुण पै वार दियो, तन कुण कै हाथ रे
कोई को पळ पळ छै, कोई की रात रे
हथळैवै चक दियो मेहदी को दाग रे
रात करै रखवाळी, काटें परभात रे
चदा कै खेत खडी तारा की साख रे



फागण आयो रे

दग्या मे मोती आरचा, धरती न केसा सारचा
सुनैरी चूदडी रे धू घरा सण वाज्या
वेला कै हीदै वायरो मचोला ल्यायो रे

फागण आयो रे

पराघट प रग छायो, गीता मे चग आयो
म्हू वीत्या दिन भूल्यो, रसियो भूम गायो
सरसू पै म्हार लेखू, घणू सोनू छायो रे

फागण आयो रे

गोईरै बैठी गाया, फागण गाती वाया
सुहाणी घणी लागै, कोयल वोल टाया
सकुळ आवो फूल्यो, भीणी गध ल्यायो रे

फागण आयो रे

कण-कण फडक छ, रे डोडया तडकै द
अं सीळी सीळी राता, पानडा खडक छ
मरोडा खाती मचली, उमगा ल्यायो रे

फागण आयो रे



रतनलाल दाधीच

जनम-स्थान बीकानेर
जनम सवत १९८६ वि०

राजस्थानी भासा रा थोडा ही कवि इसा है जिका
सस्कृत साहित रो कायदे मुजव अध्ययन करघो होवे ।
रतनलालजा ने भो सोभाग मिल्यो है । व आज भी सस्कृत
महाविद्यालय रा अध्यापक है । 'साडी के छोर' नाव नू आपरी
एक पोथी हिन्दी म छपी है । राजस्थानी मे आप फुटकर
गीत लिख्या है जिका री बानगी अठे दी है । सस्कृत साहित
री गम्भीरता अर मजावट री छाप आपरी रचनावा मे उतर
घाई है ।

△

दीप सिखा कैवै है

नभ र आचळ मे
लुळ भूम-भूम
दो च्यार वेर
तम री छाती चीर
दामणी फेर
कळायण मे रवै है
मिल जावै पध
काटा रो पय
उतरघो सो मन
बढता सा डग
पलका रो घण-बोळ
वेदना सवै है
सुख रो अतर
दुख रो अतर
भ्रमै काळ रो
चक्र निरतर
काळी राता री, भोर
कथा स्वय कैवै है
तडप री, अलवेली सी वात
प्रीत री तरसाणै री जात
पुसप भवरा रा आसू पी
खिलावै अपणो सुंदर गात
भवरा मधु तरसावै जी
प्रीत करणा मे वैवै है

थिर सत्ता

अवर । ऊभो ताक, पखेरू उडता रहसी

लह लह जासी खेत, कूपळा आसी जासी

उजड्या रहसी माळ, पानड्या भडती जासी

गुडता रहसी चक्र, जमाना पलटा खासी

पण भावा रा पाल, वायरो भरता रहसी

अवर ऊभो ताक, पखेरू उडता रहसी

खिलता रहसी फूल, कळ्या भड जासी कोरी

रुदे भतूळ्या वड, मलय री ठडी मोरी

धिरसी काळी रात, चचळा कामण गोरी

पण, पापा रा सदा वळीता वळता रहसी

अवर ऊभा तारु, पखेरू उडता रहसी

कदे लेखणी मद, कदे तूफान मचासी

रुदे कलपना साच-भूठ मे गूथी जामी

आदरसा रा कदे पुजारी ठोरु खासी

दिव रा वोभल वाट रात सू लुळता रहसी

अवर ऊभो ताक, पखेरू उडता रहसी

जीवण होसी तग, काळ री खिडक्या खुलसी

धधकैला वै कुण्ड—जीवरी सासा ढळसी

घण-विघ होसी रोस, उडती पाखा वळसी

अवर ऊभो ताक, पखेरू उडता रहसी

△

राजश्री 'साधना'

जनम-स्थान कोटा
उमर वरस ५१ ई नेडी
पिताजी रो नांव श्री जोरावरसिधजी

राजस्थानी साहित्य भर राजनीत रा मोटा पण्डित
भर देस रा नामी क्रान्तिकारी राजस्थान-वेसरी वारठ वेसरी
सिध रो नाव किए सू छानो है। साधनाजी वारठजी रा भाई
श्री जोरावरसिध री बटी है। आपरा पति श्री फतहसिधजी
मानव' राजस्थान राज रा मोटा पदाधिकारी भर षणी
साहित्यिक रुचि रा मिनस है। दोनू पति-पत्नी साहित्य री
चरचा म षणो रस लवं। साधनाजी र जीवन पर वारठ
वेसरीसिधजी र ऊजळ चरित रो पूरा भरसर पडघो है।
टावरपणू सू ही आप वारठजा र वनै रह्या जिक सू दस प्रेम
भगवान री भगती भर साहित्य-रचना रा सस्वार आपन
मित्या। वीर भर सात रस म आपरो मन षणो रमै। आप
सात रस रा अनेक पद बणाया है। आपरा पद राजस्थानी
महिला समाज म मीरा भर सम्मानवाई री परम्परा न
निभावण रो काम करै।



पद

कान्हजी क्रिए विध अळगी होऊ
पलका वाट वुहारू, आमूडा आगणियो घोज
सावळ पळ भर दरस दिखाओ नैणा दीपक जोऊ—कान्हजी०

मारगियो अवडो रे माहन, रैण अन्धरी थाय
जग-काटो भारी विच माहे, म्हासू लघ्यो न जाय

था विन दुखडा रो मुख जोऊ—कान्हजी०

पग पावडिया हाथ विध्याऊ, हाथा ऊपर फूल
धीमो धीमो हाल वाळूडा, चुभसी रेखा-फूल

चिन्ह-चरणा री माळा पोऊ—काहजी०

थार विन जिवडो नह रहसी, जासी पिजर तोड
लोय समासी, ढील न लासी, वैठे नी मुख मोड

प्रेम री अमर वेल वोऊ—कान्हजी०

△

कवित्त

मखमल जाण सूतो रह्यो पीवण रो सिराणो देव
विस री उसासा, मधु मान, मन खाई है
गमायी प्रभुताई सारी मोह री पिटारी माह
गई मति मारी, भारी आतमा भुलाई है
सोनै री कटारी वणा, साहणी सुहावणी-सी
आप रै ही हाथ आप हिया माह खायी है
अर मतिमद नर रुडो प्रतिवध थारो
जाणतो अजाण मणि हाथ नू गमाई है
कुणसो मुकाम धन वाम देह गेह थारो
नेह वाधि फूस री पिटारी माहि सूतो है
ठेल-ठेल पेल रह्यो, जीवण अमोल दिन
ममता री घाणी रा जुवाडा माहि जूतो है
आपो खोय आप लखि, टळ ज्यू चौरासी लख
वापो भूल बठयो, अघ पूत नू कपूतो है
वेळा है अज भी चेत खेत सूख रेत भयी
साभ पड्या मीत रा करा र माहि नू तो है



पद

नन्दलाल ! आबो तो जोऊ थारी वाटडी
 सोना रा रूपा-रा पात्र म्हारें है नही रे कान्हा
 म्हारें तो स्याम ! एक चदण-री काठडी
 में तो हू गरीब घण, दीन औ मलीन प्रभु !
 जीमो तो स्याम ! म्हारें वाजरी री घाटडी
 दिल री पुकार सुण आबो जे सावरा !
 भूलण मे प्रेम-डोर नैणा हदी पाटडी
 'साधन' सदा सभागी नित ही पुकारै कान्हा !
 मिलबा नै आज्यो स्याम ! जमना री घाटडी

पद

जागता पुरख न आदेस
 माई ! असो लिया रे जोगिया भेस
 माळा नही, कमडळ नाही, न है भोळी हाथ
 गयी नहि वन मे, गयी नहि तीरथ, जग-सू नवायो है माथ
 काया मे बसियो है भवर प्रलोभी, इणसू ही तजियो यो देस
 कुण प्राणी सूतो, कुण प्राणी जागै
 सरवर सू पछी प्यासो ई भागै
 यो जग सपनो, साचो सो लागै
 जाळ फस्यो पछी भागण लागै
 दीसत आधो हुयो रे वटोही, असी या माया विसेस
 तन रग दीनो, मन रग दीनो
 रग दीनो सील-सतोस
 जलम-जलम रा करम रग्या मे
 जब लग रयो कुछ होस
 अब तो मुख रै ही 'साधन' सागर कट गया सरख कळेस

△

डा० रामदेव आचार्य

जनम स्थान वीकानेर

जनम तिथि १ मार्च सन १९४५ ई०

डा० रामदेवजी कई बरसा सँ स्कूल कालेज री अध्यापकी करता आया है। सभी भात री साहित्यिक रचनावा मे आपरी रुचि है पण कविता करण म आपरो मन क्यू बिसेस रम। समाज री कुरीतिया अर अधबिसवासा पर करडी चोट करणवाळी आपरी कई कवितावा न समाज रो भला चावणिया सगळा मिनस सराहसी इण मे मीन मेस नी। ठेठ सँ सहरी वातावरण मे रहण र कारण आपरी रचनावा रो दापरो भी सहरी ही है। समाज रँ सोसका रा काळा कारनामा रामदेवजी घणा नेडँ सँ देह्या होसी जिव सँ ही घण दरद सँ दात पीस'र आप उणा रो भडाफोड वरघा है। आजकाल आप हिंदी मे नई कविता रँ मरम न समझणिया चोटी रा विद्वाना म गिणोज। आपरो आलोचक रूप भी घणो सराहीज। हिंदी कानी बिसेस भुकाव रहणँ सँ आपरी घणखरी रचनावा हिन्दी में ही मिल। आप अग्रेजी रा प्राध्यापक है।



राजस्थानी नारी

अबै तू छोड पुराणी राग
नीद नै त्याग

घरा सगीत सुणावै री
अबै तू देख जगत री नार
मिनख रै लार

कदम सू कदम मिलावै री
अबै तू जाग

वणी बच्चा री सिरफ मसीन
हिय मे भरघो गुलाम सभाव
कियो थारै साथै हर रोज
मिनख री पसुता मनबहलाव
घू घटो तोड, लाज नै छोड
चूडिया फोड

समै अब तन जगाव री
अबै तू जाग

करै मत चादडलै सू प्यार
सुणावै मत कुरजा रा गीत
भवर जद सपनै मे विलमाय
करै मत नैणा री परतीत
प्यार रा फूल वण्या है सूळ,
करै मत भूल

तन कविता समभावै री
अब तू जाग

आख सू आसूडा ढळकाय
मिटावै मत काजळ री रेख
अरी भीज्या नैणा मे आज
दुखी खुद री परछाई देव

प्राण मे घुटन लिया तू खडी
पगा मे पडी-
—पागडी सी पछतावेँ री
अवेँ तू जाग

जेवरा रे वोभेँ नं लाद
घरेँ मत अवेँ गुड्डी रो रूप
देख पूरव मे निकळयो आज
लिया सूरज चमकीली धूप
प्रळे ले हाथ, फिरण घर माथ
देस रे साथ
जिन्दगी तन बुलाव री
अवेँ तू जाग



सोनै रो सूरज ऊगैलो

चादी री किरत्या चमकैली
सोनै रो सूरज ऊगैलो

आ धरती कुम्भीपाक बणी
राखसजूणी री घात अठै
है तपै तावडा जुल्मा रा
सपना री ठडी रात कठै
उए महला पर जमराज खड्या
भुज-दण्ड लिया व्यापारा रा
आसू री वैतरणी वैवै
है खेत विछ्या अगारा रा

पीढी-पीढी पथ पार कियो
काटा, सापा सू लड्या घणा
पण बडी दूर सू चाल्योडो
अव मिनख सरग मे पूगैलो
चादी री किरत्या चमकैली
सोन रो सूरज ऊगैलो

मत करो गरव ऊचपण रो
ओ गरव-हिमाळो गळ ज्यासी
मत बणो समुदर सेखी रा
सँ बडवानळ मे जळ ज्यासी
मत उडो लोभ री पाख्या पर
गिगनार तळै मे भुक ज्यासी
मत हसो, हसी उए दिन होसी
जद चलती चक्की रुक ज्यासी
धोखा-धडी, मतलब-फरेव
छळ-कपट-पोल री गाठ खुली
अव बडी दूर नू चाल्योडो

ओ मिनख जुलम सू जूभंलो
चादी री किरत्या चमकली
सोन रो सूरज ऊगलो

जिन पिया खून इण माटी रो
व माटी मे मिल जावला
जिण लूटो धरती माता न
वै धरती मे धस जावला

सोन-चादी सू न्हायोडा
दूधा-पूता सू धायोडा
रुद तक अन्याय मचावला
अव इसो वायरो वाज है
जिण कोट वणाया मुरदा पर
उण नै मुरदा खा जावला

भूखाड वणा दो जीवण नै
या लाय लगा दो वाडी मे
पण बडी दूर सू चाल्योडो
अव मिनख फूल न सू घलो
चादी री किरत्या चमकली
सोन रो सूरज ऊगलो



नित राजस्थान जियो

सुख जियो हजारा बरस, खुसी सू राजस्थान जियो
सब जियो देस रा मिनख और भावी सतान जियो

आ जमी जियो, आकास जियो, अँ दरखत-रू ख जियो
मन मे घोरा री धरती पर मरण री भूख जियो
नित छाद्य जियो, नित जिया वाजरी, भुक-भुक खेत जियो
ऊठा-वैला रँ हेठ म्हारी चम-चम रेत जियो

कुमकुम-केसर रँ रग मे डूवी भाऊ-बीज जियो
रूखा पर भूला मे वँठी सावण री तीज जियो
नित माघ-फाग र म्हीना मे होळी री राग जियो
जुग जियो पोमचो मरवण रो, ढोल री पाग जियो

भूरोडै भुरजा मे मूमल री रुठी याद जियो
गळिया मे गिरधर नै जोवै, मीरा री साध जियो
म्हारँ आलीजै री अलबेलो ऊचो सीस जियो
ओठीडै सु ठगियोडी पणियारी री रीस जियो

राखी-पूनम नै भाई-बैना री नित प्रीत जियो
नित सास-बवू, देवर-भाभी नणदल रा गीत जियो
नित लहगँ और ओढगँ पर मडियोडा मोर जियो
म्हार वीकारँ रँ मेळै री नित गणगोर जियो

मारू वाजै रँ साथ-साथ, कडखै री तान जियो
हलदीघाटी मे मरणो माडचो, वै इ सान जियो
मूछा मरोडती रोबीली रजपूती सान जियो
जौहर री लपटा मे जळती सतिया री आन जियो

जिए पियो खून रो लाल बसू वो, वह हथियार जियो
जिए आजादी न जीती राखी वा तलवार जियो
चित्तौड़ जियो, मेवाड़ जियो, श्रीरा रो खडग जियो
जुग जाधारुँ रो किलो आर जयपुर रो सडक जियो
नित छल-भवर र ढोलक रो धीमी सी धमक जियो
नित डफा-रम्मता मे रमती मस्कृति रो चमक जियो
म्हारी पीढी रे लोग-नुगाया रा अरमान जियो
इए दुखी देस रे आमू मे जग रो मुसकान जियो
नित फूला सिरसा दिवस और कळिया सी रात जियो
म्हारी जनता मे नव नव जीवण रो बात जियो
वा याद पुराणी जिया और आर्ग रो आस जियो
भारत रे आर्भे मे गरि सा म्हारा इतिहास जियो
सुख जियो हजारो वरस गुसी सू राजस्थान जियो
भव जियो देस रा भिनस और भावी सतान जियो



स्व० रामनाथ व्यास 'परिकर'

जनम स्थान वीकानेर
जनम तिथि १५ मई सन १९२६ ई०
पिताजी रो नाव श्री बालमुक्तादजी व्यास

स्व० रामनाथजी र साहित्य री प्रेरणा स्रोत घणा ऊडो अर प्रसिद्ध है । राजस्थानी जागरण रा सगळा सू मोटा महारी स्वर्गीय श्री सूरजकरणजी पारीक र आप भतीजा हा । पारीकजी री चौमुखी प्रतिभा, अर कविता, कहाणी नाटक अर अनुसंधान र विसया पर लिखी वा री अनेक पाधिया रै प्रकास मे परिकरजी र हिय रो बचळ खित्या । बालज री पढाई सतम करता करता राजस्थानी काव्य रचना री लगन आपरै मन म समागी ही । 'रगत भवर' हिवडै रा बोल', 'जीवण जागै'—अ नाव है आपरी अणछपी काव्य री पोधिया रा । कवीन्द्र रवीन्द्र री गीताब्जळी रै आपरै राजस्थानी अनुवाद री तारीफ घणा विद्वाना करी है । राजस्थानी सस्वृति री ऊची परम्परा अर लक जीवण री निस्छळता री प्रभाव आपरी रचनावा मे भळक । आपर सव्दा मे घणी प्रोढता अर विचारा म घणी गहराई है । 'मनवार' नाव सू आप री रचनावा रो सग छप्याडा है ।

मास्को (रूस) मे रहता आप राजस्थानी र प्रचार प्रसार रो घणो काम करघो अर बठै आपरी घरती मे कम उमर मे ही प्राण दे दिया ।



कोट-दरवाजो

याद घणो आन है
परदेसा बठचा नै
दरवाजो कोट रो
टावरपण सू जाणू
एक बडो, दो छोटा
दरवाजा पचाणू
पण, कीया ?
एक वार—
वाई री गोदी में
मोदमगन जद चाल्यो
सामी आतो कतार
ऊटा री जायी जद
मन भायो त्वराळो
नखराळो टोडिया ।
गळ में धूघरा
गणमणगण गूज हा
मन म्हारो नाच्यो हो
चाव घणो चित छायो ।
वाई पण डरती सी
पसवाडै दास पर
लेय मनै ञभी ही
टोडियो हा देख

मनडै रो म्हारो जद
 आय थम्यो सामो हो
 हू तो, पण भोळो हा
 गळै रो घूघरो
 लेय लियो हाथा मे
 वजावण लाग्यो वी
 होट अडचो माथै रै—
 वाई जद किरळाई
 अटक्या सै वेतोडा
 आसपास, टोड फिर
 मिलणै मे अडास
 हू पण, वाई नै
 बिरळाती जोय जोय
 कूकण नै लाग्यो हो
 लोगा दी लाठी री
 टोड रै काना मे
 चमक-चमक
 उछळ-उछळ
 मिळवा नै म्हारै सू
 टोडियो दोड-दोड
 आतो, पण लोग
 हुया गू गा सा
 नी समझ्या
 म्हारी मनवारा ।
 टोड रै गळ घूघरा सू
 रमण री वात घणी
 हाल मनै चेतै है

जदे कदे देखू इण
 दरवाज कानी हू,
 बारवार दिरस वो
 दोसँ अर मन म्हारो
 नाच है।
 लोगा री गू ग मायै
 वाई री चीख सागै
 टोडियै रो प्यार म्हारो
 नस नस मे व्यापै है
 याद घणो आवै है,
 परदेसा वँठा नै
 दरवाजो कोट रो ।



सरद रो अभिसार

जद सरद सोवणो चादडलो ले मुस्कावै
रातडली हस-हस उफण-उफण रै जावै है
ससार प्राण रो, जगमग-जगमग प्यार लिया
जद ल्हेर-ल्हेर पर जोवनियो लैरावै है

सीतळ किरणा री मधरी रसभीनी आभा
नित नभ रो नुवो-नुवो सिणगार सजावै है
उण काची-कवळी कळिया रा होठा मायै
वो प्रीत-नूवटो मुळकण भर मुस्कावै है

अळिया सू कळिया रूठ-रूठ मुखडा फोरै
दोलै री मीठी मनवारा नै पावण नै
रुत री राणी सुकवार वणी ज्यू अलवेली
वा मन रो धन ले चली हिया वस जावण नै

हरियाळो-पीळो ओढ ओढणो रुत रुडो
इण जीवण रो वरदाण अमर पा जावै है
कण-कण मे मन रा भाव भरचा सम्मोहन सू
वो उणमादी अभिसार लुटाया जाव है

वा धवळ-सेत-गिर री वावा मे उळइयोडी
लोलै आमर री मेघपरी सरमावै है
अळसायै मधुवन-कुजा रो कळिया हसती
इण नुवी वीनणी रो धू घट सिरकावै है

सित-मद-गुलावी मलय वायरो रै-रै भल
पिय-मितलण-सनेसो होळै-होळै आ देवै

कुमलाई आसा, रँ अटकयोडा प्राणा मे
 नवजीवण रँ विसवास फेर पूगा देव
 सूनो आभो सच्योडै इमरत-कळसै सू
 मन भकभोळै, आमीधारा वरसावै है
 जिण सू कुदरत रँ सुगणं आगणियं माथं
 रस भर जोवन रँ नुवो रूप प्रगटावै है
 भर चाव नुवो, भाला देती वा मतवाळी
 सिणगार सजाया अकनकवारी नाच है
 रितराज सजन रँ काज, मान री मनवारा
 ते सरद-कामणी नेव सनेसो वाचं है

Δ-

मन-सूवटियो

सोनळ पीजर काया कळप
अतर मे, आसूडा टळकै
मथर बोल, मन मे वस जाय
रग रूडो, तन कैद कराय
घणा गुणा, गुणवान गळे
तानसेन, डोढिया पळे
तानी रोवै, वन-वन भाय
जीव अळूभै, अतरदाय
पाख खुलै वद, पर आधीन
कुण वाटे दुख, दीन मलीन
वूभै कुण, मनडै री बात
सूकै सगळा, जोवण स्वाद
जाणै सदा, परायो भेद
किण सू कैवै मन रो खेद
कपट करै, चित राखै गोय
पिरगट कदे, करी ना राय
म्हारो मन, पण थारै मान
पडचो कैद मे, जगरी जाण
मन-सूवटिया, म्हारी मान
दुखडो रो रो, नेक वखाण
महलायत रो हियो पसीजै
पीजर खोल्या, जीव पतीज
जे उठसी, हिवडै मे हूक
कुण सिल छाती, करसी चूक
सुर मे सगळा प्राण जगाय
कर ऋदण, जन रै मन भाय
कळप-कळप, दे जगत रुवाय
जिणसू मुगत हुवं आ काय
फेर हरख सू, उड वन भाय
मगन सूवटी-सुरता भाय

रामसिंघ सोलंकी

जनम स्थान भोलवाडा

जनम तिथि १७ अगस्त सन १९२४ ई०

पिताजी रो नाव ठा० श्री मदनसिंघजी

ठाकुर रामसिंघ सोलंकी आज री राजस्थानी रा उण विरळा लेखका मे सू है जिका प्रकासन सू दूर रया। कई वरस पैला स्कूल मे पढता यका जिण काव्य रचना री ला लागी वा कालेज जीवण म तो जागती रयी ही, पण आज तक अध्यापक जीवण मे भी साथ निभा रयी है। वीर, कर्ण अर हास्य रस री रचनावा आप कर। वीर रस रा सकडा दूहा आप रा बणायाडा है जिका डिंगळ साहित रा चोला-चोला दूहा सू टक्कर लेव। 'हेमन्त मालती' अर 'बाळक' नाव रा दो खण्ड काव्य भी आप लिख्या है जिका म सू दो बानभ्या अठ दी है। रामसिंघ री भासा अर भावा पर डिंगळ री परपरा अर सस्कृत र नाम रो पुरो प्रभाव है। बाळक' नाव र काव्य मे सिसु स्नह रा जिको विसय आप चुण्या है वो आपर हिरद रा भावुकता री परचो देव। आज कितक कवि है जिका इसा निरमळ अर बेलाग विसया पर कलम चलाव ?



इहा

वाप कट्यो, मायड बळी, घर सूनो जाणीह
पूत अगूठो चूख नै, राखै निगराणीह

पिउ किरा विध पूजन करू, तन-तन खग टीकोह
केसर रग राचै नही, कूकू रग फीकोह

सुरपुर तक निभ जावसी, या जोडी या प्रीत
सखी पीव रै देसडै, सग बळवा री रीत

सुत गोदी आवण चह्यो, मा जद वैठी आग
दाग न दे कुळ पूत बळ, विण खाया सिर खाग

सुणियो पिउ विण सिर लडै, जा आऊ भट भ्राख
दोय घडी रै वासतै, पछी दे दे पाख

हू चाली भट आवज्यो, वू मत करज्यो देर
खूटी पर कूची पडी, कोठा मे नारेळ



हेमंत मालती 'रा सोरठा

रूडी विस री रीत, पीता ही पड जावणो
पण पापण मधु प्रीत, घुट-घुट मरणो मालती
नह गेला नह घाट, नह खाणा नह पीवणा
पसुआ सू नपराट, मनख जमारो मालती
वन रा हाय विहग, उड-उड भी घर वावडे
हू नभ कटो पतग, मग डूली मधु मालती
नयण घीव, उर आग, नुख हासी, मन रोवणा
रोज रोज ई राग, म्हासू निभै न मालती
दरद न होसी दूर, यो नह कर, पद, माथ रो
हिवडा रो नासूर, मरिया मिटसी मालती
मद पीधा मन मार, विस पीधा था विसरवा
पापण प्रीत खुमार, मिटो न अरे मधु मालती
नह वचपण री वेळ, नह मोट्यारा डोकरा
थारा म्हारा मेळ, मरिया पाछ मालती
पग-पग मच्चियो कीच, भिरमिर वरस वादळी
वहता सावण बीच, मन मुरभावे मालती

बालक री मुलकाण

यो मुरभि पळक प्रत्यक्ष अरे
वाळक रै अघरा लियो रूप
यो देव-वना तरु-तरु पराग
घरती पै भरियो रे अनूप

या आज अचाणक फूट-फूट
सिव-सिर सू दुळकी गगधार
जग-अघ सब गळ-गळ ह्विया नास
भव-सागर जण-जण कियो पार

या भाग अमावस गई फाट
ऊसा रो आचळ गयो छूट
तारा सू तारै करी वात
दुख भो रो सपनो गयो टूट

मनु रैण गुवारै रग आज
जिण तिण रा नैण रया खीच
गौरी कर सकर चढ्या फूल
सद्धानत सिर अर नयण मीच
आख्या रै आगै गई दीख
मायड रै उर रो थिरक एक
कामण मद री मनवार पहल
प्याल सू छळकी भरी नेक

यो पळक भाकियो चाद आज
वादळ र पडद बीज रात
तरसै जिण हिन्दू मुसळमान
दरसण नू जग री जात-जात

वरसा-बरसा तक मून लेय
अर जोग-जोग रा जोर मार
मुनि अरे अचाणक कियो आज
उण अलख जोत साक्षात्कार

या एक हवा री लहर दीड
 पूरव सू पच्छम गई जेम
 या एक लीरकी रेसम री
 वस लहर-लहर सी गई तेम

या तरिक हवा री हळचळ म्
 इक ओस वू द ज्यू कमळ पात
 दुळकी रे दुळकी ठमी-ठमी
 रमगी रे रमगी पूर्ण पात

इण एक मुळक मे मधुर प्यार
 घरती पे परिया रा विहाण
 या धवळ चादणी धार अरे
 उर-उर मे मिळ-मिळ सुधा सार

इण एक मुळक प्रभु महासान
 इण एक मुळक ब्रह्माड ज्ञान
 इण एक मुळक जग प्राणदान
 इण एक मुळक निसि मे विहान
 इण एक मुळक मे राज पाट
 सुख अर सपत रा सहस दान
 इण एक मुळक सब ठाट वाट
 सासण सत्ता रा महामान

इण एक मुळक मे वजूपात
 जग छळ छदा रा निपट नास
 इण एक मुळक ब्रह्मास्व जोग
 रे कपट भूठ रा महाहास

इण एक मुळक भूखड डोल
 उर-उर र ओगण करं ध्वस
 इण एक मुळक विप्लव अनेक
 पर दुख दरदा रा मिट अस

इण एक मुळक मे सहस नाग
फुफकार कर रया है कराळ
या धूजै धग-धग मीत आज
रग-रग कप रे महाकाळ

इण एक मुळक मे विजय घोस
जीवण री सत्ता रो अणत
मिरतू री मिरतू नास-नास
रे ह्हास-ह्हास रा धनु तणत

इण एक मुळक बळहीन होय
बम राँकिट रा सब कळ विधान
कटु माणस अतर जाय टूट
रागस उर लागै बाण-बाण

ये खड खड विध्वस घोर
रे महाजुद्ध निज व्यग हास
या देस-देस री घाक खीण
वाळक रै टळमळ मधुर हास

जीवण री सत्ता मिटै किया
ये किया रुकै रे सुघड सास
परळै रा परळै गया आय
पण अमर-अमर ये मधुर हास

△

रावत सारस्वत

जनम-स्थान चूरु (राजस्थान)
जनम तिथि पोद्द सुदी पून्यू सवत १९७६ वि०
पिताजी रो नाव श्री हनुमानप्रसाद सारस्वत

आज मू कोई ४१ बरस पैला रतनगड रिसिकुल रा एक स्नातक बीकानेर राज रा सहृा म काव्य रचना री जात जगाई । जठै जठै वै अध्यापक बणा'र गया अथवा सम्मेलन या और किछी काम मू गया बठ-बठ कविता मे रुचि राखण हाळा लोगा री पगत री पगत खडी हागी । वो बखत हो हिन्दी रै छायावाद री जवानी रा । छायावाद री उण लहर न उण बखत रै बीकानेर मे विस्तार देणै रो काम उणा रै हाथा पूरो हुया । उणा रो नाव है श्रीरामनिवास हारीत । हारीतजी री प्रेरणा मू जिका लोग कविता करणो सीख्या भर भाग ताई उण सीख न निभा पाया उणा मे मू एक रावतजी भी हा ।

राजस्थानी साहित्य कानी आपरी रुचि रो स्रेय भी भाग जोग मू हारीतजी नै ही है । बीकानेर राज रै जुनै महुत्ता मे भनूप सस्कृत लाइब्रेरी नाव रो एक धणो भोटो भर महत्वपूर्ण हस्तलिखित ग्रन्था रो सग्रह हो । हारीतजी उण रा पुस्तकाप्यक्ष हा । कालेज छोडता परात हारीतजी ही जान उण पुस्तकालय म आपरा सहायक बणा'र रखवा लिया जठै चार बरस राजस्थानी रा हजारा ग्रथा री छाणबीण करण रो मौको मिल्यो । उण बखत मू हो रावतजी राजस्थानी री बहुविध प्रवृत्तिया मे रस लेवण लाग्या । आपरो प्रिय विसय तो भनुसधान ही है पण कवितावा भर उत्तम काव्या रै भनुवाद म भी पूरी रुचि राख । मरुवाणी' नाव मू छपणहाळै एक माह्वारी छाप रा सपादक भी आप है । आपरा सपादित ग्रथ दस मू भी बेसी है ।

राजपूत रो डावड़ो

मा ! मैं रणखेता जास्यूं

वाबोसा रो वखतर ल्याद्यो
बो खूनी खाडो मगवाद्यो
म्हार घुडलै जीन कसाद्यो
रजपूती रा ठाठ सजाद्यो

अव लडवा मरवा जास्यूं, मा!
खूना रा समद बहास्यूं, मा!
मैं रणखेता जास्यूं ।

वखतर यो वादळ वण ज्यासी
यो खाण्डो वीजळ चमकासी
पून-वेग म्हारो घुडलो जासी

वस सरव नास कर आस्यूं, मा!
जीवण रो फळजद पास्यूं, मा!
मैं रणखेता जास्यूं ।

बहनड अकनव वार ! उतारो
आरतडो रजवन्ती ! म्हारो
ओ रोळी री टीको थारो
लोही मागैला लाखा रो

टीकै री लाज रखास्यूं, मा !
बहनड रो प्यार चुकास्यूं, मा!
मैं रणखेता जास्यूं ।

△

जीवण दीप

जीवण रो दीप जळ
छोटी लोय लगन परा मोटी
धूओ घण उगळ
गाव उजाळो घर अधियाळो
आपणो आप टळ
जीवण रो दीप जळ
झिलमिल-झिलमिल वाती उळसी
तिल-तिल तेल बळ
हसतो जाग्या बुझती रोतो
ज्यू-ज्यू रात ढळ
जीवण रो दीप जळ
माय जळ अर जळ वारण
ऊपर, बीच, तळ
दीप जळ'र, जळाव दुनिया
ओ के प्यार वळ ?
जीवण रो दीप जळ
आयो सळभ प्रम मदळकियो
मिलवा नै मचळ
ओ गला माटी रा वासण !
मिल भर वाथ गळ
जीवण रो दीप जळ
रस कस लुटग्यो ठाली ढोकर !
तेरा किया फळ
लाख जतन करले कोई, ना
विध रा लेख टळ
जीवण रो दीप जळ

□

ओ कुण लुक-छिप आवै

नए रिभावं, मन हुळसावं, हआ रास रचावं
ओ कुण लुक छिप आवै

सोयी धरण जगावं, आगणिय हीगळू दुळावं
पाख-पखेरू गीत गुवावं, किरणा नाच नचावं
साभ-गिगन मे राग-रगीली छिविया कुण चितरावं
दूधा धोई रातडली मे कुण इमरत वरसावं
ओ कुण लुक-छिप आव

सासा री सोरम सू भोळा वायरिया बहकाव
फूला फाग मचावं, हरिया वागा न महकाव
कळिया न इतराव, लोभी भवरा न विलमावं
आवलिय री डाळ उणमणी कोयलडी कुहकाव
ओ कुण लुक-छिप आवै

काजळिया नणा री कोरा मे वठयो सरमाव
फूल गुलाबी मुखडै पर क्यू लाज गुलाल लगाव
अगडाया सू छेडै, दरपण मे गुपचुप वतळाव
अची मेडी लाल पिलग रा सुपना मे भरमावं
ओ कुण लुक-छिप आवै



रेवतदान 'कल्पित'

जनम स्थान	मथाणिया (जोधपुर)
जनम तिथि	चत सुदी १ सवत १६८१ वि०
पिताजी रो नाव	श्री भैरू दानजी

रेवतदान राजनीत रा खिलाडी घर कविता रा कारीगर है । राजस्थानी नै मचा पर साबासी दिरावणवाळा कवियां मे आपरो नाव सिरै रो पगत म है । आपरै सब्दा रो चुणाव घणो फूटरो घर भावा री मस्ता घणो मीठी है । सामतां घर साहूकारा सू चूस्योडा, करसा घर मजदूरा रँ दरद सू छळकता आपरा गीता मे क्राति रो जोसीलो सदेसो भरघोडो है । गावां घर खेता रँ पिछोकड पर रच्योडा ऐ गीत साफ वतावै के गीतवार उण जीवन म रम्योडो है जिण री पैरवी वो खाली काव्य म ही नहीं पण राज री अदालता मे भी करै । कवि र जीवन रो एक दूसरो परख भी है जिण म वो मिनख अर कुदरत र सिणगार रा सरस अर सोवणा गीत भूम भूम'र गाया है । 'चेतमानखा' नाव री आपरी छप्योडी पोथी मे इण दोनू भाता रा गीत भेळा करघा गया है । राजस्थानी न जे कदे इण रो खायांडो आसण मिलसी ता रेवतदान जिसा कविया रा याद न सिरोपाव जरूर दिया जासी ।



राजस्थानी

मान विना विलखी मन मार डौड ऋड कठा री वाणी

रातो रेत अ्रूजळी ऊपर अ्रूडो निरमळ सीळो पाणी
रज रज मे सुरापण भलक सतिया रा साचो सहनाणी
घडती सुभट थकी वेमाता जणता काड किया छनाणी
अ्रगन भळा तरवारा न्हावण री वा जग मे अ्रमर कहाणी
(पण) मान विना विलखी मन मारै डौड ऋड कठा री वाणी

हालरियै हुलराव मायड लाड-कोड सू गावै लोरी
अ्रुचक पून पालण सूत्यो टूट पडै हीडै री डोरो
चढता कटक वजी रणभेरी तारण जाय दियो कवि तानो
मोड खोल गठजोडो खोत्यो पहर लियो केसरिया वानो
एकण छद अलेखा माथा घड लडयड लोही लूहाणी
(पण) आज रया रै राज अ्रडोली डौड ऋड कठा री वाणी

इण भासा रै पाण 'चद' कवि रच्यो वीर छदा मे रासो
जे 'चौहाण' दाव नह चूकै पळट जाय पिरथी रो पासो
'पीथल' लिखी 'पतै' नै पाती सधी रो सदेसो कडो
आखर वाच अचभै राणो कायर रूप रयो नी नडो
कवि रा बोल काळजै चुभिया राणे मौत मौत नी जाणी
(पण) आज लाज री वात देस मे निदरो जावै राजस्थानी



विरखा-वीनणी

लूम-भूम मदमाती, मन विलमाती, सौ वळ खाती
गीत प्रीत रा गाती, हसती आवं विरखा-वीनणी
चौमासं मे चवरी चढनै, सावण पूगी सासर
भरचं भादवें ढळी जवानी, आधी रंगी आस र
मन रो भेद लुकाती, नणा आसूडा ढळकाती
रिमभिम आवं विरखा-वीनणी

ठुमक-ठुमक पग धरती, नखरो करती
हिवडो भरती, वीद-पगलिया धरती
छम-छम आवं विरखा-वीनणी
तीतरवरणी चू दडी न काजळिया री कार
प्रम-डोर म वधती आवं रूपाळी गणगोर
भूठी प्रीत जताती, भीण धू घट म सरमाती
ठगती आवं विरखा-वीनणी

घिर-घिर घूमर रमती, रुकती वमती
बीज चमकती, भव-भव पळका करतो
भवती आवं विरखा वीनणी

आ परदेसण पावणी जी, पुळ देख नी वेळा
आलीजा रं आगणें मे करै मना रा मेळा
भिरभिर गीत सुणाती, भोळ मनडं मे भरमाती
छळती आवं विरखा-वीनणी

लूम-भूम मदमाती, मन विलमाती, सौ वळ खाती
गीत प्रीत रा गाती, हसती आवं विरखा-वीनणी



रैवतसिंघ भाटी

जनम स्थान	नरवर (किसनगड — अजमेर)
जनम तिथि	कातिक बदी अमावस, सवत १९५९ वि०
पिताजी रो नाव	ठाकुर जोरसिंघजा भाटी

लफिटनेट ठाकुर रैवतसिंघ भाटी न चारणा री सगत सू राजस्थानी काव्य रचना रो प्रसाद मिल्या । सुरु मे आपरी वचि राजभासा कानी ही जिकी म आप क्षत्रिय भजनावली, रामरहस्य गाहिल गौरव प्रकास, बीका चरित्र, जयमल चरित्र, लक्ष्मण विलास, छत्रसाल दसक अर चद्रसेन चरित्र नाव सू काव्य ग्रंथ अर अनक फुटकर रचनावा भी करी । डिगळ मे आप चार हजार ठूहा वीर रस रा लिखा हा जिका मे सू द्याट'र सात सी ठूहा री एक सतसई तैयार करी ही । रैवतसिंघजी री डिगळ रचनावा पर पुराणा चारण कविया री भासा अर भावा रो पूरो असर है, पण आप री भासा टकसाली जर प्रौढ है जिकी गेड कविया मे ही मिल । डिगळ रा आपरो ग्यान घणो भ्रू चा जाण पढै । राव चद्रसेन पर आपरो एक काव्य छप्योडो है ।

†



दूहा

नख डस डढ धर पचनख, दळण कटिण दताळ
धूस धूसक धीगडै, वणी धार धाराळ
पुळग चढर पाडोस पर, पीव पाण पडियाह
आनन मे अर-आगळ्या, धलसी घण घडियाह
दुभळ दुरगा ददृणा, वद-वद सह खग-वार
की वीदळ विग्रह करै, हय-नाळ्या हथियार
देस केम देसोत दे, समभै रज लग साव
रोकण धर-अणु रगत-हत, पळ-पळ करै पळाव
पह-पह है न पताकणी, तस मे अस न तुखार
रुपै रढाळो रटक रण, हिय हिम्मत हथियार
परव हुत पडता भ्रूण पव, भपट छुरी ली भाल
कोसी दायण जद कढया, लोयण आसू लाल
धान ऊमरा सेज धर, बलकल वसण बणाय
सदीव देस-सुतगता, राख अडियल राय
भौण भुरज परखा भली, ठम गिरा न ठावाह
हेरो गढ कोटा हुवै, चौटा सह चावाह
वल पसु अन विवुधा तणा, चित्त न मरणो चाय
समर सगत रा बळ सबळ, सगत मरण सिधाय
किम हेली ! भवरा कर धर भीतर गुजार
छड रै मदगळ छेदता, लग आयो मद लार
हमल-हल्ल सुण हीण खळ, पुळगा हुत पडियाह
हरि-हूकळ जण मुण हरी, गरटा हुत गुडियाह

□

लक्ष्मणसिंघ 'रसवंत'

जनम स्थान जालसू (नागौर-राजस्थान)
जनम तिथि १५ अप्रैल सन १९३३ ई०
पिताजी रो नाव श्री किसनसिंघजी राठौड

लारला पन्चोस छब्बीस बरसा मे, राजस्थान राज रे एकीकरण रे बाद, रजवाडा रे सीवा मिटता ही, अनेक कवि परगास्या । लक्ष्मणसिंघ भी इणी अरत मे साहित्य म प्रवेश करयो । गाव र राजपूत परिवार रा सस्कार अर हिन्दी रो विसेश अध्ययन दोना रे मेळ सू राजस्थानी काव्य रे रुचि रो जनम हुयो । भावुक उमर अर मीठो गळो इण ह'च न प्रेरणा दी अर 'रसवंत' साचाणी सम्मेलना मे रस बरसावण लाग्या । थोडे ही दिना मे पचास साठ गीत लिख लिया जिका 'रसाळ' नाव सू संग्रह कर छप्योडा है । नई पीढी रा नौजवान कविया म रसवंत रे जगा न्यारी ही है ।



मुरधर मू घी रैण

रात चादणी धोरा धरती, सोनो ज्यू वरसावै
 चावळिया पर चाद चौगणो रूपा रूप सरावै
 वाळा ओळा, दोळा भोळा दादी वात सुणाव
 सुणाज्जे, गुणाज्जे वात वावळा रातडलो ढळ ज्याव
 धूळकोट पर हरी हताई वावो वाता छावै
 छाप लगावै छपना पली रग पुराणा त्यावै
 सुख रै साग वाथ भरचोडी गीत सुरगा गाव
 मोठा बोलै बोल मोरिया धरती नाचै गाव
 चौवारै मे वंठ गोरडी गीता धोक लगाव
 नेह निचोई, रात भिजोई हिवड हूक जगावै
 रग रा आगण छोड डोकरी भजन भाव मे जाव
 नारायण र नेडी पेटी हर-गुण गाय लगावै
 तदूरा री तान सुणीज भीभा वाजै भीणा
 भजन वावळा बोल वाणी च्यार दिना जग जीणा
 गाव गवाडा टावर भेळा मांड कवडी पाळा
 दूधा धोई रात चादणी कुण कुण खेलण वाळा
 ठडी राता इमरत बरस, अळगोजा री टर
 मधुरो मधुरो वायर हरजी ! मुरधर दीजे फेर
 झूट चढचोडा गण घालता 'गारवद' गूथ, गाव
 'काछवियो' सरवरिय तीरा पिणियारी' वतळाव
 बोल वटाळ वायरियै बळ 'वायरियो' कुण गावै
 मारगियै कुण मुवरो चाल 'मूमल' रूप सराव
 धोरा धोरा राग उगेर, रामू चनणा गावै
 ढोला भरवण एक हिये वण, ऊट पिलाण्या जाव
 वर मूधा मागण री बेळा मागू मुरधर रैण
 मुलमुल धोरा रेत रगोली ठडी राता गण



बटाश्रू नै

जीवन में हर राख, हर मत हिम्मत

तन अनादी घा- गिन तरखावे,
बोवळ विमकें ना- मना डर आव

जाव काठळ दिन तन मानवी डर मत रे
जावण में ह- गन हा- मत हिम्मत रे
आगी पूळ व्यूळ मुलक नह नावे
आन मोच मन निनख नान नर ज्याव
पळट भूम अजूम खाड मन मत-मत रे
जावण रो हर राख हर मन हिम्मत रे

पूच तेवर नप जीव विनवाव,
तन अ पाचा तावटिप्र निड आवे

तपनी मारान मान तापनी नि-पत रे
जावण रो ह- तव हा- मत हिम्मत रे

सोयाळ रो गन मागना नावे
पण पगनाती जुवर परा पर ल्यावे

अगागिण मानो मान नानवा गिरु मत रे
जावण में हर गन हा- मत हिम्मत रे

समदर नहर घटूफ धरण डरावे
पिरथी पिण्ड पण्ट पावरी आव

ठाड पुराणी फळ पाप न मळ-
जावण ग हर राख हा- मत हिम्मत रे

विश्वनाथ शर्मा 'विमलेश'

जनम-स्थान भू भृगू (राजस्थान)

जनम तिथि कार्तिक बदी ७ सवत १९५४ वि०

पिताजी रो नाव श्री धानमलजी शर्मा

विमलसजी राजस्थानी म हास्य रस री रचनावा कर । सत पक्वानी', छेढखानी', कुचरणी' धर 'नो रस मे रम हास्य' नाव सू आपरा सग्रह निकळधा है । 'गीता' रो राजस्थानी अनुवाट भी आप छपवाया है । 'रामकथा' नाव सू रामायण र कथानक पर आपरो एक ओर पायी है । हिन्दी मे भी तीन चार पोथिया आपरो बणायोडी छपी है । कवि-सम्मेलना मे आपरो रचनावा रो रग चोखो जम । सेखावाटी बोली रा प्रयोग घणा होण सू आपरो रचनावा में स्थानीय रग घणो आग्या है । आज री राजस्थानी म हास्य रस री कमी न पूरी करणिमा विमलसजी भासा र इतिहास म आपरी जगां सुरक्षित कर रया है । सुधरै हास्य री रचनावा करण री खिमता हर कोई कवि र वस री बात कोनी । हास्य रो गुण जो विरळा लेखका मे ही मिलै । या खुसी री बात है के विमलसजी ऊचें दरज रो हास्य रचनावा कर पाया है ।



गांव

गावा मे घर-घर उमगारचो
 गळिया मे नर-नर हरखारचो
 भूग्रा वेळधा चाकी भोवें,
 घम्मड घम्मड दही विलोवें
 पाया पलो खोल ओवरी, घडस्यो कादो-रोटी खारचो
 खडी-खडी गा-भेसा चर री
 वर-वर धार दुहारा भर री
 लेकर जलम मरचो क्यू पाछो, दुनिया रो मालिक पिछतारचो
 हरखी-हरखी फिर कामणी
 भरी दूध री ज्यू कढावणी
 उठे कूरिये सै वुवासो, जग्य जाण वादळ भरमारचो
 करी किसाना मीनत पूरी
 इन्दर सेठ चुकाण मजूरी
 राजी हो-हो क विरखा री वूदा री म्होरा विखरारचो
 हळ ले चाल पडधा है हाळो
 घरचा टेचरा करे रुखाळी
 जा री हासी सुण'र, सुरग मे नन्द जसोदा सै वतळारचो
 भाग्या टीगर टिक्कड खाकें
 चुपक-चुपक कान लगाकें
 सुणें मोतियो, चिमनू काको अळगोजा पें मरवण गारचो
 नित्त वडी है, कण-कण वच
 घणो कमाव पण वण सचें
 जण-जण जोतें, कण-कण वोत्र मण-मण काट घरा ले आरचो
 साभू पडधा भेळा हो ज्यावें
 आप-आप री वात सुणावें
 भरी पडी चोपाळ, चौधरी हस-हस भगडा सळटारचो
 बीडी-चिलम-तमाखू पोरधा
 हासी ठठ्ठा करता जीरधा
 मेळ वडो, सै रहो मेळ स, वडो पच यो पाठ पढारचो

शक्तिदान कविया

जनम स्थान बिराही (सेरगढ़-जोधपुर)
जनम तिथि १७ जुलाई सन १९४० ई०
पिताजी रो नाव श्री गोविन्ददानजी कविया

सगतीदानजी पर डिगळ-परपरा रो पूरो असर है । काव्य रचना रो गुण आपन वापसीती म मिल्यो । याददास्त चोखी होण सू पुराणा कविया रा अनक छद आप कठा कर लिया । डिगळ गीता रै छद विधान री जाणवारी आधी होण र कारण गीतां रो पाठ भी आप भली भात कर सकै । पुराणा छद बणाण र साथ-साथ आप नय ढग री रचनावा भी सुरू करी है । आजकाल स्कूल कालेजा म होवणहाळा कवि सम्मेलना म राजस्थानी कविता री माग कई साहित्यिक रुचि रा विद्यार्थिया न इण दिसा म मोडघा । सगतीदानजी री नई प्ररणा रो स्रोत भी यो ही है । परम्परागत ग्यान रै साथ आधुनिक शिक्षा रो सू धो मेळ सगतीदानजी र ऊजळ भविष्य री मूचना देव । डा० सगतीदान राजस्थानी साहित्य री रचनावा रा सकळना रो मपादन भी करघो है ।

बिरखा लूबी जाय

विरखा लूबी जाय साजना

विरखा लूबी जाय

इए रत तो घर आय, साजना विरखा लूबी जाय
पप्पैयौ दिन । रात पुकारै, भुरभुर रैगयो जीव
मिळियो अैन घडी मनमेळू, पिउ पिउ करता पीव

पाव री सजोगी 'पुळ पाय

स्वात री वूदा ली सरसाय

विरखा लूबी जाय

पावस देख तेडियो प्रीतम, मन सदेसो मेल
आगण सूती एकलडी न, विरछ लपेटी बेल

बेलडी फूली नही समाय

भूमती लळलळ भोला खाय

विरखा लूबी जाय

फूला सू छायोडो फवतो, आयो सावण मास
धरणी रो साजन घर आयो, धरणी फिरै उदास

आसडी मनडै री उळभाय

गोरडी श्रूभा ज्यू गळ जाय

विरखा लूबी जाय

कोयल राग मलार सुणावै, भवर करै गुजार
विरहण जपं आय बालमा, सेजा रा सिणगार

तार हिवडै रा तूटत जाय

चादणी चादडलो मुसकाय

विरखा लूबी जाय

△

उडतो पछी

आगै बढाणो कदे न रुकणो भर मन मे द्रढ भाव रे
प्रीत रो सदेस पठावण, उडता पछी आव रे

आज जमानो झंडो आयो
भोळप सू मानव भरमायो
खुद रे हाथा बेला वोई
पाक्यो फळ जद मन पछतायो

गो नैणा रो सरम, मरम रा घट मे पडिया घाव रे
प्रीत रो सदेस पठावण, उडता पछी आव

खिलका माय अदावत खाटी
भाई-भाई रो जड काटी
अेरु दूसरे रो अटकळ मे
पातरग्या वडका रो पाटी

मू डे मीठा घट मे खोटा, दुनिया खेलै दाव रे
प्रीत रो सदेस पठावण, उडता पछी आव रे

तात सनेह वीण रो तूटी
वळगी हिय धीज रो तूटी
हुई रोळ मे टौळ, मनावण
दोज आण हेत रो घूटी

काळजिये किलमाणी कू पळ, चमन वध किम चाव रे
प्रीत रो सदेस पठावण, उडता पछी आव रे

जीवण पुसप जदे म्विल जासी
प्रेम मधू कळिया पुळकासी
मन भवरा हुळसाता रळमिळ
अवर धर वन मोवण आसी

खेवटिये विन भोला खाव, नेहडलै रो नाव रे
प्रीत रो सदेस पठावण, उडता पछी आव रे

△

शांतिलाल भारद्वाज 'राकेश'

जनम स्थान जोलपा (खानपुर-भालावाड)
जनम तिथि २४ जून सन १९३२ ई०
पिताजी रो नाव श्री कृष्णगोपालजी भारद्वाज

भारद्वाजजी रा रसभरघा गीत इण बात रा प्रमाण है के राजस्थानी भासा रो मिठास पूरव सू पच्छिम अर उत्तर सू दिखण ताई सदा अक सो रयो है। माळव रो सीव पर गूजता भारद्वाजजी रा राजस्थानी गीत माळव अर राजस्थान रो अकछन महाराणी राजस्थानी रो जंजकार करै। आज रो राजस्थानी मे मारवाडो रा कवि अर लेखक ही घणा दीखता हा, पण थोडा बरसा मे हाडोती अर मवाडी रा कई चोला कवि आग आया जिका सू राजस्थानी रो अप्पायत म बढ़ोतरी हुई। शांतिलालजी रो नाव उणा मे सिर रो पगत म है।

राजनीति विग्यान रा विद्वान होण पर भी साहित्य-सरजण मे आपरी रुचि ठेठ सू ही रही। आप हिन्दी म 'समय की धार' अर 'पानी अर पत्थर' नाव सू काव्य अर उपयास लिख राब्धा है। राजस्थानी म फुटकर गीत अर पद्यकयावा लिखी है। गीता न गावण रो आपरी कळा भी सखरी है।

हाडोती सोध सस्थान, क'टा रा निदेसक डा० भाग्दान हाडोती क्षेत्र रा कविया लेखका रा सकळन भी सपादित करया है। आधुनिक राजस्थानी साहित्य विषय रो एक पावी भी आप लिखी ही।

△

गीत

राता खटकें, गड आख मे काकरियो
दूर विदेसा गयो हठीलो सावरियो

फूल्यो फागण चैत आगएँ गाव रँ
फूल्या विन या प्रेम-बेल मुरभावं रे

रुच नही सिरणगार आस या फळ नही
हिवडो हुळस नही'क पास बुलाव रे
समझ्या समझ नही'क मनडो वावरियो
दूर विदेसा गयो हठीलो सावरियो

नीम आगण खेता पीपळ सूनी रे
विन चकोर यो चाद-चादणी सूनी रे
विन सिंदूर या माग सुहाग भरी सूनी
विन मूरत यो राग, रागणी भूठी रे
तू विन भावं नही धान को वाजरियो
दूर विदेसा गयो हठीलो सावरियो

तू आव तो भलो वायरो लाग रे
तू आव तो सपनो सुख को जाग रे
दुखी आख को काजळ भर-भर भर नही
तू आवें तो दरद गीत सू भागं रे
भूल्यो मीठा बोल वाजणो भाजरियो
दूर विदेसा गयो हठीलो सावरियो

△

गीत

आज धारी आस आधी
रात आधी वात आधी
वाट थारी देखता या रात पुळ-पुळ जात रे
रात आधी रात रे—वात आधी वात रे
तू नहीं तो आज फीको चादणी को रग
तू नहीं तो आज फीको वादळी को सग
तू नहीं तो वाट तकती आख भर-भर जात रे
रात आधी रात रे—वात आधी वात रे
एक में तडपू हसै या रात की राणी
एक में कळपू करै तू आज मनजाणी
तू नहीं तो आज घर आवै किया परभात रे
रात आधी रात रे वात आधी वात रे
कूक कोयलडी उठ हुळसै बसती खेत
गाव गूजै फाग चादी सी हस या रेत
तू नहीं तो आज मार घात मीठी रात रे
रात आधी रात रे—वात आधी वात रे



श्रीमंतकुमार व्यास

जनम स्थान लाङ्गू नागौर,

उमर ५१ बरस रै नेवी

पिताजी रो नाव श्री नानूरामजी व्यास

श्रीमंतजी री कविता म सहर रै उए समाज री

बुराइया रो नागो चित्र है जिण न वै धण नेड सू देख्यो अर
समझ्यो है। आपरै अकाकी नाटकां मे भो इण रो भडाफोड
प्रभावकारी है। कवितावा रै अलावा 'रामदूत' नाव र खड
काव्य म आप रामायण रै वीर हणूमान री महिमा बखाणी
है। 'अळगोजा' नाव सू आज र राजस्थानी कविया रो अेक
सग्रह भी आप रो छपवायोडो है। राजस्थानी-जागरण रै
आदोळण म आपरी रुचि अर लगन सराहण जोग रही है।



मिनख बरण नै जी

तू जी भलाई अक दिन

परण मिनख बरण नै जी

डवडवा जाव, हुवै गळ-गळ हियै री पीड सू
चौसरा चालै, चुव टपटप दुखा री भीड सू

बरण नै इसडो, काळजो

किरसाण रो बरण जी

जद सुणावै घूघरा घम-घम सुखा री रात मे
गीत गावै रोवणा चातक खड्या वरसात मे

बरण न काळी वादळी

घरडाट बरण नै जी

जळजळो जे ल्या सकं बरण च्यानणो दिन रो

अभ विरहण ज्यू गिरां क्यू आवणो पिव रो

बरण न भोळो वावळा

भगवान बरण न जी

तू जी भलाई अक दिन परण मिनख बरण नै जी



सत्यप्रकाश जोसी

जनम स्थान जोधपुर
जनम तिथि २० मार्च १९२६ ई०
सिखा एम० ए० (हिन्दी)

जोसीजी री कई पाध्या छपी है । दादा काप क्यू, राधा बोल भारमळी, लस्कर ना थम—श्री नाव है बाब्या रा अर 'बाबी' नाव है गद्य र अनुवाद री पोवी रा ।

जोसीजी राजस्थानी लोकगीता रँ मरम न भली भात परख्यो है जिण सू बारी कवितावा मे लोकगीता री वा सगळी सन्दावळी कोई न कोई रूप म मिल जिण मे व पचा'र आपर भडार भेळी करली है । जोसीजी री कविता मे परपराळ रोमास है जिको जुनो होता हुआ भी घणो फूटरो लाग । 'बोल भारमळी' म यीन समस्या न मूळ वणा'र वै जिण ऊची धरती ताई पूगण री चेस्टा करी है वा पार कानी पडी । फेर भी वारो बात कैवण रो ढग घणो असरदार अर प्यारो है ।

आज काल आप बबई मे प्राध्यापक हैं । 'हरावळ' नाव रो राजस्थानी छापो भी आप आपरी सपादकी मे निकाळ ।



सोवन माछली

साभ तो पडी नै बडग्यो नीर मे रै बैरी
आ थारी मछवा वाण कुबाण
छोळा सू टाळै गिरण गिरण माछळी

क्यू तू हिवोळै श्रू डै समद नै रै मछवा
क्यू तू पसारै भीणा जाळ
खारा समदा री खारी माछळी

पाछो तो बावड थारी भूपडी र मछवा
थारी थाळी मे चानण चोक
तडफा तोडै रै सोवन माछळी

सातू समदा नै राखै नैणा मायने रै मछवा
होठा विच साचा मोती सात
मोठै पाणी री सोवन माछळी

कैवै तो चीरू कवळो काळजो रै मछवा
माथै भुरकाश्रू तीखो लूण
काटा विना री सोवन माछळी

तेल मे तळू रै थार राम रसोडै मछवा
नीचै सिळगाश्रू मधरी आच
छिरण छिरण सीभै रै सोवन माछळी

धोया धाया थाळा पुरसू आधी रै अमला मछवा
अलघ भिरोखै जोवू वाट
अग तो मरोडै सोवन माछळी

मू डो अँठण ढळती रा काई आव रँ मछवा
पैला ई क्यू नी लेवै चाख
जतना सू राधी सोवन माछळी

कैवै तो बेचा सोवन माछळी रँ मछवा
बेच नै चिणावा अू चा मै'ल
छोडा समदा मे पाछी माछळी



अररुण बूझै रै घण वीर नै

अरूठ धमीडा अवर चीर नै
अररुण बूझै रै घण वीर नै

वीरा र वीरा धवणी खीरा क्यू जगाया
खीरा म टुकडा वीजळसार रा तपडाया
डाम क्यू म्हारी काया, प्राणा नै दाभै क्यू र

क्यू तो कूटै रै लोह सरीर नै
अररुण बूझै रै घण वीर नै

मिनखा न बाधण मिनखा साकळा घडाई
हाथा हथकडिया, पग री वेडिया बरणाई
मिनखा न नीच दाब्या आकस परवारणै र

आपा क्यू सिरजा जुगरी पीड न
अररुण बूझै रै घण वीर न

तीखी धारा री खागा, अणिया रा भाला
लोई सू रगदी वरती, दोय हाथ वाळा
सह्या नही जावै सामी द्वाती अ भचोड रै

क्यू तो घड देवा आपा तीर न
अररुण बूझै रै घण वीर नै

घडणो ह्व घड रै वीरा, कसिया कुदाळी
अन धन निपजावै कमधज, हाथा हळवाळी
टावर रै हाथा माही बाजै खुणखुणिया रै

क्यू नों पूछा नैणा रा नीर न
धैरण वूभै र घण वीर न

टाकी घड, जीवण री जे मेडिया चिणाव
जीवण रै रथ री गत नै धुराई वधाव
सूई सीवै जीवण रा फाटया गूदडा र

क्यू नी बदळ जुग री तसवीर न
धैरण वूभै रै घण वीर न



सुबोधकुमार अग्रवाल

जनम स्थान चूरु (राजस्थान)

जनम-संवत् १९७६ वि०

सुबोधजी उण वखत राजस्थानी मे लिखणी सुह कर्ग्यो हो जद आज रा घणखरा कवि होस भी नही सभाळधो हो । पण भावुक सुभाव रा होणें सू सुबोधजी री रचनावा बहोत सरस होती ही । पण लारला कई वरसा सू कविता करणें री रुचि मदी पडगी । जो कुद्य लिख्योडो हो वो सभाळ'र राख्यो नही । मघदूत' री सली म लोर' नाव सू एक दूत काव्य किणी मित्र र कन पडघो रंग्यो जिण म सू थोडा छद अठे छाप्या है । हि दी म लठसाळा' अर कतरन' नाव री दो छाटी पाथ्या रँ अलावा लच्छी' नाव रो मासिक पत्र भी आप छपवायो हा । खुद लिखण र साथ साथ सुवाघजी अनेक कविषा अर लेखका न प्रेरणा दे साहित्य कानी खीच्या जिका आज भी का य री फुलवाडी गे सोरम बखेर रया है । आजकाल आप चूरु मे नगरश्री नाव री सस्था अर लाक मस्कृति सोव सस्थान नाव री सस्था कानी सू 'भरु श्री' नाव रा तिमाही छापो तिकाळ जिण रा सपादक गोविंद अग्रवाल है ।



लोर

भिरमिर-भिरमिर मेवलो वरस
 गोरी तरसै महल तळ
 आज्यो जी म्हारा सजन मनेही
 सावणियै रा लोर गळ
 वोरग चूनड भोजण लागी
 टपटप-टपटप रस वरसै
 काग उडावै छाजै पर धण
 परदेसी रो पथ निरखै
 भायलडया मे रमग्यो जनजी
 घर थारी सुदर तरसै—आज्यो०
 फुलडा सिरसो पीयर छोडघो
 वावल छोडघो मा छोडी
 घर-घर री हमजोळी छोडी
 भण ठिणकती घर छोडी
 थारै लैर सिधारी छला
 थे करकै विरहण छोडी—आज्यो०
 वादळ माही विजळी चिमकै
 गोरी डरपै महला मे
 ढोला जाय विदेसा रमग्यो
 मरवण तडपै सेजा मे
 आज्यो घर निरमोही मारू
 सावण सूनी देख छळै—आज्यो०
 आमूल को गाछ लगाया
 घेर घुमेर हुयो लूम

मधरा-मधरा वादळ गाजै
 मतवाळा घिर-घिर धूमै
 मीठी पून चळ पुरवाई
 चूवण लाग्या आम तळै—आज्यो०
 पाला पग की पायल बराग्या
 बीटी बरागी वद यगडी
 इण आरया मे पीव मिलण की
 आस लगी जद ज्यान खडी
 इक वर स्याम दरस दयो आकर
 नेणा भर-भर नीर ढळै—आज्यो०
 स्याम हमारो जाकर रमग्यो
 थे मत रमज्यो रावळिया
 एक विदाई दी थी वाने
 दूजी थाने सावळिया
 एक उडीक हिये मे वाकी
 दूजी याकी पलक तळै—आज्यो०



स्व० सुमनेस जोशी

जनम स्थान जोधपुर

सुमनेसजी डील डील काम घर कलम तीनु भात ही भ्रैव महाप्राण मिनस हा । जिती धोपती आप री विसाळ वाया ही उण रँ अनुरूप ही आपरो दिल भर दिमाग भी हो । देसी राज्या नी राजनतिक प्राति म सुमनेसजी र बळिदान री गाया सगळा भेदू जाण । मुभाव मू घणा भावुक होण रँ वाग्ण आप उण वखत री राज री भली चंगी नीवगी न तुरत लात भार रँ प्रातिवारिया भेळा घा लड्या द्या । देवण सुगुण म बात छोटी सी लागे पण दसा वामा सातर गज भर रो वाळजा चाहीन । सामती जुलमा मू रात दिन टक्कर देवणहाळा मुमनेसजी न क्रांति र गीता र भलावा वोजा बयू लिंगण री पुरसत ही बढे ही ! आप रा गीत आज्ञाणी साहू ल-गुमा सिपाया री जीवण जडी ज्यू हा । जण जण र मूड मू मुमनेसजी रा धीरा सा वधवता गीत गाया जाता ता क्रांति री लपग गाय गाव फँलती ही ।

पण आज्ञादी मित्या पछ भी वा रो जास मिट्या नही हा । आप री वाणा म वा ही आज भर उद्धाह हो । आज्ञादी र पछ देस र नय निर्माण रा गीत लिख्या । आपर गीत रा संग्रह राजस्थान सरकार रँ सायजनिक सम्पक कार्यालय मू निवळघो हो । धार तकलीका भर मानसिक द्वंदा र बीच भी मुमनेसजी न आसा, विसवास, हिम्मत भर मरदमी री साम्यात मूरत ज्यू अडिग भर मुळकता देख्या है । या ही जास विसवास भर हिम्मत मरदमी भरी मुळक आपर गीता री ऋडा म मित । राजस्थान रा सुतत्रता सेनानिया र इतिहास रो एक मोटो ग्रंथ आप छपाया हो ।



मरण पंथ रा पथी

माटा मे मिल गया वीज जद
भ्रूग्या रूख हजारा
आपो मेट, मिटयो जद वादळ
फूटी जळ री धारा

दिवलो जळ-वळ मिल्यो खाकमे
करग्यो ज्योत उजाळो
मरण वाघ कूदयो सिखरा सू
वो भररणो मतवाळो

वो भररणो मतवाळो—
उण रो मरण-पथ कुण देखें
जग तो प्रीत करे ज्योती सू
वळणो करमा लेखें

वीज गया पाताळ
धरण सू ऊचा तरवर छाया
नीवा मे गड गया—
उणा रा गीत न कोई गाया

कोई गाव गीत, न गावें
उण न कद अभिलासा
मरण-पथ रा पथी तो वस
करम करण रा प्यासा

घिन-घिन व धरती रा जाया
जो निज आपो मेट
नयो रूप आकार धरा नें
जो कर जावें भेट



सुमेरसिंघ सेखावत

जनम स्थान सरबडी जीकर)

जनम तिथि भादवा बदी ६, सवत १६६१ वि०

पिताजी रो नाव श्री रूपसिंघजी सतावत

समाज सास्त्र रा विद्या री सुमेरसिंघ दसन अर मनो विग्यान री रुचि हाळा कुसळ साहित्यकार है । भासा अर भावा री गभीरता आपरै सुभाव अर ग्यान र मुजत्र ही प्रोपै । फुटकर कविताया र प्रलावा प्राप 'चादणी' अर विरसा' नांव सू दो रितु नाव्य अर 'रावळ' री राता', साड रो व्याव' तथा दवळ ववाळी' नांव सू उपन्यास, अर कहाणी सग्रह भी बणाया है । इती छोटी उमर म विचारा री इतणी मजाबट जिकी सुमेरसिंघजी म है वा कम देखण न मिल । 'भेघमाळ' नाव सू भेघदूत री बणगट पर प्रापरी एक पोथी छप्पोडी है ।



बिरखा

घोर अधारी वरसाळी रो घुट अमावस रंग
वादळिया रं घू घटिये मे ऊर्ध्व नभ रा नंग

ज्यू बिरहण री आसा
आखो लोक अमूभे
नाखे वाळ निसासा

मिरगलिया सा भरे चोकड्या भादूडे रा लोर
धूप-छाव री ल्हैरा उड-उड मिराँ धरा रा छोर

भाजी फिरै लगन सू
पिछवा चालै पून, न
वरसेँ छाट गगन सू

तीतरपखी वादळिया रो ओढ सुरगो चीर
आथूणै अम्बर मे सज्या खडी खितिज रं तीर

प्रीत री डोर वधाई
धरती देव सीख—
विदा री वेळा आई

आयो मभ आसोज, कळायण घाल्यो घेरघुमेर
पिछवा पून फिर जद ताणी अब वरसण मे देर

बिरखा मडी सजोरी
अन-धन री देवाळ
घडी-पुळ काढे दोरी

घर मे करै किलोळा दाळद, भूख पेट ने खाय
राज-ब्याज मे नाज पराई हाटा तुल-तुल जाय

लिछमी घणी ठगोरी
घास-फूस रं पाण—
गरीवी कटणी दोरी

स्यात

जाग-जाग अणजाण वटाअ
पछी पुळकै, वीती रात
दूर धरौरो अेढो तेरो
मग गोरखधन्धै री जात
सोपै भटक्या लोग न जाणै
दिन मे भटक्या चालै वात
सोवणियो इण ससारी मे
खोवै जिको न पावै स्यात
मान-मान मनमौजी हसा
मत कुरळावै माभळ रात
घरती धूज, गगन अमूभै
सरवर गूजै सूखै गात
इण जगती मे सुण ओ स्याणा
स्वारथ रा सारा उतपात
सुख मे मोती चुग जिका ई
दुख मे आसू पीव स्यात
चाख-चाख रमलोभी भवरा
फूला रा मुरभाया गात
रीत-प्रीत री चीत तनै नी
तू कपटी निरमोही जात
सुख रा सगी घणा जगत म
दुख मे कोई करै न वात
रस पीवणियो मर तिसायो
तो कोनी अणहोणी स्यात

सोभागसिध सेखावत

जनम स्थान भगतपुरा (सीवर

जनम तिथि फागण सुदी ६, सवत १९८० वि०

सोभागसिध सेखावत उण लगन हाळा लोगा म मू है जिशा राजस्थान री घरती नै पगा मू नापी है । घाटदार फटा, गाडा ताइ री घोती अर काध फौजी थैलो लटकाया सोभागसिध गाव गाव में गया है अर राजस्थानी री सकडू खळती रचनावा न मुण मुण'र भेळी करी ह । राजपूती वातावरण मे पळया अर श्रुगती जवानी रा जोसीला दिना म समाज-भुधार री धुन म रम्याडा सोभागसिध राजस्थानी भासा, माहित्य अर सस्कृति रा अनाखा उपासक है । आज रै अथप्रधान जुग म इसा धुन रा पक्का मिनसा न कचि सारू काम न मिल या ही अफसोस है । या खुमी री बात है के पिछला कई बरसा म उदयपुर रै गाध सस्थान म रहण मू सोभागजी री ५ ६ पाय्या सामन भाई जिकिया म राजस्थानी पडूतर अर राजस्थानी वाता भाग ८ मू ८ मुख्य है । राजस्थान रै इतिहास रो भी आपरो ग्यान आछो है । राजस्थान रै सास्कृतिक क्षेत्र म इसा उत्साही जवान दूढपा ही मिल ।

पत्र पत्रिकावा म छपी फुटकर रचनावा रै अलावा 'रणरीळ', 'मू धामोती', 'खादू रा छेटा' अर 'बह चक्का यात' नाव मू आपरी राजस्थानी रचनावा रा पद्य-गद्य रा सग्रह करपाडा है । चोपामनी साध सस्थान म सहायक निदसक र रूप म अवार राजस्थानी रा जूना अया र सपादन रो काम आपरै जिम्म हे । वीर गीत, बलबद्विलास, निबध सध, जाडा महडू अथावळी आद बइ अथ आपरा सपादन बरयाडा अर लिखाडा है ।



विनय रा दूहा

गुमर धार जळधार मरु, गह्यो ग्राह गजराज
गरुड छाड गोविंद तू, आयो हिकण अवाज
पेग भगत प्रह्लाद पण, रस विरद री रास
पाळो धायो परम गुर, साची हीधी साख
विपर सुदामो वापडो, काई भेंट करीह
विरद घणी वसदेव रा, भारी वाह भरीह
वळ चढ रूप विडोजत्रिज, वारद भर वारीह
तद आयो तारण तरण, गोविंद गिरधारीह
अध सुतन अठ अेरु सी, नगन काज नारीह
चोर वढायो चत्रभुज, गिरवर नख धारीह
साचा वेली सावरो, गुरजरधर गारीह
भात भरण आयो भला, वसदे बळिहारीह
खपा अठारह खोहणी, चक्र न कर धारीह
रग रजवट वट राजवी, आहव आचारीह
मूढ मती दसमाथ धर, धरम न चीतारीह
लाघ समद गढ लक लड, लागो ललकारीह
गरुड्यो रावण गजव गढ, वर ले त्रिपरारीह
रीछ वानरा दे रटक, छाग्यो छत्रधारीह



हणूंतसिंघ देवडा

जनम स्थान	राणीवाडा (जालार)
जनम तिथि	माह सुदी ४ सवत १९८५ वि०
पिताजी रो नांव	श्री लक्ष्मणसिंघजी देवडा

हणूंतसिंघ पर डिगळ दूहा रा रग गहरो चडपोडो हे । सुरसत सतव' नाव मू विल्या आपरा दूहा उणी परपरा रा हे । रुण रस आपन विसन प्यारा हे । दाळद घर भूख मू बिलबिलात मानख रा दरद वगाणणा ही आपरी कविता रो लक्ष्य दीव । विंगरपाडा गीत' घर फाग गीत' नाव रो वाव्य रो पायिया र भनावा राजस्वाना साहित्य सवधा ३ ४ ओर पायिया भी आप छगवाई हे ।



बिन तेल बलै या दीवाली

इए दीवाळी रा दीवा मे
ओ तेल नही, रै रगत बळै
दीवा नीचै अ धारो
मिनखा रा पए समसाए बळै
पळटो पसवाडो धरती रो
र बळै हूस हिवडावाळी
बिन तेल बळै या दीवाळी

महला सू बोली भूपडिया
चीका मे दीप हुयो कोनी
रै आय जमारै मिनखा रै
जीमए रो धूप हुयो कोनी
गीतडळा रोटी रा गावै
घर मे बैठी वा घरवाळी
बिन तेल बळै या दीवाळी

इए रो दीवाळी लुटगी रै
मैहदी रो मान हुयो कोनी
फेरा ना फेर सकी उए रा
कन्या रो दान हुयो कोनी
सोळा मे पगल्या धरता ही
मटकी रै आख्या मतवाळी
बिन तेल बळै या दीवाळी
उए फाटोडे धाघरियै अर

